शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

https://epaper.shubhamsandesh.net

रांची, शनिवार 06 सितंबर 2025 ● भाद्रपद शुक्ल पक्ष 14, संवत 2082 ● रांची एवं पटना से प्रकाशित ● वर्ष : 3, अंक : 150 ● मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	30.8	22.4
डालटनगंज	34.4	24.1
धनबाद	31.5	25.3

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

ब्रीफ न्यूज

छत्तीसगढ़ में मुठभेड़ छह नक्सली हुए ढेर

रायपुर। मानसून ब्रेक के बाद बस्तर में नक्सलियों के खात्मे को लेकर फिर ऑपरेशन तेज हो गए हैं. शुक्रवार सुबह से ही नारायणपुर और दंतेवाड़ा के बॉर्डर इलाके में जवानों की नक्सलियों से मुठभेड़ चल रही है, जिसमें छह नक्सलियों के मारे जाने की खबर है. मुठभेड़ अभी भी जारी है,मारे गए नक्सलियों की संख्या में इजाफा हो सकता है. पुलिस के पास सूचना थी कि नक्सलियों की एक बड़ी टीम अबूझमाड़ के एक इलाके में जमा है और बड़ी बैठक की तैयारी चल रही है. जिसके बाद डीआरजी के जवानों को ऑपरेशन पर रवाना किया गया. सुबह करीब 9 बजे जवानों का नक्सलियों से सामना हुआ.

टोटी चोरी का मामला कभी नहीं भूल सकता

लखनऊ। सपा के मुखिया अखिलेश यादव ने यूपी सरकार पर तीखा हमला बोला है. प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने कहा कि मैं 'टोटी चोरी' का मामला कभी नहीं भूल सकता. अखिलेश ने सरकार के अधिकारी अवनीश अवस्थी का नाम लेते हुए कहा कि उन्होंने ही ये सब करवाया. बकौल अखिलेश- हम यह भूलने वाले नहीं हैं. ये बात सरकार भी जान ले और अधिकारी भी जान लें. मैं सरकार जाने के दिन गिन रहा. अब 493 दिन बचे हैं. इनके पास चुनावी तिकड़ी है- अधिकारी, सरकार और आयोग. सुनने में आ रहा है आयोग के अधिकारी कोड दे देते हैं ताकि बीजेपी के लोग वोट बढ़ा सकें.

भागवत की मौजूदगी में संघ की बैठक शुरू

जोधपुर। आरएसएस की तीन दिवसीय अखिल भारतीय समन्वय बैठक शुक्रवार को जोधपुर में शुरू हुई. बैठक में सरसंघचालक मोहन भागवत, दत्तात्रेय होसबोले सहित अन्य शामिल हुए. बैठक में भाजपा के अध्यक्ष जेपी नड्डा भी शामिल हुए हैं. इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर पर संघ से जुड़े 32 संगठनों क 320 से भी अधिक प्रतिनिधि बैठक में शिरकत कर रहे हैं. इनमें 249 संगठन पदाधिकारी शामिल हैं. सूत्रों के अनुसार बैठक का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों के बीच बेहतर तालमेल बनाना है. बैठक का फोकस आगामी समय की प्राथमिकताओं पर भी है.

केंद्र सरकार पर मनरेगा की उपेक्षा का आरोप

नयी दिल्ली। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने केंद्र सरकार पर मनरेगा की उपेक्षा करने का आरोप लगाया है. रमेश ने एक्स पर अपने पोस्ट में इस योजना के 20 साल पूरा होने पर इसे दुनिया की सबसे बड़ी सामाजिक कल्याण योजना करार दिया. हालाकि जयराम ने इस सरकार में योजना के अनिश्चित भविष्य को लेकर चिंता जताई. उन्होंने कहा कि वित्त मंत्रालय के नियमों के मुताबिक किसी योजना को वित्तीय वर्ष की पहली छमाही में 60 फीसदी से ज्यादा बजट खर्च करने की अनुमति नहीं है लेकिन पांच महीनों में ही इस योजना का 60 फीसदी बजट खत्म हो चुका है. इससे करोड़ों ग्रामीण परिवारों के भविष्य पर सवाल उठ रहे हैं.

खास बातचीतः जीएसटी कट पर बोलीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, सभी देशवासियों का मैनिफेस्टो

दीवाली-छठ से पहले फिर बिहार समेत पूरे देश को मिलेगा डबल धमाका

शुभम संदेश डेस्क

ट्रंप टैरिफ की वजह से नहीं हुआ बदलाव, डेढ़ साल से चल रहा था काम

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि जीएसटी की दरों में कमी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से भारत पर हैवी ट्रैफिक लगाने की वजह से नहीं किए गए हैं. इस पर डेढ़ साल से काम हो रहा था. वित्त मंत्री ने कहा कि जीएसटी में कमी करने से पहले एक एक आइटम पर चर्चा की गई और ये काम एक दिन में नहीं हो सकता था. वित्त मंत्री से जब पूछा गया कि ऐसे वक्त में जब जुलाई में महंगाई सबसे न्यूनतम स्तर पर पहुंच चुकी है तो अभी जीएसटी में कमी जरूरत क्यों पड़ी? इस पर वित्त मंत्री ने कहा कि महंगाई को नियंत्रण में रखने के लिए सरकार हमेशा कदम उठाती रहती है. कई बार सप्लाई संबंधी दिक्कतों की वजह से मुद्रा स्फीति काबू में नहीं रहती है. ये ऊपर नीचे जाने वाला अर्थव्यवस्था का सूचक है. इसलिए जीएसटी रिफॉर्म्स लाने के लिए हम महंगाई आधारित मुहूर्त नहीं ला सकते थे. निर्मला सीतारमण ने कहा कि ये भी कहा जा सकता है कि क्या ट्रंप टैरिफ की वजह से जीएसटी रिफॉर्म्स लाया गया है. लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है. हमने 300 से ज्यादा चीजों पर रेट कम किया है. इसका निर्णय एक दिन में नहीं किया जा सकता था. पिछले एक साल में हम बार बार आइटम पर चर्चा कर रहे थे कि इस पर टैक्स क्यों नहीं और कम किया जा सकता है. जनता का बोझ कम करने के लिए हमने कई कोशिशें की. एक-एक आइटम पर चर्चा हुई. इसमें समय लगता है. इसलिए इसे ट्रंप टैरिफ और महंगाई दर से नहीं जोड़ा सकता है.

वित्त मंत्री से सवाल किया गया कि क्या जीएसटी कट बिहार चुनाव में बीजेपी का मैनिफेस्टो है? इस पर उन्होंने कहा, यह बिहार नहीं, देश के 140 करोड़ लोगों का मैनिफिस्टो है. जीएसटी में बदलाव का फैसला बहुत सोच-समझ कर लिया गया है.

बिहार चुनाव की सियासी तपिश के बीच मोदी सरकार ने जीएसटी दरों में कटौती का फैसला किया है. वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को एक न्यूज चैनल को दिए इंटरव्यू में साफ कर दिया कि छठ मइया की पूजा और दीपावली से पहले बिहार ही नहीं बल्कि पूरे देश को डबल धमाका मिलने जा रहा है.

वित्त मंत्री ने कहा कि जीएसटी का इतना बड़ा परिवर्तन और हर चीज में रेट का बदलाव करने के लिए इंडस्ट्री और ट्रेडर्स से बात कर रहे हैं कि वो रेट कट को जनता तक पहुंचाएं, क्योंकि सवाल उठ रहे कि कंपनियां रेट कट को जनता तक नहीं पहुंचाती.

वित्त मंत्री ने बताया बिहार को मिलेगा लाभ : निर्मला ने कहा कि जीएसटी में बदलाव बहुत उम्मीद के साथ हुआ है, जो नवरात्रि से ही लोगों को खरीदारी पर दिखेगा. उदाहरण के तौर पर 100 रुपये में पहले जो एक समान मिलता था, उसमें अब डबल समान खरीद सकता है. गुटखा-तंबाकू के दाम बढ़ने से बिहार जैसे राज्यों को नुकसान होगा, भरपाई कैसे होगी? इसके जवाब में वित्त मंत्री ने कहा कि बिहार कंज्यूमिंग स्टेट है. मैं उम्मीद रख रही हूं कि इस नवरात्रि के पहले दिन से ही जनता रेट कटौती के चलते अधिक सामान खरीद सकेगी. उन्होंने एक अन्य सवाल के जवाब में कहा कि हम मॉनिटरिंग कर रहे हैं कि जो रेट कम हुए वो लोगों तक पहुंचे. इसके लिए हम लगातार इंडस्ट्री आदि से बात कर रहे हैं कि इस कटौती का लाभ लोगों तक पहुंचे.

छठ से पहले बिहार को डबल धमाका : बिहार के सवाल पर वित्त मंत्री ने कहा, छठ और दिवाली से पहले बिहार और पूरे देश को डबल धमाका मिलने वाला है. प्राइवेट और सरकारी स्कूलों पर कोई टैक्स नहीं बढ़ाया है. कम ही किया है. लेकिन जहां कमर्शियल इंस्टीट्यूट चल रहे हैं, उन्हें एजुकेशन इंस्टीट्यूशन नहीं माना गया है. उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में लाल किले से जीएसटी 2.0 पर घोषणा की थी और इनको 140 करोड़ भारतीयों के लिए बनाया गया.

कांग्रेस पर साधा निशाना : विपक्ष पर निशाना साधते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि जो लोग कभी जीएसटी को 'गब्बर सिंह टैक्स' कहकर मज़ाक उड़ाते थे, वे अब सरकार के जीएसटी 2.0 सुधारों का श्रेय लेने की कोशिश कर रहे हैं. उन्होंने दावा किया कि सरकार ने बिना किसी दबाव के जीएसटी कट किए हैं. विपक्ष की बातों पर हम ध्यान नहीं देते. उनका काम ही विरोध करना है.

जीएसटी में राहत के बाद अब ट्रंप के टैरिफ से मिलेगी मुक्ति

मोदी सरकार ने बनाया प्लान कारोबारियों के लिए गुड न्यूज!

एजेंसियां। नयी दिल्ली

कोविड-19 वाले पैकेज की तरह मिल सकती है राहत

रिपोर्ट की मानें तो यह पैकेज कोविड-19 के दौरान एमएसएमई सेक्टर को दिए गए 20 लाख करोड़ रुपए के राहत पैकेज की तरह हो सकता है. कोविड-19 महामारी के वक्त सरकार ने उद्योगों को सहारा दिया था, अब वह फिर से मदद की योजना बना रही है. सरकार एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन पर भी काम कर रही है. इसका ऐलान बजट के दौरान किया गया था. इसके साथ ही सरकार एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन पर भी काम कर रही है, जिसका ऐलान इस साल के बजट में किया गया था. इस मिशन का मकसद भारत के निर्यात को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना और नए बाजारों में भारतीय उत्पादों की मौजूदगी बढ़ाना है.

जीएसटी में आम लोगों को राहत देने के बाद अब मोदी सरकार अंतरराष्ट्रीय व्यापार से जुड़े बड़े मुद्दे पर कदम उठाने की तैयारी में है. सरकारी सूत्रों की मानें तो केंद्र सरकार जल्द ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लगाए गए भारी भरकम टैरिफ से प्रभावित निर्यातकों के लिए विशेष राहत पैकेज का ऐलान कर सकती है. दरअसल, अमेरिका द्वारा लगाए गए 50% तक के टैरिफ ने भारतीय वस्त्र और परिधान, गहने और आभूषण क्षेत्र के निर्यातकों के सामने गंभीर चुनौतियां खड़ी कर दी हैं. इसके अलावा चमड़ा और फुटवियर, रसायन और इंजीनियरिंग उत्पाद, कृषि और समुद्री निर्यात से जुड़े उद्योग भी दबाव में हैं. इन उद्योगों से जुड़े निर्यातक लगातार केंद्र सरकार से ठोस कदम उठाने की मांग कर रहे हैं. ऐसे में अब सरकार इन्हें राहत पैकेज देने पर विचार कर रही है.

सरकारी सूत्रों के अनुसार, प्रस्तावित योजनाओं में छोटे और मध्यम निर्यातकों की लिक्विडिटी की समस्या को दूर करना, कार्यशील पूंजी पर बोझ घटाना, और सबसे अहम नौकरियों की सुरक्षा बनाए रखना शामिल होगा. सरकार चाहती है कि जब तक निर्यातक अपने उत्पादों के लिए नए बाजार तलाश नहीं लेते, तब तक उन्हें उत्पादन जारी रखने में कोई परेशानी न हो.

भारत और अमेरिका के रिश्तों में कड़वाहट घुल चुकी है. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाया है, जिसका असर भी दिखने लगा है. टैरिफ का व्यापार पर सीधा प्रभाव पड़ा है. अब केंद्र सरकार निर्यातकों को राहत देने के लिए एक स्पेशल पैकेज ला सकती है. जीएसटी दरों में कटौती के बाद, सरकार अब उन निर्यातकों गुड न्यूज दे सकती है. टैरिफ की वजह से भारत के कई सेक्टर प्रभावित हुए हैं. कपड़ा, गहने और आभूषण के साथ-साथ और भी सामान अमेरिका भेजा जाता था, लेकिन टैरिफ की बाद निर्यात की रफ्तार धीमी पड़ गई है. 'इंडिया टुडे' की एक रिपोर्ट के मुताबिक सरकार छोटे और मध्यम निर्यातकों की मदद के लिए स्पेशल पैकेज लाने की तैयारी में है. इससे लिक्विडिटी की समस्या को दूर करने की कोशिश होगी, साथ ही कार्यशील पूंजी पर भी बोझ घटाने का प्रयास होगा.

नौकरियों को सुरक्षित करना चाहती है मोदी सरकार

सरकार चाहती है कि जब निर्यातकों को और भी बाजारों का विकल्प नहीं मिल जाता है तब तक वे अपने उत्पादन को बिना किसी परेशानी के जारी रखें. इसके साथ ही सरकार स्पेशल पैकेज के जरिए नौकरियों को सुरक्षित करना चाहती है. चमड़ा, फुटवियर, रसायन, इंजीनियरिंग उत्पाद और कृषि से जुड़े सेक्टर में लाखों लोग काम करते हैं.

जीएसटी में भी कारोबारियों और आम लोगों को मिली राहत

जीएसटी काउंसिल की 56वीं बैठक में आम लोगों और छोटो कारोबारियों को बड़ी राहत दी गई. सरकार ने टैक्स में अब सिर्फ दो ही स्लैब रखे हैं. वहीं रोजमर्रा के इस्तेमाल होने वाले सामनों को टैक्स फ्री कर दिया है. इसमें रोटी, दूध, पनीर पराठा और कुछ दवाएं भी शामिल हैं.

देखते ही रह गए ट्रंप और भारत ने कर दिया बड़ा खेल

यूक्रेन वॉर की कोशिश को रुकवाने में अमेरिका हरसंभव प्रयास कर रहा है. इसके लिये राष्ट्रपति ट्रंप छल-बल तक लगा रहे हैं, लेकिन उन्हें अपनी कोशिश में सफलता हाथ नहीं लग पा रही है. भारत पर ट्रंप ने जिस तरह 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगा दिया, वह भी परोक्ष तौर पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर दबाव बनाने का प्रयास था. अमेरिका ने भारत पर भले ही 50 प्रतिशत का भारी-भरकम टैरिफ लगा दिया हो, लेकिन भारत ने रूस से सस्ता तेल खरीदकर अंतरराष्ट्रीय बाजार में बेचकर मोटी कमाई कर ली है.

तेल बेचकर मोटी कमाई : डीजल एक्सपोर्ट 137% उछलकर रोजाना 2,42,000 बैरल

सालाना आधार पर अगर देखें तो भारत का डीजल एक्सपोर्ट 137 प्रतिशत उछलकर अगस्त में रोजाना 2,42,000 बैरल हो चुका है. हालांकि, रूसी कच्चे तेल के इस्तेमाल पर यूरोपीय यूनियन की तरफ से रोक के बाद जनवरी 2026 से देश की सबसे बड़ी रूसी तेल और ईंधन निर्यातक कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज के दरवाजे वहां के लिए बंद हो सकते हैं.

क्या कहते हैं बाजार के जानकार

दरअसल, यूरोप में भारत के तेल निर्यात में बढ़ोतरी के कई कारण हैं. बाजार के जानकारों की मानें तो रिफाइनर्स की ओर से एडवांस मेंटेनेंस का फैसला, विंटर डिमांड और यूरोपीय यूनियन के प्रतिबंध-ये सभी भारतीय सप्लायर्स के लिए वहां पर तेल बेचने की स्थिति को प्रभावित कर सकते हैं. हालांकि, जानकारों का मानना है कि पूरे साल यानी 2025 में डीजल की मांग बेहद मजबूत रहने वाली है. दूसरी तरफ, भारत को इसको लेकर कड़ी आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ रहा है. हालांकि, भारत ने इन आरोपों को पूरी तरह से खारिज करते हुए कहा कि पश्चिमी देशों को अगर आपत्ति है तो वे तेल की खरीद बंद करने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र हैं.

गालीकांड के बाद केरल यूनिट के बयान पर घिर गई कांग्रेस

अब 'बिहार-बीड़ी' पर विवाद!

एजेंसियां। नयी दिल्ली

बिहार में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 'वोट अधिकार यात्रा' निकालकर जो सियासी माहौल बनाया था, उसकी हवा कांग्रेस नेता ही निकाल रहे हैं. पीएम मोदी की मां के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी का मुद्दा अभी थमा भी नहीं था कि अब कांग्रेस की केरल इकाई ने बिहार की तुलना बीड़ी से करके एनडीए को एक बड़ा सियासी मुद्दा दे दिया है. कांग्रेस की केरल इकाई के द्वारा शुक्रवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट से राजनीतिक विवाद छिड़ गया. मोदी सरकार के जीएसटी सुधार को लेकर कांग्रेस ने बीजेपी का मज़ाक उड़ाने के लिए बिहार की तुलना बीड़ी से कर दी, जो कांग्रेस के लिए भी सियासी टेंशन का सबब बन गया है.

केरल कांग्रेस के द्वारा बिहार की तुलना बीड़ी से किए जाने वाले पोस्ट को भले ही हटा दिया गया हो, लेकिन बीजेपी-जेडीयू ने उसे लेकर कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है. दोनों ही पार्टियों के नेताओं ने कांग्रेस पर बिहार के लोगों का अपमान करने का आरोप लगाया है. हालांकि इस बयान पर विवाद होने पर केरल कांग्रेस बाद में मांफी मांग ली.

बिहार की तुलना बीड़ी पर घिरी कांग्रेस

कांग्रेस की केरल इकाई ने जीएसटी में किए सुधार को लेकर बीजेपी पर तंज कसते हुए एक चार्ट पोस्ट किया. कांग्रेस की केरल इकाई ने लिखा, बीड़ी

और बिहार, दोनों 'बी' से शुरू होते हैं. अब इसे पाप नहीं माना जा सकता. कांग्रेस केरल इकाई द्वारा ट्वीट करते ही विवाद छिड़ गया. बीजेपी और जेडीयू ने इसे बिहार और बिहारी लोगों का अपमान बताया. जीएसटी बदलाव को लेकर कांग्रेस ने जो चार्ट पोस्ट किया था, उसमें सिगार और सिगरेट पर कर 28 प्रतिशत से बढ़ाकर 40%, तंबाकू पर 28% से बढ़ाकर 40 प्रतिशत, जबकि बीड़ी पर 28% के जीएसटी को घटाकर 18%कर दिया गया है. इस तरह सिगरेट-सिगार पर जीएसटी बढ़ाया गया है और बीड़ी पर कम कर दिया गया है.

बीजेपी ने कांग्रेस के खिलाफ खोला मोर्चा

बिहार के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने इसे 'राज्य का अपमान' बताया. सम्राट ने कहा कि पहले हमारे पीएम मोदी की माताजी का अपमान, और अब पूरे बिहार

का अपमान. यही कांग्रेस का असली चरित्र है, जो बार-बार उजागर हो रहा है. बिहार बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने कहा, कांग्रेस केरल के पोस्ट से पूरे बिहार के लोग आहत हैं. पता नहीं कांग्रेस की यह कैसी मानसिकता है? बीड़ी की तुलना बिहारी से की जो बहुत दुखद है. मैं कांग्रेस के नेता और राहुल गांधी से पूछना चाहता हूं कि बिहारी की तुलना बीड़ी से क्यों कर रहे हैं, कांग्रेस को इसका जवाब देना चाहिए. बीजेपी के प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कांग्रेस पर सारी हदें पार करने का आरोप लगाते हुए सवाल किया कि क्या आरजेडी नेता तेजस्वी यादव अपने सहयोगी दल की टिप्पणी का समर्थन करते हैं. पूनावाला ने पूछा कि कांग्रेस ने फिर से हद पार कर दी है. पीएम मोदी जी की मां को गाली देने के बाद अब बिहार की तुलना बीड़ी से कर रहे हैं! क्या तेजस्वी यादव इसका समर्थन करते हैं?

धोखाधड़ी मामले में बढ़ीं शिल्पा-राज की मुश्किलें

मुंबई। अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी और पति राज कुंद्रा से जुड़ी बड़ी खबर आई है. मुंबई पुलिस ने 60 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी के मामले में अब शिल्पा व उनके पति राज कुंद्रा पर लुकआउट सर्कुलर जारी किया. जानकारी देते हुए एक अधिकारी ने कहा, मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने लुक आउट सर्कुलर जारी किया, क्योंकि यह दंपती अक्सर अंतरराष्ट्रीय यात्राएं करता है. उन्होंने बताया कि अदाकारा और उनके पति के खिलाफ 14 अगस्त को जुहू पुलिस स्टेशन में एक कारोबारी ने लोन कम निवेश सौदे में 60 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी का मामला दर्ज कराया था. ये ऐसी व्यवस्था है जिसका इस्तेमाल किसी व्यक्ति को देश छोड़ने से रोकने या उसकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए किया जाता है.

लालू प्रसाद ने एक्स पर लिखा

ये मोदी जी! विक्ट्री चाहिए बिहार से और फैक्ट्री दीजिएगा गुजरात में

शुभम संदेश। पटना

बिहार में साल 2025 के अंत में विधानसभा चुनाव होने वाला है.

जैसे-जैसे चुनाव की घड़ी नजदीक आ रही है, वैसे-वैसे राजनीतिक बयानबाजी भी तेज हो गई है. इसी कड़ी में राजद के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है. लालू यादव ने एक्स पर लिखा कि ऐ मोदी जी, विक्ट्री चाहिए बिहार से और फैक्ट्री दीजिएगा गुजरात में. ये गुजराती फार्मूला बिहार में नहीं चलेगा. लालू ने पोस्ट के साथ एक फोटो भी शेयर किया है, जिसमें लिखा है कि ए मोदी जी! बिहार को नहीं दिया फैक्ट्री, बिहार में अब कभी नहीं मिलेगी विक्ट्री.

बिहारियों को इतने हल्के में ना लें : लालू यादव ने एक अन्य पोस्ट पर कहा कि क्या पीएम मोदी ने भाजपाइयों को आदेश दिया है कि पूरे बिहार और बिहारियों की माताओं-बहनों और बेटियों को गाली दो. चेतावनी दी कि गुजराती लोग बिहारियों को इतने हल्के में ना लें. यह बिहार है. बीजेपी के गुंडे-मवाली सम्मानित शिक्षिकाओं, राह चलती महिलाओं, छात्राओं, गर्भवती महिलाओं, बुजुर्गों और पत्रकारों को गालियां देते हैं, उनके साथ हाथापाई करते हैं. क्या यह उचित है. शर्मनाक.

साप्ताहिक प्रेस कांफ्रेंस : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के करीबी पीटर नवारो के बयान पर भारत का पलटवार

विदेश मंत्रालय ने सभी दावों को बताया गलत और भ्रामक

एजेंसियां। नयी दिल्ली

भारत ने शुक्रवार को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के करीबी और व्यापार सलाहकार पीटर नवारो के हालिया बयानों को सख्ती से खारिज कर दिया. विदेश मंत्रालय ने साफ कहा कि नवारो के बयान न केवल गलत हैं, बल्कि भ्रामक भी हैं. अपनी साप्ताहिक प्रेस कांफ्रेंस में प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारत और अमेरिका के रिश्ते गहरे हैं और इन्हें भ्रामक बयानों से प्रभावित नहीं किया जा सकता. साथ ही ब्लूमबर्ग की चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को गुप्त पत्र भेजने वाली रिपोर्ट को गलत बताया. जायसवाल ने कहा कि भारत और अमेरिका व्यापक और वैश्विक रणनीतिक साझेदारी साझा करते हैं.

यह साझेदारी साझा हितों, लोकतांत्रिक मूल्यों और लोगों के बीच मजबूत रिश्तों पर आधारित है. उन्होंने कहा कि दोनों देशों का रिश्ता कई बदलावों और चुनौतियों से गुजरा है, लेकिन हमेशा मजबूत रहा है. भारत चाहता है कि यह साझेदारी आपसी सम्मान और साझा हितों के आधार पर आगे बढ़ती रहे. उन्होंने एच-1बी वीजा के मामले में कहा कि भारत और अमेरिका के बीच गतिशीलता साझेदारी इस रिश्ते का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है.

ऑस्ट्रेलिया में प्रदर्शन पर भारत ने जताई चिंता

भारत ने ऑस्ट्रेलिया के कई शहरों में हुए एंटी-इमिग्रेंट (प्रवासन के खिलाफ) प्रदर्शनों पर चिंता जताई है. वहीं ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने भारत चिंताओं का संज्ञान लेते हुए माना है कि यह प्रदर्शन उनके बहुसांस्कृतिक समाज के लिए चिंता का विषय हो सकता है. भारत ने आश्वासन दिया है कि वह विदेश में रहने वाले भारतीयों की सुरक्षा और भलाई के लिए प्रतिबद्ध है. विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने शुक्रवार को ऑस्ट्रेलिया में भारतीयों के खिलाफ हाल ही में हुए प्रदर्शनों पर प्रतिक्रिया दी. कहा कि 31 अगस्त को ऑस्ट्रेलिया के कई शहरों में एंटी-इमिग्रेंट प्रदर्शन हुए. इस दौरान भारत का उच्चायोग और महावाणिज्य दूत लगातार ऑस्ट्रेलियाई सरकार और भारतीय समुदाय के संपर्क में रहे.

क्वाड और यूक्रेन पर भारत का रुख : विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत अमेरिका के साथ व्यापारिक मुद्दों पर लगातार बातचीत कर रहा है. उन्होंने क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया) को साझा हितों पर चर्चा के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बताया और कहा कि इसका अगला नेताओं का शिखर सम्मेलन सदस्य देशों के बीच राजनयिक परामर्श के बाद तय होगा. यूक्रेन संघर्ष पर बोलते हुए जायसवाल ने हालिया शांति प्रयासों का स्वागत किया और कहा कि भारत चाहता है कि सभी पक्ष रचनात्मक तरीके से आगे बढ़ें. उन्होंने दोहराया कि भारत का रुख स्पष्ट है. संघर्ष का जल्द अंत हो और यूक्रेन में स्थायी शांति स्थापित हो.

क्या बोले थे पीटर नवारो : नवारो अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के साथ अपनी नजदीकियों के लिए जाने जाते हैं. नवारो ने हाल ही में तेल खरीदने के लिए भारत की आलोचना की और कहा था कि यह कदम यूक्रेन संघर्ष को बढ़ावा दे रहा. उन्होंने यह भी दावा किया है कि भारत यूरोप, अफ्रीका और एशिया के बाजारों में रूसी तेल बेचकर भारी मुनाफा कमा रहा है. अपनी एक टिप्पणी में, उन्होंने यह भी दावा किया कि रूसी तेल खरीद के कारण भारत में सिर्फ ब्राह्मण ही मुनाफाखोरी कर रहे हैं.

आरिहा शाह मामले पर भारत सख्त : विदेश मंत्रालय ने कहा कि आरिहा शाह मामले में प्रगति हुई है और जल्द ही अधिक जानकारी साझा की जाएगी. उन्होंने बताया कि सरकार इस मामले को अत्यंत गंभीरता से ले रही है. भारतीय दूतावास लगातार आरिहा से संपर्क में है, उसे किताबें उपलब्ध कराई गई हैं, मंदिर दर्शन की व्यवस्था की गई है और अन्य कई कदम उठाए गए हैं ताकि उसका पालन-पोषण भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जुड़ा रहे. सरकार इस मुद्दे को उच्च प्राथमिकता दे रही है.

बीजेपी नेता रमेश सिंह को फिर मिली जान से मारने की धमकी

- इससे पहले, 1 सितंबर को भी उन्हें पीएलएफआई के नाम पर धमकी भरा कॉल आया था.

शुभम संदेश। रांची

बीजेपी नेता और बिल्डर रमेश सिंह को एक बार फिर जान से मारने की धमकी मिली है. यह धमकी शुक्रवार शाम को उग्रवादी संगठन पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएलएफआई) के नाम पर दी गई. इस बार उन्हें 8900159718 नंबर से फोन आया. फोन करने वाले ने पहले तो उनसे संगठन के लिए रंगदारी मांगी और धमकी दी, नहीं दोगे तो इस बार दाग ही देंगे. यह पहली बार नहीं है जब रमेश सिंह को धमकी मिली है. इससे पहले, 1 सितंबर को भी उन्हें पीएलएफआई के नाम पर धमकी भरा कॉल आया था. उस समय भी उनसे रंगदारी की मांग की गई थी.

इस घटना के बाद, रमेश सिंह ने सुखदेवनगर थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई थी. उन्होंने पुलिस को बताया था कि उनके मोबाइल पर आए फोन कॉल में सामने वाले ने कहा था कि मैं पीएलएफआई संगठन से बोल रहा हूं. अगर आपको व्यवसाय चलाना है तो संगठन को मदद करना होगा. अन्यथा अंजाम भुगतना होगा. यह बॉस का आदेश है.

घाटशिला में अबत कैंडिडेट नहीं दोहराई भाजपा... फिर बाबूलाल सोरेन ने क्यों कर दिया ये दावा?

शुभम संदेश। रांची

घाटशिला में चुनावी बिसात बिछ चुकी है. राजनीतिक दलों ने सियासी चाल शुरू कर दी है. सत्ता पक्ष से रामदास सोरेन के पुत्र सोमेश सोरेन लगभग फाइनल हो चुके हैं. सिर्फ पार्टी की ओर से औपचारिक ऐलान बाकी है, लेकिन विपक्ष यानी बीजेपी ने अबतक अपने पत्ते नहीं खोले हैं. बीजेपी में दावेदारों की भरमार है, लेकिन एक नाम सबसे अधिक चर्चा में है. वह हैं बाबूलाल सोरेन. पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन के पुत्र बाबूलाल सोरेन घाटशिला विधानसभा उपचुनाव में बीजेपी से प्रबल दावेदार हैं. बीजेपी में उम्मीदवारों के दावेदारी करने की परंपरा नहीं है. पार्टी के प्रदेश नेतृत्व के फिडबैक पर केंद्रीय नेतृत्व उम्मीदवार का नाम तय करता है और फिर घोषणा की जाती है, लेकिन बाबूलाल सोरेन ने अपनी उम्मीदवारी के लिए दावेदारी कर दी है. उन्होंने कह दिया है कि टिकट मिलेगा, उपचुनाव लड़ेंगे और जीतेंगे भी.

बवाल डिजिटल से बातचीत में उन्होंने कहा कि 2024 का विधानसभा चुनाव हारने के बाद भी उन्होंने मैदान नहीं छोड़ा है. जनता के बीच हैं. बीजेपी से टिकट के दावेदारों के सवाल पर उन्होंने कहा कि जो जनता की सेवा करता है, जनता के बीच रहता है. संगठन उसी पर भरोसा जताती है.

2024 में हारे, अब फिर मैदान में : 2024 के विधानसभा चुनाव में बाबूलाल सोरेन ने घाटशिला सीट से बीजेपी की टिकट पर चुनाव लड़ा था. उस वक्त भी बीजेपी से कई दावेदार चुनाव के मैदान में थे, लेकिन अचानक विधानसभा चुनाव से ठीक पहले बीजेपी ने जेएमएम से चंपई सोरेन को इंपोर्ट कर लिया और उनके साथ-साथ उनके पुत्र बाबूलाल सोरेन भी इंपोर्ट हो गये. बीजेपी ने सभी प्रबल दावेदारों को दरकिनार कर बाबूलाल सोरेन को टिकट थमा दिया था. बाबूलाल सोरेन ने पूरी ताकत के साथ चुनाव लड़ा. पिता चंपई सोरेन ने भी बेटे के लिए खूब मेहनत की, लेकिन बाबूलाल चुनाव हार गये. अब एक बार फिर उपचुनाव में बाबूलाल टिकट के दावेदार हैं.

टिकट मिलने के पीछे तर्क

बीजेपी का एक बड़ा वर्ग कह रहा है कि बाबूलाल सोरेन को ही टिकट मिलेगा, लेकिन नेताओं का एक वर्ग कह रहा है कि टिकट कटेगा. टिकट मिलने के पीछे यह तर्क है कि बाबूलाल सोरेन के पिता चंपई सोरेन कोल्हान प्रमंडल में बीजेपी के एकमात्र विधायक हैं और कोल्हान में उनकी जबरदस्त पकड़ है. इसलिए बीजेपी के दूसरे उम्मीदवारों से बाबूलाल का पलड़ा भारी है. 2024 के विधानसभा चुनाव में चंपई सोरेन खुद सरायकेला विधानसभा सीट से प्रत्याशी थे इसलिए बेटे की सीट घाटशिला पर बहुत ध्यान नहीं दे पाये, लेकिन उपचुनाव में चंपई फ्री रहेंगे और बेटे को जिताने के लिए घाटशिला में कैंप करेंगे.

क्यों कट सकता है टिकट

वहीं टिकट कटने के पीछे तर्क यह है कि 2024 के विधानसभा चुनाव में बाबूलाल पार्टी की उम्मीदों पर खरे नहीं उतर पाये. चंपाई सोरेन का हाथ होने के बावजूद चुनाव हार गये. अगर पार्टी फिर से बाबूलाल को टिकट देती है, तो संगठन के अंदर बगावत होने के आसार हैं. टिकट कटने के पीछे तर्क यह भी है कि यह इतिहास रहा है कि बीजेपी घाटशिला विधानसभा सीट पर किसी प्रत्याशी को दोहराती नहीं है. जिस कैंडिडेट को एक बार टिकट मिला, दूसरी बार उसका पत्ता साफ. चाहे वह जीते या हारे. इतिहास उठाकर देख लीजिए. बीजेपी ने 2000 के विदानसभा चुनाव में बैजू मुर्मू को प्रत्याशी बनाया था. फिर 2005 में रमेश हांसदा प्रत्याशी बन गये. 2009 में फिर प्रत्याशी बदल गया. इस बार सूर्य सिंह बेसरा थे. 2014 में लक्ष्मण टुडू प्रत्याशी बनाये गये. इन्होंने चुनाव जीतकर पहली बार इस सीट पर कमल खिलाया था. इसके बावजूद बीजेपी ने 2019 में प्रत्याशी बदल दिया और लखन चंद्र मार्डी को टिकट मिला. फिर 2024 में भी प्रत्याशी बदल दिया गया. इस बार लखन की जगह बाबूलाल सोरेन थे.

झारखंड में पीएमएफएमई योजना ने बदली ग्रामीण अर्थव्यवस्था की तस्वीर

शुभम संदेश। रांची

झारखंड में प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम (पीएमएफएमइ) योजना ने रोजगार और स्वरोजगार के नये अवसर पैदा कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है. राज्य कैबिनेट ने इस योजना को एक वर्ष और विस्तार देते हुए मार्च 2026 तक जारी रखने का निर्णय लिया है. वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा शुरू की गई इस योजना का झारखंड में क्रियान्वयन अक्टूबर 2021 से हुआ. केंद्र और राज्य सरकार इसके खर्च का भार 60:40 अनुपात में साझा करती हैं. प्रारंभिक रूप से इसकी अवधि मार्च 2025 तक थी, लेकिन अब इसे सकारात्मक नतीजों को देखते हुए मार्च 2026 तक बढ़ा दिया गया है.

हजारों उद्यमी बने, रोजगार का नया आधार : उद्योग विभाग के अनुसार अब तक झारखंड में 3954 इकाइयां इस योजना से लाभान्वित हुई हैं. इनमें 78% लाभार्थी एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग से हैं, जबकि लगभग 36% महिलाएं हैं. योजना के तहत प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 14,500 से अधिक लोगों को रोजगार मिला है. इसमें सामान्य वर्ग के 880, ओबीसी वर्ग के 2225, एससी के 235 और एसटी वर्ग के 614 उद्यमी बने हैं. इनमें से 1429 महिला उद्यमी हैं, जो अब अपने उत्पादों को बाजार तक पहुंचा रही हैं.

योजना का उद्देश्य और सहयोग: इस योजना का प्रमुख उद्देश्य सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों का आधुनिकीकरण और नए उद्यमों की स्थापना है. व्यक्तिगत उद्यमियों को 10 लाख रुपये तक ऋण आधारित सहायता दी जाती है, जबकि स्वयं सहायता समूह (एसएचजी), किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) और सहकारी समितियों को तीन करोड़ रुपये तक सहयोग मिलता है. सभी लाभार्थियों को 35% तक क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी दी जाती है. इसके अलावा प्रशिक्षण, ब्रांडिंग, पैकेजिंग और विपणन में भी सरकार मदद करती है.

वित्तीय सहयोग और भविष्य की संभावनाएं

वित्तीय वर्ष 2024-25 में केंद्र और राज्य सरकारों ने मिलकर 32.11 करोड़ रुपये स्वीकृत किए, जिनमें से 27.85 करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं. आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए केंद्र ने 25 करोड़ रुपये का आवंटन किया है. सरकार को उम्मीद है कि 2026 तक और अधिक उद्यमी इस योजना से जुड़ेंगे और खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में झारखंड राष्ट्रीय स्तर पर अपनी मजबूत पहचान बना सकेगा.

परंपरागत उत्पादों को मिला नया बाजार

इस योजना की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि झारखंड के पारंपरिक खाद्य उत्पाद अब आधुनिक पैकेजिंग और ब्रांडिंग के साथ देशभर में पहुंच रहे हैं. दलहन, रागी, तेलहन, फल-सब्जियां, दुग्ध उत्पाद, मसाले और स्नैक्स अब ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के जरिये भी बिक रहे हैं. इससे न केवल किसानों और उद्यमियों की आमदनी बढ़ी है बल्कि झारखंड की सांस्कृतिक पहचान भी व्यापक स्तर पर स्थापित हो रही है.

सफलताओं की कहानियां

इस योजना ने ग्रामीण स्तर पर कई प्रेरक उदाहरण दिए हैं. गुमला के एमवीएम बाघीमा पालकोट एफपीसी ने रागी से बने लड्डू, कुकीज और स्नैक्स का उत्पादन कर 4.5 करोड़ रुपये का सालाना कारोबार किया है. रांची स्थित प्योरश डेयरी फूड्स का सालाना कारोबार आठ करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है. रांची की चंदा कुमारी मशरूम पापड़, नूडल्स और अचार बनाकर 90 लाख रुपये की आमदनी कर रही हैं. वहीं चैपारण की श्रेष्ठ फूड प्रोडक्ट्स मिठाई और नमकीन से दो करोड़ रुपये का कारोबार कर रही है.

इसके अलावा सहजन, इमली, धान, लेमनग्रास, मशरूम, मधु, पेड़ा और अन्य स्थानीय उत्पादों पर आधारित इकाइयां भी स्थापित हुई हैं, जो क्षेत्रीय उत्पादों को देशभर में पहचान दिला रही हैं.

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन को भारत रत्न देने की मांग

नेमरा से रांची तक 86 किमी की पदयात्रा शुरू, 300 युवा हैं शामिल

शुभम संदेश। रांची

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड आंदोलन के पुरोधा दिशोम गुरु स्वर्गीय शिबू सोरेन को भारत रत्न देने की मांग को लेकर शुक्रवार को नेमरा से रांची तक 86 किलोमीटर की पदयात्रा शुरू हुई. पदयात्रा राष्ट्रीय युवा शक्ति के बैनर तले की जा रही है. पदयात्रा का शुभारंभ गुरुजी के पैतृक आवास नेमरा से किया गया, जहां उनकी भतीजी रेखा सोरेन ने उनके घर की पवित्र मिट्टी पदयात्रियों को सौंपकर यात्रा का आरंभ कराया. इसके साथ ही पैतृक आवास परिसर में पौधरोपण भी किया गया. कार्यक्रम का नेतृत्व राष्ट्रीय युवा शक्ति के केंद्रीय अध्यक्ष उत्तम यादव ने किया. पहले दिन करीब 300 से अधिक कार्यकर्ता पदयात्रा में शामिल हुए. पदयात्रा का पहला पड़ाव गोला रखा गया है, जहां सभी कार्यकर्ता रात विश्राम करेंगे.

पदयात्रा में उमेश साहू, सावन लिंडा, नितेश वर्मा, शैलेश नंद तिवारी, रोहित यादव, सोनू गुप्ता, आर्यन मेहता, बबलू करमाली, दिलीप यादव, अमित वर्मा और रौनक सिंह समेत बड़ी संख्या में युवा शामिल हुए.आयोजकों के अनुसार यह पदयात्रा तीन दिनों तक चलेगी और सात सितंबर को यात्रा रांची के राजभवन पहुंचेगी, जहां राज्यपाल के माध्यम से राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेजा जाएगा. इस ज्ञापन के जरिए गुरुजी को भारत रत्न सम्मान दिए जाने की मांग की जाएगी. इसके अलावा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को भी ज्ञापन और नेमरा की पवित्र मिट्टी सौंपी जाएगी.

राजद विधायक सुरेश पासवान दिल्ली के मैक्स अस्पताल में एडमिट

रांची। राजद विधायक सुरेश पासवान की तबीयत अचानक बिगड़ने के बाद उन्हें दिल्ली के मैक्स अस्पताल में भर्ती कराया गया है. पिछले कुछ दिनों से विधायक सुरेश पासवान को कमजोरी और अन्य स्वास्थ्य समस्याएं थीं. डॉक्टरों के अनुसार, विधायक की तबीयत में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है और उन्हें तीन चार दिनों में छुट्टी दी जा सकती है. फिलहाल, विधायक की तबीयत स्थिर है. जांच में ब्लड सूगर अधिक पाया गया. साथ ही किडनी और लीवर में संक्रमण की भी समस्या थी.

मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष ने शिक्षक दिवस की दी शुभकामनाएं

शुभम संदेश। रांची

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने शिक्षक दिवस की सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी है. मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया एक्स पर शुक्रवार को लिखा, " शिक्षक जीवन को दिशा देने वाले दीपस्तंभ होते हैं. आज शिक्षक दिवस पर मैं सभी गुरुजनों और शिक्षकों को नमन करता हूं. मेरे शिक्षक, मेरे मार्गदर्शक हैं स्मृति शेष बाबा दिशोम गुरु. स्नेह, संघर्ष, संवेदनशीलता और तटस्थता से भरा उनका जीवन मेरे लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहा है. आज बाबा सशरीर साथ नहीं हैं, लेकिन उनकी सीख, उनके विचार और आदर्श हमेशा शक्ति प्रदान करते रहेंगे. बाबा दिशोम गुरु शिबू सोरेन अमर रहें." वहीं, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने पूर्व राष्ट्रपति, महान शिक्षाविद, 'भारत रत्न' डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि एवं प्रदेशवासियों को 'शिक्षक दिवस' की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी है. मरांडी ने सोशल मीडिया एक्स पर शुक्रवार को लिखा," शिक्षक दिवस पर सभी को अनेक-अनेक बधाई, शुभकामनाएं और जोहार."

उल्लेखनीय है कि देशभर में शिक्षक दिवस प्रतिवर्ष 5 सितंबर को मनाया जाता है, जो भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान विद्वान डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती है. दरअसल, उनके छात्र और मित्र 1962 में उनके पास पहुंचे थे और उनसे अपना जन्मदिन मनाने की अनुमति मांगी थी. तब डॉ. राधाकृष्णन ने अपने छात्रों से कहा कि वे उनका जन्मदिन मनाएं, लेकिन वे इसे अलग तरीके से मनाएं, 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाएं, ताकि शिक्षकों के योगदान का सम्मान किया जा सके. तभी से यह दिन शिक्षकों के महत्व और उनके योगदान को याद करने और उनका आभार व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है.

महान दार्शनिक, लेखक और शिक्षाविद थे डॉ राधाकृष्णन : केशव महतो कमलेश

शुभम संदेश। रांची

झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के तत्वावधान में पूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयन्ती प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में शुक्रवार को मनाई गयी. इस अवसर पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के सचिव और झारखंड के सह प्रभारी डॉ सिरिवेल्ला प्रसाद, आईसीसी पर्यवेक्षक, सांसद फुलोदेवी नेताम, प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, विधायक नमन विक्सल कोनगाड़ी और अन्य कांग्रेस नेताओं ने डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के तस्वीर पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की. कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने डॉ राधाकृष्णन को महान दार्शनिक, लेखक और शिक्षाविद बताया.

उन्होंने ने कहा कि डॉ राधाकृष्णन की जयंती शिक्षक दिवस के रूप में भी मनाते हैं और देश भर के शिक्षकों के कल्याण के लिए मनाया जाता है. उन्होंने कहा कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार से ही सामाजिक बुराईयों को समाप्त किया जा सकता है. उन्होंने राधाकृष्णन की जीवनी और उनके बहुमूखी व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कहा कि शैक्षणिक स्तर में सुधार लाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना राधाकृष्णन आयोग के प्रमुख अनुमोदनों में एक है. इसी आयोग ने देश के सभी विश्वविद्यालय और महाविद्यालय में उच्चतर शिक्षा व्यवस्था संचालित की जा रही है. केशव महतो ने कहा कि डॉ राधाकृष्णन को एक सफल राष्ट्रपति के रूप में भी हमेशा याद किया जाता रहेगा. इस अवसर पर राजीव रंजन प्रसाद, राकेश सिन्हा, सतीश पॉल मुंजनी, कमल ठाकुर राजन वर्मा, सोनाल शांति, डॉ राकेश किरण महतो, गौतम उपाद्याय,नेली नाथन सहित अन्य मौजूद थे.

रिनपास को मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में और मजबूत बनाएगी राज्य सरकार : अजय

शुभम संदेश। रांची

रिनपास शताब्दी वर्ष समारोह के मौके पर आज जेई धनजीभॉय अकादमिक एंड रिसर्च सेंटर, रिनपास में एसोसिएशन ऑफ साइकियाट्रिक सोशल वर्क प्रोफेशनल्स (एपीएसडब्ल्यूपी) का दूसरा राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया. इस कार्यक्रम का आयोजन रिनपास के सहयोग से किया गया. सम्मेलन का विषय स्कल्प्टिंग इंडिजिनस सोशल वर्क प्रैक्टिसेज इन मेंटल हेल्थ रखा गया. इसका मुख्य उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य देखभाल को प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल से जोड़कर बेहतर परिणाम प्राप्त करना था.

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अपर मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह ने कहा कि मानसिक स्वास्थ्य की समस्या समय के साथ बढ़ रही है, जिसका सीधा असर आर्थिक विकास पर भी पड़ रहा है. उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में अधिक साइकियाट्रिक सोशल वर्करों की आवश्यकता पर जोर दिया. साथ ही शॉर्ट टर्म कोर्स और छात्रों की क्षमता बढ़ाने की दिशा में काम करने का सुझाव दिया. अपर मुख्य सचिव ने कहा कि रिनपास का महत्व आने वाले समय में और अधिक बढ़ेगा. उन्होंने आश्वस्त किया कि राज्य सरकार रिनपास में अधोसंरचना, कक्षाओं और उपकरणों की कमी को पूरा करेगी. उन्होंने यह भी कहा कि रिनपास और सीआईपी मिलकर आउटरीच प्रोग्राम तैयार करें, ताकि समाज के अधिक लोगों तक मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंच सकें. साथ ही नवीनतम शोध को सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार अपनाने की आवश्यकता पर भी बल दिया. इस अवसर पर डॉ प्रतिमा मूर्ति, रिनपास निदेशक डॉ अमूल रंजन, डॉ अरविंद कुमार, डॉ दीपांजन भट्टाचार्य और प्रमंडलीय आयुक्त अंजनी कुमार मिश्रा उपस्थित रहे.

एक नजर

कुख्यात शिव शर्मा को हाईकोर्ट से मिली जमानत

रांची। राजधानी रांची में रातू रोड फ्लाइओवर बना रही कंपनी केसीसी बिल्डकॉन से रंगदारी मांगने के आरोपी कुख्यात शूटर शिव शर्मा उर्फ शिवेंद्र को हाईकोर्ट ने बेल दे दी है. शिव शर्मा की बेल पर हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस अम्बुज नाथ की कोर्ट में सुनवाई हुई.शिव शर्मा की ओर से अधिवक्ता अमन कुमार राहुल ने बहस की. हाईकोर्ट ने उसे 20-20 हजार के दो निजी मुचलकों पर बेल दी है.

कंपनी के अधिकारी से मांगी थी रंगदारी : बता दें कि केसीसी बिल्डकॉन कंपनी से रंगदारी मांगने को लेकर रांची के सुखदेवनगर थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई थी. जिसे एटीएस ने टेकओवर कर लिया था और कांड संख्या 3/2024 दर्ज की थी. प्राथमिकी के मुताबिक, शिव शर्मा ने रातू रोड फ्लाइओवर बना रही कंपनी केसीसी बिल्डकॉन के अधिकारी को जान मारने की नीयत से धमकी दी. उसने अधिकारी से सेटेलमेंट के रूप में पांच प्रतिशत राशि की मांग की थी और राशि नहीं देने पर अंजाम भुगतने की चेतावनी दी थी. शिव शर्मा पर रांची, रामगढ़, हजारीबाग, पलामू, समेत अन्य जिलों में कई गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं.

रांची में शिक्षक दिवस पर फूटा शिक्षकों का गुस्सा, जलाई डीएसई के आदेश की प्रतियां

रांची। अखिल झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ रांची इकाई के आह्वान पर सभी प्रखंडों के प्राथमिक और मध्य विद्यालय के शिक्षकों ने कचहरी स्थित शिक्षा परिसर में डीएसई के आदेश की प्रतियां जलाईं.शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम के दौरान शिक्षकों ने सबसे पहले सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया. इसके बाद जुलूस की शक्ल में कतारबद्ध होकर नागाबाबा खटाल के पास जमा होकर जिला शिक्षा अधीक्षक (डीएसई) बादल राज की ओर से शिक्षकों के वार्षिक वेतन वृद्धि के लिए हिंदी टिप्पण और प्रारूपण परीक्षा से संबंधित शपथ पत्र जमा करने का निर्देशित पत्र का विरोध किया गया. साथ ही इससे निर्देशित पत्र की प्रतियां जलाई गईं. मौके पर शिक्षकों ने शिक्षा विभाग के विरोध में जमकर नारेबाजी भी की. उल्लेखनीय है विभाग की ओर से हिंदी टिप्पण पास करने के विषय को अवांछित रूप से आधार बनाते हुए जिले के लगभग तीन हजार शिक्षकों के जुलाई माह से ही वार्षिक वेतनवृद्धि पर रोक लगाकर रखी गई है. बाद में पत्र जारी कर प्रथम श्रेणी दंडाधिकारी का शपथ पत्र शिक्षकों को देने की मांग का भी विरोध किया गया. मौके पर संघ के प्रदेश अध्यक्ष अनूप केशरी, मुख्य प्रवक्ता नसीम अहमद और जिला अध्यक्ष सलीम सहाय ने कहा कि डीएसई बादल राज का आदेश अव्यवहारिक और शिक्षकों को मानसिक शारीरिक प्रताड़ित करने वाला है.

पूर्वी सिंहभूम जिले में महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम के तहत मनरेगा के माध्यम से 35 जीपीएचडी संचालित

समुदायों को उनकी हकदारी के साथ 'सरकार' के करीब ला रही है ग्राम पंचायत हेल्प डेस्क

शुभम संदेश। जमशेदपुर/ रांची

सरकार ने राज्य की सभी 4,246 पंचायतों में इस पहल को अनिवार्य किया

झारखंड के दूर-दराज के गांवों में नागरिकों को उनके अधिकारों के साथ सरकार से जोड़ने की दिशा में एक प्रभावशाली कदम उठाया गया है, वो है ग्राम पंचायत हेल्प डेस्क की स्थापना. यह पहल पूर्वी सिंहभूम जिले के पटमदा, बोड़ाम और गुड़ाबांधा ब्लॉक की 35 पंचायतों में सक्रिय रूप से चल रही है और इसे 'टैगोर सोसाइटी फॉर रूरल डेवलपमेंट' (टीएसआरडी) द्वारा संचालित किया जा रहा है.एसआरडी यह कार्य महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम के माध्यम से कर रही है. इस पहल को प्रदान जैसी संस्थाओं का तकनीकी और प्रशिक्षण सहयोग भी प्राप्त है.

स्थानीय महिलाओं की अहम भूमिका, सरकारी सेवाओं तक आसान पहुंच : हर ग्राम पंचायत में चार पंचायत सहायकों की नियुक्ति की जा रही है, जिनमें महिलाओं को प्राथमिकता दी जा रही है. ये सहायिकाएं न केवल नौकरी कार्ड, पेंशन, आवास योजनाएं, आधार सुधार जैसे कार्यों में सहयोग करती हैं, बल्कि नागरिकों को सशक्त और जागरूक भी बना रही हैं. टीएसआरडी के संयुक्त सचिव नंदलाल बख्शी बताते हैं, "हेल्प डेस्क में तैनात स्थानीय सहायक न सिर्फ फॉर्म भरने का काम करते हैं, बल्कि लोगों को अपनी बात कहने का हौसला भी देते हैं."

प्रशिक्षण, प्रोत्साहन और स्थानीय नेतृत्व को बढ़ावा: प्रत्येक सहायिका को 2,500 का मानदेय, और कार्य आधारित 1,200 से 2,000 तक का प्रोत्साहन दिया जाता है. ये डेस्क न केवल सेवाएं दे रही हैं, बल्कि स्थानीय नेतृत्व को भी विकसित कर रही हैं.प्रदान के प्रतिनिधि सुकांत सरकार बताते हैं कि ब्लॉक-स्तरीय सहायता केंद्रों के अनुभव से उन्होंने जीपीएचडी के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल, शिकायत निवारण प्रणाली और रिकॉर्ड-कीपिंग जैसी संरचनाएं तैयार करने में मदद की है.

'आदि कर्मयोगी अभियान' के उद्देश्यों में भी निभा सकते हैं भूमिका : हालांकि जीपीएचडी सीधे तौर पर जनजातीय कार्य मंत्रालय की पहल 'आदि कर्मयोगी अभियान' का हिस्सा नहीं है, लेकिन ये इसके उद्देश्यों, स्थानीय नेतृत्व निर्माण, सेवा वितरण सुधार और शासन में सहभागिता को पूरा करने में पूरक भूमिका निभा सकतीहैं.

चुनौतियां बरकरार, लेकिन आत्मविश्वास मजबूत: कर्मचारियों की कमी, समन्वय की दिक्कतें और डिजिटल ज्ञान की सीमाएं अभी भी बाधा हैं. फिर भी यह पहल ग्रामीणों के मन में स्थानीय संस्थाओं पर विश्वास वापस ला रही है. नंदलाल बख्शी के शब्दों में, "यह लोकतांत्रिक शासन की सही व्याख्या है – जहां लोग केवल वोट नहीं देते, बल्कि उन्हें हर हकदारी वाली सेवा सम्मान के साथ मिले, यह सुनिश्चित होता है.

समय, पैसा दोनों की बचत; दलालों पर नकेल

इस मॉडल ने गांवों में दलाली प्रथा को खत्म करने में बड़ी भूमिका निभाई है. पहले जहां ग्रामीणों को मामूली सेवाओं के लिए पैसे खर्च करने पड़ते थे, अब वे नि:शुल्क सहायता पा रहे हैं.ग्रामीण महिलाएं कहती हैं कि अब उन्हें दस्तावेज कार्य या जानकारी के लिए मुखिया का इंतजार नहीं करना पड़ता, वे सीधे हेल्प डेस्क पर जाकर सहायता पा रही हैं.

सरकार का बड़ा कदम : सभी पंचायतों में जीपीएचडी अनिवार्य

जनवरी 2024 में झारखंड सरकार ने राज्य की सभी 4,246 ग्राम पंचायतों में जीपीएचडी अनिवार्य कर दिए हैं. प्रखंड विकास अधिकारी शशि डुंगडुंग बताती हैं कि यह तो केवल शुरुआत है. ये हेल्प डेस्क ग्रामीण शासन को अधिक संवेदनशील और भागीदारीपूर्ण बना रही हैं. हालांकि, अभी भी जागरूकता और डिजिटल साक्षरता की कमी एक चुनौती है, लेकिन प्रयास जारी हैं.

आजसू पार्टी ने गिरिडीह में संगठन सुदृढ़ीकरण और जनता से संपर्क बढ़ाने पर जोर दिया

रांची/गिरिडीह । गिरिडीह में आजसू पार्टी की जिला कार्य समिति की बैठक में केंद्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश कुमार महतो ने कार्यकर्ताओं से जनता से संवाद और संपर्क तेज करने का आह्वान किया. उन्होंने कहा कि जनमुद्दों पर मुखर होकर ही पार्टी अपनी अग्रणी भूमिका निभा सकती है. महतो ने वर्तमान सरकार की विफलताओं को लेकर कड़ा रुख अपनाया और सशक्त विपक्ष बनने की प्रतिबद्धता जताई. उन्होंने कार्यकर्ताओं को आत्ममूल्यांकन कर संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया. बैठक में महिला नेतृत्व को प्रोत्साहन देने और पंचायत से लेकर राज्य स्तर तक महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने का संकल्प लिया गया. साथ ही, पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष को जारी रखने का निर्णय हुआ. पार्टी ने सामाजिक न्याय और समानता के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई. पूर्व विधायक डॉ. लम्बोदर महतो, केंद्रीय उपाध्यक्ष प्रवीण प्रभाकर, महासचिव संजय मेहता सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी बैठक को संबोधित किया. सभी कार्यकर्ताओं ने संगठन को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का दृढ़ संकल्प व्यक्त किया.

झारखंड ओलंपिक संघ के कौस्तव ने दिया इस्तीफा

रांची। झारखंड ओलंपिक संघ के एसोसिएट जॉइंट सेक्रेटरी वेदांत कौस्तव ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है. शुक्रवार को उन्होंने संघ के अध्यक्ष को अपना त्यागपत्र सौंपकर तत्काल प्रभाव से पद छोड़ने की घोषणा की. वेदांत ने अपने पत्र में लिखा कि गहन विचार के बाद उन्होंने यह फैसला लिया है और यह पद छोड़ने का सही समय है. हालांकि, वे इस पद से हट रहे हैं, लेकिन खेल और खिलाड़ियों के कल्याण के लिए उनकी प्रतिबद्धता बरकरार रहेगी. भविष्य में भी खिलाड़ियों, संस्थानों और समाज के साथ मिलकर झारखंड में खेलों को बढ़ावा देने के लिए काम करते रहेंगे.

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

रांची, रविवार 06 सितंबर 2025 ● भाद्रपद शुक्ल पक्ष 14, संवत 2082 ● रांची एवं पटना से प्रकाशित ● वर्ष : 3, अंक : 150 ● मूल्य ₹ 4, पृष्ठ संख्या : 12

चोरी का विरोध करने पर वृद्धा की बेरहमी से हत्या

देवघर । जिले के रिखिया थाना क्षेत्र अंतर्गत फतेपुर गांव में गुरुवार की देर रात एक हृदयविदारक घटना सामने आई, जहां चोरी का विरोध करने पर 81 वर्षीय वृद्धा की निर्मम हत्या कर दी गई. मृतका की पहचान कमली देवी के रूप में हुई है. परिजनों के अनुसार, घर से लगभग चार लाख रुपये मूल्य की संपत्ति चोरी हुई है. वारदात के दौरान कमली देवी घर के बाहरी कमरे में सो रही थीं. सुबह जब परिवार के अन्य सदस्य जागे, तो देखा कि कमरे का ताला टूटा हुआ है और घर का सारा सामान अस्त-व्यस्त पड़ा है. अलमारी और बॉक्स भी खाली मिले. घटना की सबसे भयावह तस्वीर तब सामने आई जब कमली देवी खून से लथपथ हालत में जमीन पर पड़ी मिलीं. उनके पौत्र संदीप कुमार रावत ने बताया कि घटना के वक्त दादी की सांसें चल रही थीं. उन्हें आनन-फानन में पहले कुंडा के एक निजी अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टर नहीं मिलने पर देवघर सदर अस्पताल भेजा गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. परिजनों का आरोप है कि चोरों ने घर में घुसकर जब कमली देवी ने विरोध किया, तो उनके सिर पर किसी भारी वस्तु से हमला कर दिया गया. इसके बाद चोर घर से कीमती सामान और नकदी लेकर फरार हो गए. घटना की सूचना मिलते ही रिखिया थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी गई है. शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है. वृद्धा की नृशंस हत्या से गांव में भय और आक्रोश का माहौल है. ग्रामीणों ने जल्द से जल्द अपराधियों की गिरफ्तारी की मांग की है.

प. सिंहभूम के कुदाहातु का मामला

पेयजल संकट गहराया, ग्रामीण ने किया जमकर प्रदर्शन

शुभम संदेश। चाईबासा

सिंहभूम जिले का कुदाहातु गांव पिछले आठ महीने से गंभीर पेयजल संकट से जूझ रहा है. इसी समस्या को लेकर शुक्रवार को ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया और जिला प्रशासन से समस्या के समाधान की मांग की. ग्रामीणों का कहना है कि जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट (डीएमएफटी) से बना जल मीनार खराब होने के कारण पिछले आठ महीने से गांव में पानी नहीं आ रहा है, जिससे उनका दैनिक जीवन प्रभावित हो गया है. ग्रामीण दूर-दराज से पानी लाने को मजबूर हैं. अभी तक पंचायत प्रतिनिधियों और विभागीय अधिकारियों का ध्यान इस ओर नहीं गया है. 'हर घर नल योजना' और अन्य जलापूर्ति की योजनाएं सिर्फ कागजों पर चल रही हैं. ग्रामीणों ने समस्या का समाधान जल्द नहीं होने पर बड़े आंदोलन की चेतावनी दी है. आदिवासी किसान मजदूर पार्टी के जिला अध्यक्ष एवं जिला परिषद सदस्य मान सिंह तिरिया ने कहा कि कुदाहातु जैसी ही स्थिति इस जिले के ज्यादातर गांवों की भी है. उन गांवों में भी पेयजल आपूर्ति की समस्या लगातार बनी हुई है. उन्होंने प्रशासन से जल्द से जल्द जल मीनार की मरम्मत करवा कर ग्रामीणों की समस्या को दूर करने की मांग की.

रेल हादसा : मालगाड़ी से टकराया इंजन, दो घायल

चाईबासा। जिले में शुक्रवार की सुबह करीब 4 बजे रेल हादसा हो गया. चक्रधरपुर रेल मंडल के मनोहरपुर यार्ड में एक डीजल इंजन (डीएलइ-12933) ने लाइन नंबर 7 पर खड़े पांच डिब्बों को टक्कर मार दी. इस हादसे में दो रेलकर्मी घायल हुए. जबकि एक डिब्बा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया. जानकारी के मुताबिक, अरविंद कुमार को गर्दन में चोट लगी है. उन्हें उत्कल एक्सप्रेस से चक्रधरपुर रेलवे अस्पताल भेजा गया है. वहीं, सीके बारीक को मामूली चोटें आई हैं. टक्कर इतनी जोरदार थी कि एक डिब्बा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया और उसमें दरारें पड़ गईं. इसके अलावा, जिन डिब्बों में भारी उपकरण रखे थे, वे भी पटरी से उतरकर जमीन पर गिर गए. मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) ने मामले की जांच के आदेश दिए हैं. उन्होंने डीजल इंजन के लोको पायलट संजय सिंह और सहायक लोको पायलट नकुल कुमार से पूछताछ करने को कहा है. जांच के बाद ही हादसे के कारणों का पता चल पाएगा.

धनबाद के बाघमारा स्थित रामकनाली ओपी क्षेत्र का मामला

कुम्हार पट्टी भू-धंसान से स्कूल समेत 5 घर जमींदोज, कई घायल

शुभम संदेश। धनबाद

जिले के बाघमारा स्थित रामकनाली ओपी क्षेत्र के बट्टू बाबु बंगला के समीप शुक्रवार सुबह भू-धसान की बड़ी घटना हुई है. परियोजना से सटे कुम्भार पट्टी में अचानक भू धंसान और भू स्खलन से पांच घर प्रभावित हुए, जबकि एक सरकारी विद्यालय भवन जमींदोज हो गया, हालांकि विद्यालय में पठन पाठन नहीं होता था. जानकारी के अनुसार, भू धंसान और भू स्खलन के कारण नागेश्वर यादव और कारू यादव के मवेशी समेत प्रभावित आवासों में रखे नगदी और जेवरात गोफ में समा गया.

सूचना पाकर रामकनाली कतरास बरोरा सोनारडीह सहित आसपास की थानों की पुलिस और बीसीसीएल के अधिकारी भी पहुंचे. प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थान पर भेजने की व्यवस्था की गयी. इधर घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी का माहौल बन गया था. वहीं, घटना के बाद सभी घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती किया गया है. घटना के बाद से इलाके में हड़कंप मचा हुआ है. ग्रामीणों ने बताया कि घटना मुंडा धौड़ा खटाल में हुआ है. घटना के बाद ग्रामीणों के प्रयास से 3 गाय, 7 भैंस को बचाया गया है, तीन लोगों को इलाज के लिए पास के ही एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है. इसके साथ ही कोयला कंपनी की कुछ गाड़ियों की भी जमींदोज होने की बात कही जा रही है. वहीं घटना के बाद मौके पर पुलिस प्रशासन ने पहुंच कर आक्रोशित ग्रामीणों को शांत कराया. वहीं, इस घटना पर राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर यूनियन के महामंत्री एके झा ने बीसीसीएल और सीआइएसएफ की घोर लापरवाही को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि कंपनी की लोकल यूनिट और सुरक्षा बलों की निष्क्रियता ने पूरे इलाके को खतरे में डाल दिया है. उन्होंने मांग की कि तुरंत राहत और बचाव कार्य शुरू किया जाए और जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई की जाए.

बीसीसीएल एरिया-4 के कांटा पहाड़ी में बड़ा हादसा

5 मजदूर समेत सर्विस वैन पानी में गिरी, 2 शव मिले, 3 की तलाश

- सुरक्षा विभाग की टीम ने रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू कर दिया है.

संवाददाता । कतरास (धनबाद)

बीसीसीएल एरिया 4 के कांटापहाड़ी में संचालित मां आउटसोर्सिंग कंपनी में शुक्रवार को कंपनी के प्रोजेक्ट क्षेत्र में भूस्खलन से भारी पत्थर गिरने से कंपनी का सर्विस वैन प्रोजेक्ट के अंदर पानी में चली गयी. वैन में सवार पांच कर्मियों की मौत हो गई. रेस्क्यू कर दोपहर एक कर्मी का शव निकाला गया, जबकि शाम करीब पांच बजे के आसपास दूसरे कर्मी का शव पानी से बाहर निकाला गया. वहीं अन्य तीन कर्मियों की तलाश की जा रही है.

इस साल लगातार बारिश होना भू धंसान का कारण बताया जा रहा है. एक पेलोडर मशीन की मदद से सर्विस वैन को खाई से बाहर निकाल लिया गया है, लेकिन अभी तक लापता तीन मजदूरों का कोई पता नहीं चल पाया है. घटना की गंभीरता को देखते हुए डीजीएमएस (खान सुरक्षा महानिदेशालय) की टीम भी मौके पर पहुंच गई है. इसके अलावा मुनिडीह से छह सदस्यीय गोताखोरों की टीम भी मौके पर पहुंची और शवों को निकालने का प्रयास किया जा रहा है.

धनबाद में वज्रपात से दो युवकों की मौत

धनबाद जिले के सिंदरी थाना क्षेत्र के मनोहरटांड में गुरुवार की शाम वज्रपात की चपेट में आने से दो युवकों की मौत हो गई. घटना के बाद पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई. जानकारी के अनुसार गांव के रोहित महतो और उत्तम मल्लिक बारिश से बचने के लिए एक मंदिर में शरण लिए हुए थे. इसी दौरान अचानक आकाशीय बिजली गिर गई जिससे दोनों गंभीर रूप से झुलस गए.स्थानीय लोगों ने तत्काल उन्हें नजदीकी निजी क्लिनिक पहुंचाया और बाद में बेहतर इलाज के लिए डॉक्टरों ने शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल धनबाद रेफर कर दिया. एसएनएमएमसीएच के चिकित्सकों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया. मृतक उत्तम मल्लिक दो बच्चों के पिता थे. उनका एक बेटा पांच साल का और दूसरा शिशु महज दो महीने का है. जबकि रोहित महतो अविवाहित थे. दोनों ही दिहाड़ी मजदूरी कर अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे. अचानक हुई इस दर्दनाक घटना से पूरे गांव में मातम पसर गया है. परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और ग्रामीण भी गहरे सदमे में हैं.

कोहिनूर पावर प्लांट पर 241.9 करोड़ रु की बैंक धोखाधड़ी का आरोप

मामले की जांच अब सीबीआई करेगी

शुभम संदेश। सरायकेला

सरायकेला में कोहिनूर पावर प्लांट पर 241.9 करोड़ रुपए की कथित धोखाधड़ी का गंभीर आरोप लगा है. जानकारी के मुताबिक, कंपनी ने यह राशि झारखंड के कांद्रा प्रखंड के कुचीडीह गांव में कोयला आधारित थर्मल पावर प्लांट लगाने के लिए पांच अलग-अलग बैंकों से लोन के रूप में ली थी. अब यह मामला केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के पास भेज दिया गया है, जो इसकी विस्तृत जांच करेगी.

बैंक की शिकायत पर कोलकाता हाईकोर्ट में मामला दर्ज : बैंकों को शक है कि परियोजना के नाम पर ली गई राशि का गलत इस्तेमाल किया गया और पावर प्लांट का काम निर्धारित योजना के अनुसार नहीं हुआ. इस मामले को लेकर संबंधित बैंकों ने कोलकाता हाईकोर्ट में याचिका दायर की है. पांच बैंकों द्वारा दिए गए कर्ज की राशि मिलाकर 241.9 करोड़ बनती है, जिसे अब एक संभावित बैंक फ्रॉड के रूप में देखा जा रहा है.

सीबीआई इस बात की जांच करेगी कि: क्या यह राशि गलत दस्तावेजों के आधार पर ली गई थी? क्या कोहिनूर पावर कंपनी ने इस फंड का दुरुपयोग किया? क्या इसमें किसी सरकारी अधिकारी की भूमिका रही?

आगे क्या हो सकता है : अब जब मामला सीबीआई को सौंपा गया है, तो आगे कंपनी के अधिकारियों से पूछताछ और दस्तावेजों की फॉरेंसिक जांच की जा सकती है. यदि आरोप सही पाए जाते हैं, तो बड़ी कानूनी कार्रवाई संभव है.

संघर्षों को पार कर बनाई पहचान

केबीसी में पहले दिन जीते दो लाख रुपये

शुभम संदेश। धनबाद

सोनी टीवी के पॉपुलर शो 'कौन बनेगा करोड़पति' में अबतक धनबाद जिले से कई लोग पहुंच चुके हैं. गुरुवार को इस शो में फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट राउंड में सबसे तेज जवाब देकर धनबाद के कुमारधुबी की कुमारी पूजा अमिताभ बच्चन के सामने हॉट सीट पर बैठीं. पूजा ने खुद को एक होममेकर बताया, जो क्लास 1 से 8 तक के बच्चों को घर पर सभी विषय पढ़ाती हैं. पूजा की ससुराल बिहार में है, लेकिन वह ओडिशा के बलांगीर में अपने पति के साथ रहती हैं. पूजा जियोग्राफी में एमए किया है और नेट पास हैं. उनका आगे पीएचडी करने का सपना है. पूजा ने बताया कि आर्थिक दिक्कतों के कारण वह पीएचडी का रजिस्ट्रेशन नहीं करा पायीं.

पूजा ने शो में बताया कि उनका जीवन अभावों और संघर्ष में बीता है. पिता नशे के आदी थे. बेटी को पढ़ाने के खिलाफ थे, लेकिन मां ने विरोध के बावजूद स्कूल भेजा. पूजा ने दसवीं में स्कूल टॉप किया, जिससे समाज की सोच में बदलाव आया. आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने शिक्षकों की मदद ली और परिवार को सहारा देने के लिए खुद भी स्कूल में पढ़ाना शुरू किया. इस दौरान पढ़ाई थोड़ी पीछे छूट गई, लेकिन अब वह अपने पीएचडी के सपने को साकार करना चाहती हैं. अपने भाई-बहनों में सबसे अधिक शिक्षित पूजा ने हिम्मत और लगन से मिसाल कायम की है.

खेल में दिखा आत्मविश्वास : केबीसी के खेल में पूजा ने बेहतरीन आत्मविश्वास दिखाया. 5,000 रुपये के पहले सवाल में उन्होंने "सफेद कोट किस व्यवसाय के लोग पहनते हैं?" का सही उत्तर दिया. 10,000 रुपये के सवाल "इनमें से कौन-सा एक बंगाली नृत्य नहीं है?" का भी सटीक जवाब दिया. 15,000 रुपये के लिए "भारत से सबसे अधिक दूर कौन-सा द्वीप राष्ट्र है?" का उत्तर न्यूजीलैंड दिया.

20,000 रुपये के सवाल में उन्होंने "नालंदा जिले का मुख्यालय" बिहारशरीफ बताया. 25,000 रुपये के पड़ाव पर "कुंती का जन्म किनसे नहीं हुआ था?" का उत्तर सहदेव दिया. इसके बाद उन्होंने ऑडियंस पोल लाइफलाइन का इस्तेमाल कर 1 लाख रुपये, और 50:50 लाइफलाइन से 2 लाख रुपये जीत लिए. नौवां सवाल आने तक समय समाप्त हो गया. अब पूजा शुक्रवार को खेल जारी रखेंगी.

विधायक सरयू राय के कैंटीन प्रभारी राजू राव का निधन

जमशेदपुर। जमशेदपुर पश्चिम के विधायक सरयू राय के करीबी और कैंटीन प्रभारी राजू राव का शुक्रवार की सुबह हार्ट अटैक से निधन हो गया. 21 वर्ष पूर्व पत्रकारिता जगत से अपने करियर की शुरुआत करने वाले राजू राव ने न सिर्फ मीडिया क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई बल्कि कई युवाओं को कैमरा संचालन की बारीकियां भी सिखाईं. राजू राव को विधायक सरयू राय ने उनकी सक्रियता और कर्मठ कार्यशैली को देखते हुए पार्टी का वरीय सदस्य बनाया था. इसके बाद उन्हें सरयू राय की ओर से संचालित पांच रूपये वाले जनसेवा कैंटीन का प्रभारी नियुक्त किया गया. बीते दो सितंबर को अचानक उनकी तबीयत बिगड़ने पर उन्हें टाटा मुख्य अस्पताल ले जाया गया. जांच में हार्ट अटैक की पुष्टि होने पर परिवारजन उन्हें ब्रह्मानंद अस्पताल, तमोलिया ले गए, जहां इलाज के दौरान शुक्रवार सुबह उन्होंने अंतिम सांस ली.

हथियार के साथ दो युवक गिरफ्तार

जमशेदपुर । झारखंड के पूर्वी सिंहभूम जिले में जुगसलाई थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए दो युवकों को अवैध हथियार और जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया. विधि व्यवस्था डीएसपी ने प्रेस वार्ता में बताया कि वरीय पुलिस अधीक्षक को खरकई नदी के रेलवे ब्रिज के पास दो युवकों के जरिए किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने की सूचना मिली थी जिसके बाद जुगसलाई थाना प्रभारी बैजनाथ कुमार के नेतृत्व में एक छापेमारी टीम का गठन किया गया. दोनों युवकों को मौके से गिरफ्तार किया गया. तलाशी में उनके पास से दो पिस्टल (7.65 मिमी), तीन जिंदा कारतूस और एक एप्पल मोबाइल बरामद किया गया. गिरफ्तार आरोपितों में बागबेड़ा हरहरगुट्टू निवासी अभिषेक सिंह और जुगसलाई शिवघाट रोड निवासी गणेश रजक उर्फ चुजा हैं. दोनों को पूछताछ के बाद शुक्रवार को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया और उन पर आर्म्स एक्ट में केस दर्ज करके जांच शुरू कर दी गई है.

शहीद सुनील का हुआ अंतिम संस्कार, पिता ने दी मुखाग्नि

शुभम संदेश। मेदिनीनगर

पलामू के मनातू थाना क्षेत्र के केदल गांव में बुधवार रात उग्रवादी संगठन तृतीय सम्मेलन प्रस्तुति कमेटी (टीएसपीसी) से लोहा लेते हुए बलिदान हुए जिला पुलिस के जवान सुनील राम का दाह संस्कार शुक्रवार किया गया. दाह संस्कार सुबह हैदरनगर के परता गांव में सोननदी तट पर राजकीय सम्मान के साथ किया गया.

सुनील को अंतिम विदाई देने के लिए लोगों की भारी उमड़ी. सभी की आंखें नम थी और वो सुनील की शहादत पर गर्व कर रहे थे. नारे भी लगा रहे थे. उल्लेखनीय है कि मुठभेड़ में बलिदान होने के बाद गुरुवार दोपहर एमएमसीएच में पोस्टमार्टम और पुलिस लाइन में सलामी देने के बाद सुनील का पार्थिव शव हैदरनगर के परता गांव लाया गया था. माता-पिता के नहीं रहने के कारण गुरुवार शाम दाह संस्कार नहीं हो पाया. माता-पिता हरियाणा में रहकर मजदूरी करते हैं. शुक्रवार सुबह माता-पिता हरियाणा से डेहरी पहुंचे और फिर वहां से सासाराम-रांची इंटरसिटी एक्सप्रेस पकड़ कर हैदर नगर आए. उनके आने के बाद सुनील के शव का अंतिम संस्कार किया गया.

सुबह करीब 9:30 बजे परता गांव से सुनील की अंतिम यात्रा निकाली गई, जिसमें क्षेत्रीय विधायक संजय कुमार सिंह यादव, अभियान एसपी राकेश कुमार, हुसैनाबाद के एसडीपीओ एस मोहम्मद याकूब, हुसैनाबाद के थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सोनू कुमार चौधरी, हैदर नगर के अंचल अधिकारी संतोष कुमार, इंस्पेक्टर भोला राम, हैदर नगर के थाना प्रभारी अफजल अंसारी, मोहम्मदगंज के थाना प्रभारी नारायण सोरेन, भाजपा नेता कामेश्वर कुशवाहा, परता मुखिया कौशल किशोर, पंचायत समिति सदस्य गुप्तेश्वर पांडे, झामुमो के जिला उपाध्यक्ष विवेकानंद सिंह सहित कई लोग शामिल हुए. सोन नदी तट पर अंतिम संस्कार के क्रम में पिता मलूकन राम ने मुखाग्नि दी.

धार्मिक मान्यता : साल 2025 का अंतिम चंद्रग्रहण कल

सूतक काल में वर्जित है पूजा-पाठ और खाना-पकाना

शुभम संदेश डेस्क

साल 2025 का अंतिम चंद्रग्रहण 7 सितंबर की रात को लगने जा रहा है, जो भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों में साफ़ तौर पर देखा जा सकेगा. यह एक पूर्ण चंद्रग्रहण होगा जिसकी कुल अवधि करीब 3 घंटे 30 मिनट रहेगी, जबकि पूर्ण ग्रहण का चरण रात 11:01 से 12:23 तक यानी लगभग 1 घंटे 22 मिनट तक रहेगा. खास बात यह है कि यह ग्रहण पितृ पक्ष शुरू होने से ठीक पहले लगेगा, जिससे इसका धार्मिक महत्व और भी बढ़ जाता है.

चंद्रग्रहण के दौरान सूतक काल की मान्यता होती है, जो ग्रहण शुरू होने से करीब 9 घंटे पहले शुरू हो जाता है. इस अवधि में पूजा-पाठ, खाना पकाना और किसी भी प्रकार के शुभ कार्य वर्जित माने जाते हैं. ऐसे में सवाल उठता है कि क्या पितृ पक्ष के पहले दिन श्राद्ध करना उचित होगा या नहीं? आइए जानते हैं इस चंद्रग्रहण से जुड़ी जरूरी जानकारियां, सूतक काल की शुरुआत का समय, और श्राद्ध से संबंधित नियमों की विस्तृत जानकारी.

सूतक काल कब से

चंद्रग्रहण की शुरुआत 7 सितंबर की रात 9 बजकर 57 मिनट पर होगी. इसके हिसाब से सूतक काल ग्रहण शुरू होने से लगभग 9 घंटे पहले, यानी 7 सितंबर की दोपहर 1 बजकर 57 मिनट से शुरू हो जाएगा. सूतक काल शुरू होते ही सभी मंदिरों के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं और धार्मिक अनुष्ठान या शुभ कार्य रोक दिए जाते हैं. इस दौरान खाने-पीने की चीजों में तुलसी के पत्ते या दूर्वा डालना शुभ माना जाता है. चूंकि यह चंद्रग्रहण भारत में दिखाई देगा, इसलिए सूतक काल भी भारत में वैध और मान्य माना जाएगा. इस समय सावधानी बरतना और नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक होता है.

सूतक काल के नियम

- सूतक काल में पूजा-पाठ करने से परहेज करना चाहिए.
- इस दौरान गर्भवती महिलाओं को घर से बाहर निकलने से बचना चाहिए ताकि वे और घर दोनों सुरक्षित रहें.
- सूतक काल में बाल काटना या नाखून काटना उचित नहीं माना जाता है. इस समय शरीर की सफाई से जुड़ी ये चीजें टालनी चाहिए.
- खाने-पीने की सभी वस्तुओं में सूतक काल के दौरान तुलसी के पत्ते डालने चाहिए, क्योंकि इससे उस भोजन में पवित्रता बनी रहती है.
- इस समय भगवान के मंत्रों का जाप करना चाहिए और अपने इष्ट देवता का स्मरण करते रहना चाहिए, जिससे मानसिक शांति व आध्यात्मिक लाभ मिलता है.

ग्रहण का समय व नियम

- चंद्रग्रहण के लिए सूतक काल ग्रहण आरंभ होने से 9 घंटे पहले शुरू होता है.
- सूर्यग्रहण के लिए सूतक काल ग्रहण आरंभ होने से 12 घंटे पहले शुरू होगा.
- चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण के सूतक काल में 3 घंटे का अंतर होता है.
- इस समय भगवान की मूर्तियों को स्पर्श नहीं किया जाता.
- सभी मंदिरों के कपाट बंद कर दिए जाते हैं.
- ग्रहण काल में खाना-पीना वर्जित होता है.
- इस समय पूजा-पाठ या अन्य शुभ कार्य नहीं किए जाते.
- घर और मंदिर की साफ-सफाई की जाती है.
- दान-पुण्य और धार्मिक कार्य किए जाते हैं.

सीसीपीडी कार्यक्रम के अंतर्गत 50 घंटे के प्रशिक्षण में योगदान देने वाले शिक्षकों को मिला सम्मान

शिक्षक सम्मान समारोह में 128 शिक्षक सम्मानित

- शिक्षक दिवस पर झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद में आयोजित हुआ भव्य समारोह
- राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए रामगढ़ और चतरा के दो शिक्षक हुए सम्मानित

शुभम संदेश। रांची

शिक्षक दिवस के अवसर पर झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद सभागार में शुक्रवार को राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के तत्वाधान में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में राज्यभर के शिक्षकों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया.समारोह में माध्यमिक शिक्षा निदेशक राजेश प्रसाद, परिषद के प्रशासी पदाधिकारी सचिदानंद दि. तिग्गा, जेएसएसएटी के उप निदेशक प्रदीप चौबे, बिंध्याचल पांडेय, सहायक निदेशक बांके बिहारी सिंह सहित सभी जिलों के डायट प्रतिनिधि और शिक्षकों ने भाग लिया.

दो राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए अनुशंसित

कार्यक्रम के दौरान 50 घंटे के अनिवार्य समेकित-सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (सीसीपीडी) में मॉड्यूल लेखन एवं डिजिटलीकरण में योगदान देने वाले 128 शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया. विशेष रूप से, राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिए अनुशंसित रामगढ़ के पीएमश्री उच्च विद्यालय के सहायक शिक्षक सुरेंद्र प्रसाद गुप्ता और चतरा के उत्क्रमित +2 उच्च विद्यालय, दवारी के सहायक शिक्षक मनोज कुमार चौबे को 25-25,000 की सम्मान राशि, प्रशस्ति पत्र, शॉल और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया.

शिक्षक समाज का कुम्हार: राजेश प्रसाद

समारोह को संबोधित करते हुए राजेश प्रसाद ने कहा कि शिक्षक समाज के शिल्पकार होते हैं. बच्चों को उन्होंने गीली मिट्टी की संज्ञा दी और शिक्षकों को कुशल कुम्हार, जो बच्चों को सही आकार देने में अहम भूमिका निभाते हैं. उन्होंने कहा कि तकनीकी युग में शिक्षकों को नवाचारों का प्रयोग करते हुए छात्रों को पढ़ाना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे पाठ को सार्थक रूप से समझें. उन्होंने कहा, "शिक्षक अपने अनुभवों से बच्चों के सर्वांगीण विकास की दिशा में निरंतर पहल करें. कक्षा के अंतिम पंक्ति में बैठा बच्चा अगर पहली पंक्ति में बैठने के लिए प्रेरित हो, तभी हमारा प्रयास सार्थक होगा."

सम्मान से बढ़ी जिम्मेदारी: मनोज कुमार चौबे

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिए अनुशंसित मनोज कुमार चौबे ने कहा कि सम्मान के साथ नई जिम्मेदारी भी आती है. मैं गणित और विज्ञान को कला एवं संस्कृति के माध्यम से जोड़कर पढ़ाता हूं, जिससे बच्चे रचनात्मक रूप से सीखते हैं." समारोह के अंत में डॉ. नीलम रानी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया.

लंबे समय से काम की कमी और आर्थिक तंगी से जूझ रहे एचईसी को मिला बड़ा प्रोजेक्ट

पहली बार थर्मल पावर प्लांट उपकरणों का निर्माण होगा, कर्मचारियों में नई ऊर्जा का संचार

कर्मचारियों और युवाओं में रोजगार की नई उम्मीद जगी

शुभम संदेश। रांची

हेवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन (एचईसी) एक बार फिर औद्योगिक गतिविधियों का केंद्र बनने की ओर अग्रसर है. पहली बार एचईसी को थर्मल पावर प्लांट के लिए उपकरण निर्माण का कार्य मिला है, जिससे कर्मचारियों में उत्साह की लहर दौड़ गई है. यह प्रोजेक्ट न सिर्फ एचईसी की साख को नया आयाम देगा, बल्कि संस्थान के पुनरुत्थान की दिशा में भी मील का पत्थर साबित होगा.

एक ही छत के नीचे अत्याधुनिक सुविधाएं : एचईसी प्रबंधन के अनुसार, यहां कास्टिंग, फोर्जिंग और मशीनिंग जैसी उच्च स्तरीय सुविधाएं पहले से मौजूद हैं, जिससे बड़े और जटिल उपकरणों का निर्माण संभव है. भेल के सीएमडी व एचईसी प्रभारी द्वारा अधिकारियों को इस परियोजना के लिए आवश्यक तैयारियां शुरू करने का निर्देश दिया गया है.

कर्मचारियों में दिखा उत्साह, यूनियन ने जताई उम्मीदें : लंबे समय से काम की कमी से जूझ रहे कर्मचारियों को इस नई परियोजना से उम्मीद की किरण नजर आई है. एचईसी मजदूर यूनियन के नेता मनोज पाठक ने कहा कि यह न केवल संस्थान के लिए एक बड़ी उपलब्धि है, बल्कि श्रमिकों के लिए भी स्थायी रोजगार का मार्ग खोलेगा.

तकनीकी स्तर पर हो रहा बदलाव

प्रोजेक्ट की शुरुआत एचईसी के एमटीपीआई एमटीपीआई) प्लांट से की जाएगी. इसके तहत कई पुरानी मशीनों को री-मॉडिफाई किया जा रहा है, जिस पर 10 से 50 लाख रुपये तक का खर्च अनुमानित है. विशेषज्ञों का मानना है कि इन तकनीकी सुधारों के बाद एचईसी देश की भारी मशीनरी आवश्यकताओं को पूरा करने में और अधिक सक्षम हो जाएगा.

औद्योगिक महत्व और भविष्य की संभावनाएं

पिछले छह दशकों से एचईसी अंतरिक्ष अनुसंधान, रक्षा उत्पादन और स्टील सेक्टर के लिए मशीन व उपकरण बनाता रहा है. थर्मल पावर प्लांट उपकरण निर्माण की शुरुआत से इसकी औद्योगिक प्रासंगिकता और मजबूत होगी. प्रबंधन को विश्वास है कि इस परियोजना के जरिए उत्पादन इकाइयों में गति आएगी और संस्थान की आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी.

संस्थान के पुनरुत्थान की ओर बढ़े कदम

यह परियोजना एचईसी को न सिर्फ आर्थिक मजबूती देगी, बल्कि तकनीकी युवाओं के लिए भी नए रोजगार अवसर सृजित करेगी. यदि यह योजना तय समय पर पूरी होती है, तो न केवल एचईसी की खोई प्रतिष्ठा वापस आएगी बल्कि झारखंड की औद्योगिक पहचान को भी एक नई दिशा मिलेगी.

शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर छात्रों ने मनाया शिक्षक दिवस

रांची। कांके स्थित नीरजा सहाय डीएवी स्कूल में शुक्रवार को शिक्षक दिवस धूमधाम से मनाया गया. इस अवसर पर मंत्रोच्चार के साथ दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई. इसके बाद प्राचार्या और शिक्षकों ने डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के सम्मान में पुष्पांजलि अर्पित की. बाद में कक्षा चौथी की छात्रा मीरा सत्यप्रकाश और सोनी ने मनमोहक नृत्य का प्रदर्शन किया. इसके बाद कक्षा 12 वीं के छात्रों ने शुक्रिया गान के जरिए शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सबका मन मोह लिया. बच्चों की ओर से समूह गान भी प्रस्तुत किया गया. पांचवीं कक्षा की छात्रा वाणीश्री और आठवीं की छात्रा शुभोश्री ने अपने भाषण में डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जीवनी की चर्चा की. कार्यक्रम के अंत में बच्चों ने शिक्षकों को फूल और ग्रीटिंग कार्ड देकर उनके प्रति आभार और अपनी श्रद्धा प्रकट की. कार्यक्रम में स्कूल के सभी शिक्षक और छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

एक नजर

शिक्षक दिवस पर रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने शिक्षिका डॉ जया जायसवाल को किया सम्मानित

रांची। देश के द्वितीय राष्ट्रपति रहे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती सह शिक्षक दिवस पर केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने शुक्रवार को रांची में शिक्षिका को सम्मानित किया. केंद्रीय मंत्री संजय सेठ ने रांची स्थित अपने पंडरा स्थित आवास पर डीएवी गांधीनगर स्कूल की जूनियर विंग की इंचार्ज डॉ. जया जायसवाल को उनके शिक्षा में किए गए सराहनीय कार्यों के लिए उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया. इस अवसर पर रक्षा मंत्री ने उनके अच्छे और उज्जवल भविष्य के लिए अपनी ओर से बधाई और शुभकामनाएं दी. उल्लेखनीय है कि डॉ. जायसवाल 20 वर्षों से लगातार अपनी सेवा डीएवी गांधीनगर स्कूल में विभिन्न पदों पर देती आ रही हैं. उनके मार्गदर्शन में स्कूल के विद्यार्थियों ने हमेशा उत्कृष्ट प्रदर्शन कर स्कूल का नाम रोशन किया है.

शिक्षक राष्ट्र की दिशा तय करते हैं: आनंदमयी सिंह

रांची। झारखंड की राजधानी रांची के कांके रोड स्थित कैंब्रियन पब्लिक स्कूल में शुक्रवार को शिक्षक दिवस के अवसर पर समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुईं सामाजिक कार्यकर्ता आनंदमयी सिंह ने विद्यार्थी जीवन में शिक्षकों के महत्व पर प्रकाश डाला. आनंदमयी सिंह ने कहा कि शिक्षक राष्ट्र निर्माता हैं. शिक्षकों की ओर से दी गई शिक्षा समाज और राष्ट्र की दिशा तय करती है। चरित्र, कौशल, संस्कार, अध्ययन सहित जीवन के तमाम आयामों को निखारने में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है. स्कूल की प्राचार्या प्रेमलता कुमारी ने इस मौके पर कहा कि शिक्षक बनना एक पेशा या रोजगार मात्र नहीं है, बल्कि समाज निर्माण के प्रति समर्पण का भाव भी दर्शाता है. उन्होंने कहा कि बदलती परिस्थितियों के साथ छात्र-शिक्षक संबंधों में कई वर्जनाएं आई हैं, बावजूद इसके बच्चों के लिए सफलता का पथ प्रशस्त करने में शिक्षकों के योगदान को कम नहीं आंका जा सकता है. इससे पहले मुख्य अतिथि और प्राचार्या प्रेमलता कुमारी ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तस्वीर पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ. इस अवसर पर बच्चों ने कई सांस्कृतिक कार्यक्रम गीत, नृत्य और मनोरंजक खेल प्रस्तुत किया. विद्यालय प्रबंधन की ओर से शिक्षकों को सम्मानित किया गया. कार्यक्रम का संचालन हेडगर्ल आशना रहमान और मिनाक्षी कुमारी ने किया. मौके पर काफी संख्या में शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित थे.

आई क्रिएट एकेडमी के शिक्षकों को मिला सम्मान

रांची। शिक्षक दिवस के अवसर पर हिंदी साहित्य भारती की ओर से शुक्रवार को आई क्रिएट एकेडमी के शिक्षकों को सम्मानित किया गया. रांची के एकेडमी परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में शिक्षकों को स्मृति चिन्ह और उपहार देकर उनके योगदान को सराहा गया. इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि और संगठन के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि शिक्षक समाज की नींव होते हैं. वे आने वाली पीढ़ियों को केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि सही दिशा और संस्कार भी देते हैं. आज शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का माध्यम बन चुकी है, ऐसे में शिक्षकों की भूमिका और भी अहम हो जाती है. उन्होंने आई क्रिएट एकेडमी के शिक्षकों के समर्पण और विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में उनकी भूमिका की प्रशंसा की.

धार्मिक झंडा उखाड़ने के विरोध में सड़क जाम की

रांची। राजधानी रांची के पिठोरिया के सोसो मोड़ पर धार्मिक झंडा उखाड़ कर फेंकने को लेकर तनाव का माहौल था. एक पक्ष के लोगों ने शुक्रवार को धार्मिक झंडे को उखाड़ फेंके जाने के बाद आरोपित की गिरफ्तारी की मांग को लेकर सड़क पर टायर जलाकर जाम कर दिया. इससे आवाजाही प्रभावित हुई और स्थिति तनावपूर्ण हो गई. घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों को समझाने की कोशिश की. पुलिस अधिकारियों ने प्रदर्शन कर रहे लोगों को आश्वासन दिया कि आरोपित को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा और मामले की निष्पक्ष जांच की जाएगी. पुलिस के आश्वासन के बाद प्रदर्शनकारियों ने सड़क जाम हटा लिया. थाना प्रभारी अभय कुमार ने बताया कि पुलिस उन असामाजिक तत्वों की तलाश कर रही है.

काल्पनिक मंदिर के प्रारूप पर पूजा पंडाल बना रही जगन्नाथ नगर दुर्गापूजा समिति

रांची। राजधानी रांची में शारदीय नवरात्र को लेकर तैयारियां जोरों पर है. राजधानी रांची में एक से बढ़कर एक पूजा पंडालों का निर्माण कराया जा रहा है. इसी क्रम में जगन्नाथ नगर सार्वजनीन दुर्गापूजा समिति राजेंद्र भवन सेक्टर-2 इस वर्ष 61वां वर्षगांठ मनाने जा रही है. इस पूजा की शुरुआत 1965 में हुई. इस वर्ष समिति की ओर दुर्गा पूजा का भव्य आयोजन कर रही है. मूर्तिकार जगदीश पाल भव्य मूर्ति बना रहे हैं. पुरुलिया से ढाकी आएंगे. साज-सज्जा और पंडाल सांई डेकोरेटर्स, डोरंडा की ओर से किया जा रहा है. इस वर्ष समिति के तरफ से काल्पनिक मंदिर का प्रारूप बनाया जा रहा है.

शिक्षक दिवस पर सरला बिरला विश्वविद्यालय में हुए कार्यक्रम

शुभम संदेश। रांची

रांची। शिक्षक दिवस पर सरला बिरला विश्वविद्यालय में हुए कार्यक्रम में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई. राज्यसभा सांसद डॉ. प्रदीप वर्मा ने अपने संबोधन में शिक्षकों और छात्रों के संबंधों को परिभाषित करते हुए शिक्षकों को अपने छात्रों के ज्ञानवर्धन के मार्ग पर सतत् दस्तक देने का सुझाव दिया. उन्होंने कहा कि शिक्षक बेहतर समय प्रबंधन, चरित्र निर्माण एवं अन्यान्य गुणों के माध्यम से छात्रों को कई राह दिखा सकते हैं. विवि के कुलपति प्रो सी जगनाथन ने शिक्षक दिवस पर गुरुजनों को शुभकामनाएं देते हुए अपने कर्तव्य एवं दायित्व से विद्यार्थियों को संकल्प सिद्धि का मार्ग अपनाने की सलाह दी. कार्यक्रम में एसबीयू के विभिन्न विभागो के शिक्षकों को पुरस्कृत भी किया गया. इस अवसर पर विवि के कुलसचिव प्रो एसबी डांडिन समेत तमाम शिक्षकगण और शिक्षकेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे. विवि के प्रतिकुलाधिपति बिजय कुमार दलान और महानिदेशक प्रो गोपाल पाठक ने शिक्षक दिवस के अवसर पर विवि परिवार को शुभकामनाएं प्रेषित किया है.

इनरव्हील क्लब स्वर्णरेखा की मरीजों की राहत के लिए अच्छी पहल

केसी राय चैरिटेबल ट्रस्ट को स्ट्रेचर-व्हीलचेयर दिए, शिक्षकों को किया गया सम्मानित

शुभम संदेश। रांची

इनरव्हील क्लब स्वर्णरेखा, रांची ने सेवा कार्यों की श्रृंखला में एक और सराहनीय कदम उठाते हुए केसी राय चैरिटेबल ट्रस्ट में मरीजों के लिए स्ट्रेचर और व्हीलचेयर का वितरण किया. इस अवसर पर क्लब की बैठक अध्यक्ष सोमा भादुड़ी की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें चेयरमैन रश्मि गुप्ता ने क्लब के कई नए प्रोजेक्ट्स की भी शुरुआत की. बैठक के उपरांत क्लब की सदस्यों ने डंगराटोली में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया. इसके साथ ही 'अन्नपूर्णा योजना' के तहत जरूरतमंदों को भोजन भी कराया गया. क्लब ने एलईबीबी स्कूल के बच्चों को पठन-पाठन सामग्री वितरित की और छात्राओं के बीच सेनेटरी पैड का वितरण कर स्वास्थ्य जागरूकता का कार्य भी किया. इस अवसर पर क्लब की एडिटर अनिता जायसवाल द्वारा तैयार न्यूजलेटर का विधिवत उद्घाटन भी किया गया.

कार्यक्रम में मौजूद रहीं क्लब की सदस्याएं : शालिनी सिन्हा, निशि श्रीवास्तव, दीपा चौहान, नीता नारायण, नमिता प्रसाद, माला श्रीवास्तव, देवजानी सान्याल, रिंकु बनर्जी, रीता वर्मा, ज्योति तिवारी, प्रिया रॉय, सुषमा पाण्डेय, अंजू सिंह, आभा सिंह, मीना सहाय, रागिनी सिंह, पदमा बांका, ममता नारायण, मनीषा सिंह, अंजू देवी समेत क्लब की अन्य सदस्याएं भी उपस्थित रहीं.

शिक्षक दिवस पर छह शिक्षकों को किया सम्मानित

शिक्षक दिवस के अवसर पर क्लब द्वारा छह शिक्षकों को सम्मानित किया गया. क्लब की सचिव अर्चना त्रिवेदी ने बताया कि यह आयोजन क्लब की स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण और सामाजिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो "रीच आउट फॉर अ बेटर वर्ल्ड" थीम पर आधारित है.

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की झारखंड प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक संपन्न

विवाह से संबंधित निःशुल्क वेबसाइट, संगठन विस्तार और सामाजिक सरोकारों पर मंथन

शुभम संदेश। रांची

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा की झारखंड प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक प्रदेश अध्यक्ष प्रणय कुमार की अध्यक्षता में अशोक नगर स्थित रजलसार भवन में संपन्न हुई. बैठक की शुरुआत भगवान चित्रगुप्त की पूजा, दीप प्रज्वलन से हुईय मौके पर संगीता कुमारी ने सरस्वती वंदना की. सभी आगंतुकों का स्वागत कायस्थ महासभा के रांची जिला अध्यक्ष सह प्रदेश मीडिया प्रभारी शैलेश कुमार सिन्हा ने किया.

विशिष्ट अतिथि एवं झारखंड-ओडिशा प्रभारी अवधेश कुमार श्रीवास्तव ने सामाजिक संगठनों के समन्वय पर जोर दिया. अपने संबोधन में प्रदेश अध्यक्ष प्रणय कुमार ने संगठनात्मक अनुशासन और संवैधानिक पदाधिकारियों के सम्मान की बात कही.हजारीबाग जिला अध्यक्ष दीपक नाथ सहाय ने सेवा कार्यों के विस्तार की जानकारी दी, जबकि धनबाद जिला अध्यक्ष रवि श्रीवास्तव ने विवाह से संबंधित एक निःशुल्क वेबसाइट की शुरुआत की जानकारी दी. देवघर से नवमनोनीत अध्यक्ष अमर कुमार सिन्हा ने संगठन विस्तार की बात कही और खारसावां अध्यक्ष ने मार्गदर्शन की मांग की।

जमशेदपुर जिला अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार सिन्हा ने चल रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी. बैठक में पूर्व डीआईजी दीपक सिन्हा, पूर्व जिला सत्र न्यायाधीश, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रेम कुमार सिन्हा और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कुमार श्रीवास्तव ने भी विचार व्यक्त किए. बैठक में शोभा कुमार, हनी सिन्हा, प्रीति विनोद, किशोर सिन्हा, जय कुमार श्रीवास्तव समेत कई गणमान्य लोग एवं जिला प्रतिनिधि ने अपने विचार रखे.

कुरकुरे उर्फ साहिल हत्याकांड मामले में दो और अपराधी गिरफ्तार

रांची। कुरकुरे उर्फ साहिल हत्याकांड मामले में पुलिस ने दो और अपराधियों को गिरफ्तार किया है. हिंदपीढ़ी का रहनेवाला दोनों अपराधी मो०फैजान अहमद उर्फ लोढ़ा अहमद और अथार तौहीद को पुलिस ने शुक्रवार को जेल भेज दिया. कुरकुरे हत्याकांड मामले में हिंदपीढ़ी पुलिस इससे पहले मुख्य अभियुक्त सहित छह लोगों को जेल भेज चुकी है. मामले में कुल आठ आरोपियों को अबतक जेल भेजा जा चुका है. डीएसपी प्रकाश सोय ने बताया कि कुरकुरे हत्याकांड मामले में अपराधी और अपराधियों को पनाह/संरक्षण देने वालों पर भी कार्रवाई की जा रही है.

सेवानिवृत्त इंजीनियर का मोहल्ले में सरकारी रौब !

गाड़ी में ग्रामीण विकास विभाग का बोर्ड लगा जमा रहे धौंस, पुलिस कर रही जांच

शुभम संदेश। रांची

मोरहाबादी के एदलहातू मोहल्ले में रहने वाले सेवानिवृत्त इंजीनियर अनिल कुमार इन दिनों अपने व्यवहार और सरकारी पहचान के दुरुपयोग को लेकर चर्चा में हैं. अनिल कुमार पर आरोप है कि वे सेवानिवृत्त होने के बावजूद अपनी गाड़ी में झारखंड सरकार के ग्रामीण विकास विभाग का बोर्ड लगाकर मोहल्लेवासियों पर धौंस जमाते हैं. इतना ही नहीं, वे पड़ोसियों से अक्सर विवाद में भी उलझते रहते हैं. शुक्रवार को ऐसे ही एक विवाद के बाद बरियातू पुलिस ने उन्हें पूछताछ के लिए थाना बुलाया. उनके खिलाफ एक पड़ोसी परिवार ने शिकायत दर्ज कराई है. बरियातू थाना प्रभारी मनोज कुमार ने बताया कि अनिल कुमार को पड़ोसियों से झगड़े के कारण थाने में बैठाया गया

है, जबकि उनकी गाड़ी में लगा विभागीय बोर्ड अब जांच का विषय बन गया है. पुलिस सूत्रों के अनुसार, अनिल कुमार जिस गाड़ी से थाना पहुंचे हैं, उस पर "झारखंड सरकार, ग्रामीण विकास विभाग" का बोर्ड लगा हुआ था और साथ ही "अधीक्षण अभियंता" भी लिखा गया था. अब यह जांच के बाद ही स्पष्ट हो पाएगा कि वे वास्तव में सेवानिवृत्त हो चुके हैं या नहीं और क्या वे सरकारी प्रतीकों का अनुचित उपयोग कर रहे हैं. पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है.

महुआडांड़ में पूरे शान-ओ-शौकत से निकाला गया 1500वां जुलूस-ए-मोहम्मदी

ईद मिलादुन्नबी के मौके पर रोशन हुईं गलियां,भाईचारे का दिखा अदभुत नजारा, सुरक्षा व्यवस्था रही सख्त

शुभम संदेश । महुआडांड़ (लातेहार)

महुआडांड़ में शुक्रवार को ईद मिलादुन्नबी के मौके पर पूरे उत्साह और अकीदत के साथ जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाला गया. इस वर्ष यह जुलूस अपने ऐतिहासिक 1500वें साल में प्रवेश करने के कारण और भी खास अंदाज में मनाया गया. जुलूस की शुरुआत सुबह 8 बजे जामा मस्जिद से सलातो-सलाम के साथ की गई. शानदार लिबास और इत्र लगाए हुए अकीदतमंदों की टोलियां जुलूस में शामिल हुईं. जुलूस अम्बांटोली, शहीद चौक, गुरगुटोली, आंबेडकर चौक, गांधी चौक, डिपाटोली, बिरसा मुंडा चौक होते हुए फुलवार बगीचा (आजाद बस्ती) पहुंचा और वहां से वापस जामा मस्जिद लौट कर दुआ और सलाम के साथ समाप्त हुआ. इस जुलूस में जामा मस्जिद और गौसिया मस्जिद के तलबा, अंजुमन कमिटी और बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग शामिल हुए. नारे तकबीर ₹अल्लाहु अकबर₹, ₹या रसूलल्लाह₹, ₹आका की आमद मरहबा₹ जैसे नारों से माहौल इमानी जोश से भर गया. जामा मस्जिद के इमाम मौलाना रेयाज रिज़वी, गौसिया मस्जिद के मोहतमिम मौलाना गुलाम सरवर फैज़ी समेत अन्य उलेमाओं ने हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी पर विस्तार से प्रकाश डाला. उन्होंने बताया कि पैगंबर के आगमन से पूर्व समाज में व्याप्त बुराइयां जैसे कन्या वध, विधवाओं पर अत्याचार और ऊंच-नीच का भेदभाव समाप्त हुआ. हजरत मोहम्मद ने समाज को इंसानियत, भाईचारा और इंसाफ का रास्ता दिखाया. गली-मोहल्लों, मस्जिदों और घरों को झंडियों, परचम और लाइटों से सजाया गया था. अम्बांटोली, गुरगुटोली, डिपाटोली और आजाद मार्केट में आकर्षक स्वागत गेट लगाए गए थे. जगह-जगह लंगर और फल-फ्रूट वितरण की व्यवस्था की गई, जिससे गुजरने वाले हर व्यक्ति को सेवा दी गई. कार्यक्रम में कारी अहमद रज़ा, हाफिज नदीम अख्तर, कारी इकरामूल हक, मौलाना रफिउद्दीन, हाफिज राकिब हुसैन, हाफिज खुर्शीद आलम, इमरान अली, मजूल अंसारी, मजहर खान, सहाबुद्दीन खान, डॉ. जमशेद खान, फहीम खान सहित सैकड़ों अकीदतमंद मौजूद थे. सुरक्षा के मद्देनजर थाना प्रभारी मनोज कुमार के नेतृत्व में पूरे रूट पर पुलिस बल और मजिस्ट्रेट की तैनाती की गई थी. स्वयं थाना प्रभारी पूरे मार्ग पर घूमकर सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी करते रहे. मुस्लिम समुदाय और अंजुमन कमिटी ने प्रशासन की बेहतर व्यवस्था के लिए आभार प्रकट किया.

ईद-ए-मिलादुन्नबी पर निकला जुलूस, मोहब्बत और भाईचारे का दिखा नज़ारा

सतबरवा प्रखंड मुख्यालय सहित आसपास के ग्रामीण इलाकों में शुक्रवार को ईद-ए-मिलादुन्नबी बड़े ही धूमधाम और अकीदत के साथ मनाया गया. सुबह से ही मुस्लिम समुदाय के लोग पारंपरिक परिधानों में सजकर जुलूस-ए-मोहम्मदी में शामिल हुए. बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों ने हाथों में हरे झंडे और तिरंगे थामे "या रसूल अल्लाह" और "मुहम्मद मुस्तफा जिंदाबाद" के नारे लगाए.

जुलूस कस्बे के मुख्य मार्गों से होते हुए चौक-चौराहों से गुजरा. नात-ए-पाक की मधुर आवाज़ से वातावरण गुंजायमान रहा. मस्जिदों और मदरसों

में मिलाद की महफ़िलें सजीं, जहां उलेमाओं ने पैगंबर हजरत मोहम्मद (स.) की शिक्षाओं पर प्रकाश डालते हुए अमन, इंसाफ और भाईचारे का संदेश दिया. जुलूस शांतिपूर्ण रहा और पूरे प्रखंड में सौहार्द का माहौल देखने को मिला. सुरक्षा के लिए थाना प्रभारी विश्वनाथ कुमार राणा के नेतृत्व में पुलिस बल मुस्तैद रहा. इस अवसर पर अजमेर आलम ने कहा कि मिलादुन्नबी का पर्व हमें इंसानियत और एकता का संदेश देता है.

धूमधाम से मनाया गया ईद मिलादुन्नबी, निकाली गई झांकियां

सुभम संदेश । बरवाडीह

शुक्रवार को प्रखंड मुख्यालय में मुस्लिम समुदाय द्वारा पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिन ईद मिलादुन्नबी का पर्व बड़े ही उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया. इस अवसर पर जामा मस्जिद, अहिरपुरवा, छेचा, कुचला सहित विभिन्न मदरसों से आकर्षक झांकियां निकाली गईं.

झांकियों में बड़ी संख्या में पुरुषों के साथ-साथ महिलाएं और बच्चे भी शामिल हुए. जुलूस मस्जिद चौक से निकलकर बस स्टैंड, बाजार होते हुए बीएसएनएल ऑफिस तक पहुंचा,

जहां कार्यक्रम का समापन किया गया.धर्म गुरुओं ने मौके पर हजरत मोहम्मद साहब की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी. कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों के बीच सिरनी का वितरण किया गया.

मौके पर अख्तर खान, मजहर हुसैन, टीकू खान, साबिर अहमद, शौकत अली, फिरोज अहमद, इम्तियाज अहमद, इमरान अंसारी, डॉ. खान समेत कई लोग मौजूद रहे.

भोगु-शंखा रोड निर्माण में अनियमितता, ग्रामीणों का फूटा गुस्सा, प्रशासन को चेताया

डिवाइडर व कनेक्टिंग रोड को लेकर जनसभा में उठी आवाज, आंदोलन की दी गयी चेतावनी

शुभम संदेश । सतबरवा (लातेहार)

भोगु–संखा रोड निर्माण में हो रही अनियमितताओं को लेकर ग्रामीणों में जबरदस्त आक्रोश देखा गया. डिवाइडर की अनदेखी और कनेक्टिंग रोड की मनमानी ढंग से तैयार डीपीआर के खिलाफ शुक्रवार को सतबरवा में एक बड़ी जनसभा आयोजित की गई, जिसमें ग्रामीणों ने राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच) प्रशासन को जमकर घेरा. जनसभा को संबोधित करते हुए इंटक के प्रदेश सचिव विवेकानंद त्रिपाठी ने साफ शब्दों में कहा कि यदि अविलंब निर्माण कार्य में सुधार नहीं किया गया और रैयतों को लंबित मुआवजा भुगतान नहीं हुआ, तो यह आंदोलन एक बड़े जन आंदोलन में तब्दील हो

जाएगा. इसकी पूरी जिम्मेदारी एनएच प्रशासन की होगी. उन्होंने कहा कि जनता की स्पष्ट मांग है कि पंचायत के दोनों ओर बसे गांवों को जोड़ने के लिए डिवाइडर अनिवार्य रूप से बनाया जाए. खासकर चार मुहान लहलहे चौक, जो लेस्लीगंज मुख्य सड़क और भोगु–बारी मुख्य पथ को जोड़ता है, वह अत्यंत व्यस्त मार्ग है, जहां से प्रतिदिन हजारों वाहन और लोग गुजरते हैं. इसके बावजूद एनएच द्वारा यहां कोई डिवाइडर नहीं बनाया गया, जो जन सुरक्षा के साथ खिलवाड़ है. त्रिपाठी ने आरोप लगाया कि एनएच अथॉरिटी ने अन्य जगहों पर मनमर्जी से कनेक्टिंग रोड का डीपीआर तैयार कर दिया है, लेकिन ग्रामीणों की मूलभूत जरूरतों को दरकिनार कर दिया गया है. उन्होंने प्रशासन से मांग की कि डीपीआर में त्वरित संशोधन कर व्यावहारिक और जनहितकारी योजना तैयार की जाए. जनसभा में मौजूद लोगों ने कहा कि यदि प्रशासन ने जनता की मांगों को नजरअंदाज किया तो मजबूरन उन्हें सड़क पर उतरकर आंदोलन करना होगा. ग्रामीणों ने यह भी आरोप लगाया कि मुआवजा वितरण में भेदभाव हो रहा है और प्रभावित रैयतों को अब तक उनका हक नहीं मिल सका है. इस मौके पर कांग्रेसी नेता रविंद्र नाथ तिवारी, अनूप तिवारी, सुभाष तिवारी, राणा सिंह, देवेंद्र सिंह, कामाख्या सिंह, मुन्ना सिंह, सुधीर सिंह, अनिरुद्ध तिवारी, इंद्रमणि तिवारी, प्रवीण तिवारी, जितेंद्र राम, विष्णु चौधरी, शम्भू साव, रिंकू चौधरी, ब्रजेश पांडे सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे.

गढ़वा में विभिन्न स्त्रोतों से मिली सूचनाओं के बाद माझिआंव में बड़ी कार्रवाई

एसडीएम ने रामपुर में अवैध शराब अड्डा ध्वस्त कर नष्ट की 20 क्विंटल अर्धनिर्मित शराब

शुभम संदेश । गढ़वा

सदर अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार ने मझिआंव थाना क्षेत्र के रामपुर गांव में शुक्रवार को औचक छापेमारी कर अवैध शराब निर्माण के एक बड़े अड्डे को ध्वस्त कर दिया. यह अड्डा पहाड़ी तलहटी में स्थित था जहां हर महीने टनों की मात्रा में अवैध शराब बनाई जा रही थी. विभिन्न स्रोतों से मिली सूचनाओं के बाद एसडीएम ने यह कार्रवाई की. बीते बुधवार को "कॉफी विद एसडीएम" कार्यक्रम के दौरान भी कई समाजसेवकों ने अवैध शराब पर कड़ी कार्रवाई की मांग की थी. उन्होंने कहा था कि त्योहारों के दौरान नशाखोरी त्यौहार की खुशियों को खराब कर देती है. इसलिए अवैध शराब के अड्डों को पूरी अनुमंडल सीमा

से समाप्त करना जरूरी है.एसडीएम संजय कुमार ने बताया कि छापेमारी के दौरान गाड़ी को दूर खड़ा करना पड़ा और संभवतः इसी वजह से शराब कारोबारियों को भनक लग गई, जो मौके से फरार हो गए. स्थानीय लोगों से मिली जानकारी के अनुसार, यह भट्ठियां ओमप्रकाश, अखिलेश और रामजीवन के संयुक्त संचालक हैं. मौके पर पुलिस और उत्पाद विभाग के अधिकारियों की टीम मौजूद थी. एसडीएम ने इन तीनों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई का आदेश दिया है. छापेमारी के दौरान झाड़ियों के बीच जलती हुई दो भट्टियां मिलीं, जिनमें से एक में शराब बन रही थी. मौके पर 20 क्विंटल अर्ध निर्मित शराब के साथ 12 ड्रम और अन्य उपकरण भी जब्त किए गए. सभी शराब को मिट्टी और कीचड़ में बहाकर नष्ट कर दिया गया. खाली ड्रमों को इकट्ठा कर भट्ठी में जला दिया गया. इतनी बड़ी मात्रा में शराब का खुलेआम निर्माण होना प्रशासन के लिए चिंता का विषय है.

एसडीएम ने कहा कि अवैध शराब निर्माण एवं विक्रय न केवल कानून के खिलाफ है, बल्कि समाज के लिए भी खतरनाक है. यदि भविष्य में कहीं भी ऐसे अड्डे मिलते हैं तो उत्पाद विभाग के साथ-साथ संबंधित थाना प्रभारियों की भी जिम्मेदारी तय की जाएगी. गढ़वा जिले में अब तक कई बार इस तरह की कार्रवाई की जा चुकी है और यह अभियान जारी रहेगा. संजय कुमार ने स्थानीय नागरिकों से अपील की है कि वे अवैध शराब, गांजा, चरस और अन्य नशीली वस्तुओं के अड्डों की जानकारी तुरंत पुलिस या उत्पाद विभाग को दें। सूचना देने वालों की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी।

गढ़वा : भाजपा ने बताया जीएसटी रिफॉर्म 2.0 को दिवाली का तोहफा

गढ़वा । भारतीय जनता पार्टी, गढ़वा इकाई द्वारा जीएसटी रिफॉर्म 2.0 को लेकर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई. जिलाध्यक्ष ठाकुर प्रसाद महतो ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने देशवासियों को दिवाली का बड़ा तोहफा दिया है. घरेलू उपयोग के 90% सामानों पर जीएसटी दर शून्य कर दी गई है जबकि अन्य पर 5% की दर लागू की गई है. युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष मुन्ना तिवारी ने बताया कि शिक्षा से जुड़े सभी वस्तुएं टैक्स फ्री हो गई हैं, वहीं हेल्थ और लाइफ इंश्योरेंस को टैक्स मुक्त कर दिया गया है. भाजपा नेता डॉ. पातंजलि कुमार केशरी ने कहा कि जीवन रक्षक दवाएं अब टैक्स फ्री हैं, अन्य दवाओं व मेडिकल उपकरणों पर न्यूनतम टैक्स लगाया गया है.

स्कूल में शिक्षक दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया

हुसैनाबाद । गणेशपुरी स्थित ज्ञानोदय पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. इस अवसर पर स्कूल के निदेशक मनोज कुमार प्रजापति ने कहा कि शिक्षा के बिना जीवन को सरल और सही दिशा में ले जाना संभव नहीं है. उन्होंने बताया कि मोबाइल व कंप्यूटर जानकारी तो दे सकते हैं, लेकिन सही-गलत में फर्क, नैतिक मूल्य और मानवता का पाठ सिर्फ एक शिक्षक ही पढ़ा सकता है.

झामुमो किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष सुरेश गंझू की सर्पदंश से मौत, शोक

लातेहार। झामुमो किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष सुरेश गंझू का गुरुवार देर रात सर्पदंश से निधन हो गया. उन्हें बुधवार को एक जहरीले सांप ने डस लिया था, जिसके बाद पहले लातेहार सदर अस्पताल और फिर रांची के रिम्स में इलाज के लिए भर्ती कराया गया. इलाज के दौरान गुरुवार रात उनकी मौत हो गई. दिवंगत सुरेश गंझू चंदवा प्रखंड अध्यक्ष के रूप में भी सक्रिय भूमिका निभा चुके थे. उनके निधन पर झामुमो के केंद्रीय उपाध्यक्ष सह पूर्व मंत्री बैद्यनाथ राम और झामुमो जिला अध्यक्ष लाल मोतीनाथ शाहदेव समेत पार्टी नेताओं ने गहरा शोक व्यक्त किया है. नेताओं ने कहा कि सुरेश गंझू एक समर्पित और जुझारू कार्यकर्ता थे, जिनकी कमी लंबे समय तक महसूस की जाएगी.

नाराजगी | छिपादोहर डाकघर से पांच दिनों से पार्सल सेवा ठप

पोस्ट मास्टर के असंवेदनशील रवैये से गुस्साए ग्रामीण

शुभम संदेश । लातेहार

डाक महाप्रबंधक से की कार्रवाई की मांग

जिले के छिपादोहर एसओ डाकघर से बीते पांच दिनों से डाक और पार्सल सेवा पूरी तरह से ठप पड़ी हुई है. इसका असर छिपादोहर से जुड़े गारू, करवाई, कोटाम, रुद, बारेसांड, मुंडू, लात, नावाडीह, केड, मारोमार जैसे एक दर्जन से अधिक सुदूरवर्ती गांवों पर पड़ रहा है, जहां डाक की चिट्ठियां और पार्सल नहीं पहुंच पा रहे हैं. ग्रामीणों को जरूरी दस्तावेज और सामग्री के लिए डाकघरों का बार-बार चक्कर लगाना पड़ रहा है, लेकिन कोई समाधान नहीं मिल रहा है.

ग्रामीण सुरेश कुमार, रमेश कुमार, संतोष कुमार सहित अन्य लोगों ने बताया कि उन्होंने डाक के माध्यम से आवश्यक कागजात मंगवाए थे,

लेकिन बीते पांच दिनों से कोई भी डाक या पार्सल उनके गांव के डाकघर में नहीं पहुंचा है. इससे वे बेहद परेशान हैं. कई लोगों को बैंक, बीमा, पेंशन और छात्रवृत्ति से संबंधित दस्तावेज समय पर नहीं मिल पाने के कारण परेशानी झेलनी पड़ रही है.

स्थानीय डाक कर्मचारियों का कहना है कि डाक सेवा की यह समस्या छिपादोहर एसओ डाकघर से ही शुरू हो रही है. वहीं ग्रामीणों ने बताया कि यह कोई नई बात नहीं है, आए दिन छिपादोहर डाकघर में लापरवाही देखने को मिलती है. कई बार जरूरी चिट्ठियां और पार्सल समय पर नहीं पहुंचते, जिससे उन्हें आर्थिक और सामाजिक स्तर पर नुकसान उठाना पड़ता है. इस संबंध में जब छिपादोहर डाकघर के पोस्ट मास्टर से पूछताछ की गई तो उन्होंने बेहद असंवेदनशील रवैया अपनाते हुए कहा, ₹टेक्निकल समस्या के कारण डाक सेवा में विलंब हो रहा है, जहां शिकायत करना है कर दीजिए.₹ पोस्ट मास्टर की यह प्रतिक्रिया ग्रामीणों को और भी अधिक आहत कर गई. गांवों के लोग अब झारखंड के डाक महाप्रबंधक से इस मामले में हस्तक्षेप करने और लापरवाह डाक कर्मियों पर कार्रवाई करने की मांग कर रहे हैं. ग्रामीणों का कहना है कि जब तक डाक सेवा को दुरुस्त नहीं किया जाता, तब तक हजारों लोगों को परेशानी होती रहेगी.

लातेहार जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में डाक सेवा आम नागरिकों के लिए जीवन रेखा के समान है, और अगर यही सेवा ठप रहेगी तो लोगों का सरकार पर से भरोसा उठ जाएगा. ग्रामीणों ने जल्द से जल्द डाक सेवा बहाल करने की मांग की है.

शहीद सुनील राम को नम आंखों से अंतिम विदाई, अमर रहे के नारों से गूंज उठा परता गांव

शुभम संदेश। हुसैनाबाद (पलामू)

परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल, बच्चों की सिसकियों ने झकझोरा

पलामू जिले के हैदरनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत परता गांव निवासी बहादुर सिपाही सुनील राम को शुक्रवार को पूरे राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई. गुरुवार देर रात हरियाणा से उनके माता-पिता के पहुंचने के बाद दाह संस्कार की प्रक्रिया शुरू की गई. गांव से लेकर श्मशान घाट तक गम और गर्व का माहौल था. लोग शहीद सुनील राम अमर रहें के नारों से गगनभेदी जयघोष कर रहे थे. गुरुवार को जब शहीद का पार्थिव शरीर हैदरनगर पहुंचा, तो हजारों ग्रामीणों की भीड़ उमड़ पड़ी. महिला, पुरुष, बच्चे और बुजुर्ग – सभी एक झलक पाने को आतुर थे. परता गांव के रास्तों पर जगह-जगह पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई. शव को उनके पैतृक आवास पर अंतिम दर्शन के लिए रखा गया था.

पुलिस अधिकारियों ने दी कंधा, साथी जवानों ने दी सलामी : शवयात्रा सुबह 9.30 बजे परता स्थित आवास से सोन नदी तट की ओर रवाना हुई. फूलों से सजी अर्थी को एसपी अभियान राकेश कुमार, एसडीपीओ एस मोहम्मद याकूब, थाना प्रभारी अफजल अंसारी, थाना प्रभारी सोनू चौधरी समेत अन्य अधिकारियों ने कंधा दिया.

विधायक और प्रशासनिक अधिकारियों ने दी श्रद्धांजलि : हुसैनाबाद विधायक और राजद के संजय कुमार सिंह यादव ने मौके पर पहुंचकर गहरी संवेदना जताई.

राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति : अंतिम यात्रा में भाजपा नेता कामेश्वर कुशवाहा, विनोद पांडेय, जेएमएम नेता रामप्रवेश सिंह, विवेक कुमार सिंह, मुखिया कौशल किशोर, गुप्तेश्वर पांडेय, जितेंद्र पासवान आदि शामिल हुए. सभी ने नम आंखों से शहीद को अंतिम विदाई दी.

सांसद मनीष जायसवाल ने हजारीबाग प्रेस क्लब के नए भवन का उद्घाटन किया

निष्पक्ष और सशक्त पत्रकारिता को नई दिशा मिलेगी : जायसवाल

सुभम संदेश । हजारीबाग

हजारीबाग प्रेस क्लब के नवनिर्मित भवन का शुक्रवार को पूरे विधि-विधान और गरिमामयी माहौल में भव्य उद्घाटन किया गया. सुबह सत्यनारायण भगवान की पूजा-अर्चना से कार्यक्रम की शुरुआत हुई, जिसमें क्लब के संरक्षक कृष्ण गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी यजमान बनीं. पूजा के बाद जिले भर से पत्रकार और अतिथियों का आगमन हुआ और दोपहर 12 बजे उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह, सदर विधायक प्रदीप प्रसाद सहित अन्य गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ किया गया. इसके बाद हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल, सदर विधायक प्रदीप प्रसाद एवं पूर्व सांसद भुवनेश्वर मेहता ने संयुक्त रूप से फीता काटकर प्रेस क्लब के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया. सभी अतिथियों ने भवन का अवलोकन कर उसकी प्रशंसा की. इस अवसर पर बरही विधायक मनोज कुमार यादव, अगरतल्ला विधायक सुदीप राय बर्मन, जिला परिषद अध्यक्ष उमेश मेहता, कांग्रेस कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष जलेश्वर महतो, समाजसेवी कमल नयन सिंह, पूर्व उपमहापौर आनंद देव, भाजपा नेता उदयभान नारायण सिंह, कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे. सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और इस नवनिर्मित भवन के मिलने से पत्रकारों को बेहतर कार्यस्थल मिलेगा. इससे जिले में निष्पक्ष और सशक्त पत्रकारिता को नई दिशा मिलेगी. उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह ने पत्रकारों को समाज और प्रशासन के बीच सेतु बताते हुए कहा कि यह भवन उन्हें रचनात्मक पत्रकारिता का सशक्त मंच प्रदान करेगा. सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने बताया कि प्रेस क्लब का यह भवन पत्रकारों की वर्षों से चली आ रही मांग को पूरा करता है.

बरही विधायक मनोज यादव ने पत्रकारों को लोकतंत्र का प्रहरी बताते हुए कहा कि उन्हें सशक्त बनाने के लिए ऐसी सुविधाएं आवश्यक हैं. कार्यक्रम में आर्ट कन्या गुरुकुल की बालिकाओं ने मंत्रोच्चारण कर अतिथियों का तिलक व स्वागत किया. मंच संचालन विस्मय अलंकार और दीपक कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से किया. क्लब अध्यक्ष मुरारी सिंह ने स्वागत भाषण दिया और संरक्षक कृष्ण गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया. सभी अतिथियों को मोमेंटो, पौधा और शॉल भेंटकर सम्मानित किया गया. क्लब अध्यक्ष मुरारी सिंह और सचिव विस्मय अलंकार ने कहा कि यह भवन पत्रकारों के सामूहिक प्रयास और सहयोग का परिणाम है. इस नए भवन से हजारीबाग के पत्रकारों को मजबूती मिलेगी और वे और अधिक स्वतंत्र, निष्पक्ष तथा जिम्मेदार पत्रकारिता कर पाएंगे. उन्होंने सभी जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों और समाज के शुभचिंतकों का आभार जताया, जिनके सहयोग से यह भवन बन सका.

नये कार्यालय में प्रवेश व सम्मान समारोह आयोजित

हजारीबाग । नवाबगंज में स्थित झारखंड राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ के भवन का जीर्णोद्धार कार्य पूरा होने पर नूतन कार्यालय प्रवेश और शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए. उन्होंने समारोह में भाग लेकर 95 शिक्षकों को लैपटॉप बैग भेंट कर सम्मानित किया. सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि शिक्षक समाज में अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले महत्वपूर्ण स्तंभ हैं. शिक्षकों को सम्मानित करते हुए वह स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं. उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे अपने समर्पित प्रयासों से भारत को शत-प्रतिशत साक्षर बनाएं. यही मार्ग भारत को एक विकासशील देश से विकसित देश बनने में मदद करेगा और अंततः विश्वगुरु बनने की दिशा में देश को अग्रसर करेगा.

कुलाधिपति के कहानी संग्रह 'ग़रीबनवाज़' का लोकार्पण

हजारीबाग । आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग के कुलाधिपति और वरिष्ठ कवि-कथाकार संतोष चौबे के ताजा कहानी संग्रह 'ग़रीबनवाज़' का लोकार्पण एवं पुस्तक चर्चा साहित्य अकादमी, दिल्ली के सभागार में भव्य रूप से आयोजित किया गया. यह कार्यक्रम वनमाली सृजन पीठ दिल्ली एवं राजकमल प्रकाशन समूह के संयुक्त तत्वावधान में हुआ. कुलसचिव डॉ. मुनीष गोविंद ने बताया कि संतोष चौबे के छः कहानी संग्रह पहले भी प्रकाशित हो चुके हैं और उनकी कहानियां खूब चर्चित रही हैं. लोकार्पण ममता कालिया के सान्निध्य में हुआ, जबकि वरिष्ठ रचनाकार जानकी प्रसाद शर्मा अध्यक्ष थे. इस अवसर पर संतोष चौबे ने अपनी कहानी 'ग़रीबनवाज़' का पाठ किया और कहा कि लेखक की पवित्रता और भोलापन हमेशा बरकरार रहना चाहिए. उन्होंने अपनी रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कहानी की पठनीयता और पहली पंक्ति से पाठक को बांधना उनका मुख्य उद्देश्य है. सुप्रसिद्ध कथाकार ममता कालिया ने 'ग़रीबनवाज़' को यथार्थवादी कहानी बताते हुए इसके सामाजिक संदर्भों और श्रमजीवी तथा वर्चस्ववादी वर्ग के द्वंद को उजागर किया.

विधायक जयराम को शॉल ओढ़ाकर जताया आभार

विष्णुगढ़ । विष्णुगढ़ प्रखंड के कोनार डैम के विस्थापितों ने झारखंड राज्य विस्थापन एवं पुनर्वास आयोग तथा झारखंड प्रवासी मजदूर आयोग के गठन के लिए डुमरी विधायक टाइगर जयराम कुमार महतो का हृदय से आभार व्यक्त किया. उन्होंने विधायक को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया और इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए धन्यवाद दिया. पार्टी की ओर से केंद्रीय वरीय उपाध्यक्ष दिनेश साहू और केंद्रीय संगठन महासचिव महेंद्र प्रसाद महतो उर्फ माही पटेल ने कहा कि किसी विधायक का सबसे बड़ा दायित्व होता है जनता की समस्याओं को विधानसभा में मजबूती से उठाना. टाइगर जयराम महतो ने विस्थापितों और प्रवासी मजदूरों के मुद्दों को गंभीरता और तार्किक तरीके से उठाया, जिससे राज्य सरकार ने इन दोनों आयोगों के गठन को मंजूरी दी है.

जोरदाग में गणपति बप्पा का धूमधाम से विसर्जन

केरेडारी । सीसीएल के चंद्रगुप्त कोल परियोजना के एमडीओ सुशी इंफ्रा कंपनी ने आगर टोला जोरदाग में भगवान गणेश की प्रतिमा का शुक्रवार को भव्य विसर्जन किया. कंपनी के जीएम आरएस यादव सहित सैकड़ों श्रद्धालुओं ने बैंड बाजा और जयकारों के बीच गणपति बप्पा का स्वागत किया. 10 दिन तक चले गणपति महोत्सव में श्रमिक और ग्रामीणों ने मिलकर उत्साहपूर्वक भाग लिया। आरएस यादव ने कहा कि यह आयोजन भाईचारे और सामंजस्य का प्रतीक है और कंपनी स्थानीय लोगों के साथ इसी सहयोग को आगे भी बनाए रखेगी. इस अवसर पर कोलेश्वर महतो, अनिल मुंडा, अक्षय पासवान समेत कई गणमान्य व्यक्ति एवं सुशी इंफ्रा कंपनी के कर्मी मौजूद थे। पूरे क्षेत्र में गणेशोत्सव की खुशियाँ और आस्था का माहौल छाया रहा.

1500वां जश्न-ए-ईद मिलादुन्नबी पर निकाली गई जुलूस-ए-मोहम्मदी

उल्मा-ए-अहले सुन्नत ने दिया इंसानियत व भाईचारे का संदेश

शुभम संदेश । हजारीबाग

1500वें जश्न-ए-ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर शुक्रवार को हजारीबाग शहर में तंजीम उल्मा-ए-अहले सुन्नत एजुकेशनल एंड वेलफेयर ट्रस्ट के तत्वावधान में ऐतिहासिक जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाला गया. इसमें शहर सहित आसपास के इलाकों से लगभग 130 जुलूस शामिल हुए. जुलूस शांति, भाईचारे और मोहब्बत का पैगाम देता हुआ शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरा.शहर भर में "सरकार की आमद मरहबा", "नारे तकबीर", "नारे रिसालत" जैसे नारों से माहौल गुंजायमान रहा. जुलूस में शामिल लोग इस्लामी परिधान, उमामा शरीफ और झंडों के साथ नबी के पैगाम को फैला रहे थे.

इस दौरान मुफ्ती महबूब आलम मिस्बाही, मुफ्ती अब्दुल जलील सादी, मौलाना कामरान हसीब समेत सैकड़ों उल्मा-ए-अहले सुन्नत ने नबी की अजमतों का बयान किया. उन्होंने कहा कि पैगंबर मोहम्मद (स.अ.व) सारी दुनिया के लिए रहमत बनकर आए और उन्होंने इंसानियत, न्याय, महिलाओं के अधिकार व भाईचारे को बढ़ावा दिया.

तंजीम और सामाजिक संगठनों द्वारा जुलूस का जगह-जगह स्वागत किया गया. लंगर, पानी, शरबत की व्यवस्था की गई थी. यह आयोजन धर्म, सद्भाव और अमन की मिसाल बनकर उभरा.

प्रखंड में धूमधाम से मनाई गई ईद मिलाद-उन-नबी, निकाला गया भव्य जुलूस :

सतगावां (कोडरमा) । प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों में शुक्रवार को पैगम्बर हजरत मोहम्मद के जन्मदिन ईद मिलाद-उन-नबी का पर्व बड़े हर्षोल्लास और आस्था के साथ मनाया गया. इस अवसर पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने बासोडीह जामा मस्जिद से शुरू होकर बस स्टैंड तक भव्य जुलूस निकाला. जुलूस में लोगों ने नारे लगाकर खुशियां मनाईं. समाजसेवी हाजी अजहर रब्बानी ने बताया कि यह पर्व इस्लाम धर्म में विशेष महत्व रखता है और समाजसेवा व गरीबों की मदद के लिए प्रेरित करता है. ड्यूटी में तैनात एसआई रौशन कुमार पासवान अपने दल के साथ सुरक्षा व्यवस्था में जुटे रहे.

एपेक्स पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस पर भावुक हुआ माहौल

रामगढ़ । मारंगमरचा स्थित एपेक्स पब्लिक स्कूल में शुक्रवार को शिक्षक दिवस उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। संस्थापक बाबूराम महतो और निदेशक भागीरथ कुमार ने डॉ. राधाकृष्णन की तस्वीर पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। बच्चों ने केक काटकर, उपहार देकर और सुंदर शुभकामना कार्ड भेंट कर अपने शिक्षकों को सम्मानित किया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने पूरे माहौल को आनंदमय बना दिया. निदेशक भागीरथ कुमार ने कहा कि शिक्षक माता-पिता के बाद बच्चों के सच्चे मार्गदर्शक होते हैं। उपनिदेशक ने छात्र-शिक्षक के बीच आपसी विश्वास को आवश्यक बताया। विद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा शिक्षकों को प्रशस्ति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। समारोह में छात्र-छात्राएँ, शिक्षकगण व समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

साईं पैलेस में बिना कमर्शियल कनेक्शन के वर्षों से बिजली चोरी

बिजली विभाग की लापरवाही या मिलीभगत?

शुभम संदेश । इटखोरी

प्रखंड में बिजली विभाग की कार्यशैली एक बार फिर सवालों के घेरे में आ गई है. सोशल मीडिया पर वायरल एक ऑडियो और खबर के बाद बिजली विभाग की पोल खुलती नजर आई, जब यह सामने आया कि मुख्य पथ पर स्थित साईं मैरिज पैलेस पिछले 10 वर्षों से बिना कमर्शियल कनेक्शन के बिजली का उपयोग कर रहा था. इस होटल में घरेलू कनेक्शन के सहारे व्यवसायिक गतिविधियां संचालित हो रही थीं, जिससे विभाग को लाखों रुपये का नुकसान हुआ.

साईं पैलेस, जो इटखोरी मुख्यालय से महज 1 किलोमीटर की दूरी पर है, वहां शादी-विवाह जैसे बड़े कार्यक्रम आयोजित होते हैं, जहां हर बुकिंग में लाखों रुपये का लेनदेन होता है. ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि जब छोटे-छोटे गांवों में बिजली चोरी को लेकर एफआर दर्ज की जाती है, तो मुख्य सड़क पर वर्षों से संचालित इस होटल पर कार्रवाई क्यों नहीं हुई? मामले के उजागर होने के बाद जब पत्रकारों ने प्रभारी जेई तरुण कुमार से संपर्क किया, तो उन्होंने पहले स्वीकार किया कि होटल में कमर्शियल कनेक्शन नहीं है. परंतु अगली सुबह जब विभाग की टीम रेड करने पहुंची, तो वहां कनेक्शन पहले ही हटा हुआ पाया गया.

होटल परिसर में ट्रांसफार्मर से सीधे कनेक्शन लिए जाने के भी साक्ष्य मिले. इस पर जेई ने कहा कि ₹चूक हुई है₹, और यह भी स्वीकार किया कि उन्हें पहले से इसकी जानकारी थी. यह बयान और कार्यशैली स्पष्ट संकेत देते हैं कि विभाग की ओर से जानबूझकर इस अवैध कृत्य को नजरअंदाज किया गया. शल मीडिया पर खबर वायरल होते ही होटल संचालक संतोष राम ने रातों-रात बिजली कनेक्शन हटा दिया, जो इस बात को सिद्ध करता है कि विभाग की मिलीभगत से यह चोरी वर्षों तक चलती रही. इस पूरे मामले पर इटखोरी के भाजपा नेता सतीश सिंह ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि ₹यह जघन्य अपराध बिजली विभाग के संरक्षण में होता रहा है. अब समय आ गया है कि विभागीय अधिकारी संज्ञान लें और दोषियों पर सख्त कार्रवाई करें. अब देखना यह है कि क्या विभाग साईं पैलेस पर कोई कानूनी कार्रवाई करता है या फिर यह मामला भी फाइलों में दब कर रह जाएगा. लेकिन एक बात तो तय है. इस घटना ने बिजली विभाग की कार्यशैली, निष्पक्षता और ईमानदारी पर गंभीर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर दिया है.

तिलैया डैम में नहाने के दौरान 16 वर्षीय युवक की डूबने से मौत

कोडरमा । चंदवारा थाना क्षेत्र के खांडी गांव स्थित तिलैया डैम में नहाने के दौरान 16 वर्षीय शेरु कुमार की मौत हो गई. शेरु अपने दोस्तों के साथ डैम में नहाने गया था, जहां दोस्तों के कहने पर वह इंटक वेल से कूद गया, हालांकि उसे तैरना नहीं आता था. गहरे पानी में डूबने के बाद उसके साथी मौके से फरार हो गए. ग्रामीणों और परिवार वालों ने डैम में रस्सी व झगड़ की मदद से उसकी खोजबीन की और शव निकाला. परिजन शेरु को सदर अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया. शेरु कक्षा 10वीं का छात्र था और उसके पिता किसान हैं. उसकी मौत से गांव में मातम छा गया है और परिजन गहरे सदमे में हैं. पुलिस मामले की जांच कर रही है.

सराहनीय केवलिया पक्की सड़क से ननई खुर्द तक गड्ढे ही गड्ढे थे, चलना था मुश्किल

मुखिया ने कराई दो किमी कच्ची सड़क की मरम्मत

शुभम संदेश । चतरा

ग्रामीणों ने की सराहना, पक्कीकरण की मांग जोर पकड़ने लगी

चतरा जिला के प्रतापपुर प्रखंड अंतर्गत गजवा पंचायत की मुखिया पूनम कुमारी ने एक मिसाल कायम करते हुए केवलिया पक्की सड़क से ननई खुर्द तक की लगभग दो किलोमीटर लंबी कच्ची सड़क की मरम्मत अपने निजी खर्च से कराई है। बारिश के मौसम में कीचड़ और गड्ढों से भरी इस सड़क से गुजरना ग्रामीणों के लिए बड़ी समस्या बन गया था। अब सड़क की मरम्मत होने से लोगों को काफी राहत मिली है।

मुखिया प्रतिनिधि अशोक यादव ने बताया कि इस सड़क की हालत दशकों से बेहद खराब है। कई बार ग्रामसभा से प्रस्ताव पास कर जिला प्रशासन को भेजा गया, लेकिन अब तक पक्कीकरण की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। उन्होंने कहा कि यदि यह सड़क केवलिया से ननई खुर्द होते हुए मझिगवां, बिलासपुर, सिदकी, बारवाकोचवा और छोटकी ननई जैसे गांवों तक पक्की बन जाए तो हजारों लोगों को आवागमन में बड़ी सुविधा होगी। मुखिया पूनम कुमारी ने बताया कि यह सड़क करीब चार किलोमीटर लंबी है और इसे प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के तहत बनवाने की आवश्यकता है। इसके लिए जल्द ही ग्रामसभा से प्रस्ताव पास कर उपायुक्त को भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि जब तक पक्की सड़क की स्वीकृति नहीं मिलती, तब तक पंचायत क्षेत्र की अन्य कच्ची सड़कों को भी मरम्मत कर चलने योग्य बनाया जाएगा।

स्थानीय लोगों ने मुखिया की इस पहल की प्रशंसा करते हुए प्रशासन से सड़क के पक्कीकरण की मांग तेज कर दी है। उनका कहना है कि इस सड़क का पक्का निर्माण न होने से बच्चों की पढ़ाई, वैवाहिक कार्यक्रम और आपात स्थिति में आवाजाही में काफी दिक्कतें आती हैं। ग्रामीणों को अब उम्मीद है कि प्रशासन जल्द उनकी सुनवाई करेगा.

एक नजर

फाइलेरिया उन्मूलन : स्वस्थ झारखंड के संकल्प की मिसाल

हजारीबाग । झारखंड सरकार के स्वास्थ्य विभाग और जिला प्रशासन द्वारा फाइलेरिया उन्मूलन अभियान (आईडीए राउंड) जोर-शोर से चलाया जा रहा है. यह अभियान 10 अगस्त से झारखंड के 9 जिलों में एक साथ शुरू किया गया था, जिसमें हजारीबाग भी प्रमुख रूप से शामिल है. इस अभियान के तहत स्वास्थ्य कर्मी घर-घर जाकर फाइलेरिया रोधी तीन दवाएं डीईसी, अल्बेंडाजोल और आइवरमेक्टिन पात्र लाभुकों को मुफ्त में दे रहे हैं. ये दवाएं पूरी तरह सुरक्षित और प्रभावी हैं. जिला मलेरिया पदाधिकारी डॉ. कपिलमुनि प्रसाद ने बताया कि हजारीबाग जिले के 16 चिन्हित प्रखंडों की लगभग 19 लाख 76 हजार आबादी को इस अभियान का लक्ष्य बनाया गया है. अब तक लगभग 18 लाख 87 हजार 27 लोगों को दवाएं खिलाई जा चुकी हैं. दवा वितरण की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए नियमित समीक्षा बैठकें आयोजित की जा रही हैं और सूक्ष्म कार्ययोजनाओं के तहत प्रखंडवार गतिविधियां संचालित की जा रही हैं.

गैस गोदाम चोरी कांड का किया खुलासा, तीन गिरफ्तार

चौपारण । सिंघरावां स्थित सत्यनाम भारत गैस एजेंसी में 4 अगस्त को हुई चोरी का पुलिस ने गुरुवार को सफल उद्भेदन कर लिया. थाना प्रभारी सरोज सिंह चौधरी ने बताया कि मामले में तीन आरोपियों ओम कुमार, इलियास अंसारी और विजय गुप्ता को गिरफ्तार किया गया है. इनकी निशानदेही पर 14.2 किलो के छह गैस सिलेंडर बरामद किए गए हैं. शेष चोरी गई वस्तुओं की बरामदगी के लिए छापामारी जारी है. मामला चौपारण थाना में 7 अगस्त को दर्ज हुआ था. पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर एसडीपीओ अजीत कुमार विमल के नेतृत्व में विशेष टीम बनाई गई थी. गिरफ्तार आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है.

कोयला तस्करी करते दो गिरफ्तार, पिकअप वाहन जब्त

चौपारण । गुप्त सूचना के आधार पर चौपारण पुलिस ने चोरदाहा चेकपोस्ट से अवैध कोयला लदे पिकअप वाहन को जब्त करते हुए दो तस्करों को गिरफ्तार किया. पकड़े गए आरोपियों में बिहार भोजपुर के विकास कुमार और धनबाद के विमलेश कुमार शामिल हैं. पिकअप वाहन (संख्या जेएच 10 सी डब्लयू 5745) में 50 बोरी कोयला लदा था. पुलिस ने चौपारण थाना में कांड संख्या 245/25 दर्ज कर दोनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया है. यह कार्रवाई एसडीपीओ अजीत कुमार विमल के नेतृत्व में की गई, जिससे क्षेत्र में कोयला तस्करों में हड़कंप मच गया है.

आदिवासी परना जतरा मेला का हुआ उद्घाटन

हजारीबाग । कटकमदाग प्रखंड के बेस पंचायत स्थित ग्राम हारम में आदिवासी परना जतरा मेला का फीता पूर्व सदर विधानसभा प्रत्याशी मुन्ना सिंह ने काटकर उद्घाटन किया. मुन्ना सिंह ने कहा कि आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपरा और त्यौहार हमारी असली पहचान हैं और इन्हें संरक्षित कर आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना आवश्यक है. उन्होंने मेलों में सक्रिय भागीदारी की अपील की ताकि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक जागरूकता बढ़े. राष्ट्रीय आदिवासी छात्र संघ के राष्ट्रीय महासचिव विक्की कुमार ने भी आदिवासी संस्कृति के प्रचार-प्रसार में मेलों की भूमिका पर जोर दिया. इस मौके पर हजारीबाग जिला कांग्रेस के कई नेता, स्थानीय गणमान्य और मेला समिति के सदस्य उपस्थित थे. मेले ने आदिवासी समुदाय के बीच भाईचारे और सांस्कृतिक चेतना को मजबूत किया.

अकीदत और उल्लास के साथ मनाई गई ईद मिलादुन्नबी

मरकच्चो (कोडरमा) । प्रखंड क्षेत्र में शुक्रवार को ईद मिलादुन्नबी का पर्व बड़े अकीदत और उल्लास के साथ मनाया गया. "रसूल की आमद मरहबा" जैसे नातिया कलामों के बीच जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या में अकीदतमंद शामिल हुए. मरकच्चो, नादकरी, महुँगान्य, दरदाही, पूर्णनगर, मंझलानगर, ताराटांड़, देवीपुर और विंडोमोह से जुलूस निकलकर कर्बला मैदान पहुंचा. पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान में नात पाक और दुरूदो सलाम पढ़े गए. कर्बला मैदान में आयोजित मिलाद कार्यक्रम में बच्चों और उलेमाओं ने पैगंबर की सीरत पर रोशनी डाली और उन्हें इंसानियत का सबसे बड़ा मार्गदर्शक बताया.

हंटरगंज के शिक्षक विनय सिंह राज्य स्तर पर सम्मानित

हंटरगंज (चतरा) । राम नारायण प्लस टू उच्च विद्यालय के शिक्षक विनय कुमार सिंह को झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (जेसीईआरटी) द्वारा राज्य स्तर पर शिक्षक दिवस पर सम्मानित किया गया. विनय कुमार सिंह ने राज्य स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण के लिए पुस्तकालय विषय पर मॉड्यूल तैयार किया था, जिसकी व्यापक सराहना हुई. इस सम्मान से हंटरगंज प्रखंड और विद्यालय परिवार में खुशी और गर्व का माहौल है. विद्यालय प्राचार्य अनूप कुमार ने उन्हें बधाई दी और सभी शिक्षकों को निष्ठा से कार्य करने का संदेश दिया. शिक्षक विनय सिंह ने कहा कि धैर्य और मेहनत से सफलता अवश्य मिलती है और यह सम्मान उन्हें और बेहतर कार्य के लिए प्रेरित करेगा.

न्यायाधीश ने बरही के जलाशय में केज कल्चर का निरीक्षण किया

हजारीबाग । प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश रणजीत कुमार और उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह ने बरही क्षेत्र के जलाशय में मत्स्य पालन के लिए स्थापित केज कल्चर का निरीक्षण किया. निरीक्षण के दौरान उन्होंने मत्स्य पालकों से बातचीत कर उनकी कार्यशैली और अनुभवों को जाना. न्यायाधीश ने केज कल्चर पद्धति की सराहना करते हुए इसे ग्रामीण आजीविका संवर्धन और मत्स्य उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण बताया. उन्होंने कहा कि इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी. निरीक्षण के दौरान न्यायाधीश ने मछलियों को दाना खिलाया और मत्स्य पालकों को उनके कार्य में निरंतर प्रगति की शुभकामनाएं दीं. यह पहल ग्रामीण विकास के लिए अहम साबित हो रही है.

परसाबाद रेलवे फाटक के पास ट्रैक पर शव बरामद

जयनगर (कोडरमा) । धनबाद-गया रेलखंड के परसाबाद रेलवे फाटक के समीप शुक्रवार सुबह एक व्यक्ति का क्षत-विक्षत शव रेलवे ट्रैक पर पाया गया. आसपास के ग्रामीणों ने शव देखा तो तुरंत परसाबाद आरपीएफ को सूचना दी. आरपीएफ के जवान मौके पर पहुंचकर जांच-पड़ताल कर रहे हैं. आरपीएफ प्रभारी बी के राम ने बताया कि अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि मृतक ट्रेन से गिरा है या किसी ट्रेन की चपेट में आने से हादसा हुआ. शव की पहचान नहीं हो पाई है. घटनास्थल पर ग्रामीणों की भीड़ भी जुट गई है. पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है ताकि मौत का सही कारण पता चल सके.

विधायक ने शिक्षक दिवस पर विद्यार्थियों का सम्मान किया

हजारीबाग । विधानसभा के विधायक प्रदीप प्रसाद ने शिक्षक दिवस के अवसर पर इंटर साइंस कॉलेज में मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया. उन्होंने कहा कि शिक्षा समाज की वास्तविक ताकत है और ऐसे आयोजन विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं. साथ ही, विधायक प्रदीप प्रसाद ने सांसद मनीष जयसवाल के साथ मिलकर हजारीबाग प्रेस क्लब का उद्घाटन भी किया. इस दौरान उन्होंने पत्रकारिता को लोकतंत्र का सशक्त चौथा स्तंभ बताया और पत्रकार साथियों के योगदान की सराहना की. कार्यक्रम में पूर्व सांसद भुनेश्वर प्रसाद मेहता, विधायक जानकी यादव, उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह समेत अन्य सम्मानित व्यक्ति उपस्थित थे. विधायक ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि शिक्षा और पत्रकारिता समाज की प्रगति की नींव हैं. यह कार्यक्रम हजारीबाग में शिक्षा और जनजागरूकता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ.

करंट से युवक की मौत, परिजनों में कोहराम

सतगावां (कोडरमा) । ग्राम कटैया में गुरुवार शाम लगभग 6 बजे बिजली के करंट की चपेट में आने से 35 वर्षीय नवलेश कुमार की मौत हो गई. नवलेश कुमार लखन प्रसाद यादव के पुत्र थे और घटना के समय पशु चराने गए थे. करंट लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें परिजनों ने तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सतगावां पहुंचाया. वहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया. परिजनों ने घटना को लेकर थाने में आवेदन देने की बात कही है. इस दुखद घटना के बाद मृतक के घर और पूरे गांव में शोक का माहौल छा गया है. पुलिस घटना की जांच कर रही है और स्थानीय प्रशासन से सुरक्षा के इंतजाम बढ़ाने की मांग की गई है.

लोहरदगा-गुमला में उत्साह व जोश के साथ निकला जुलूस-ए-मोहम्मदी

शुभम संदेश। लोहरदगा/ किस्को

लोहरदगा शहरी क्षेत्र सहित आसपास के गांवों से भी बड़ी संख्या में लोग जुलूस में शामिल हुए

जश्न-ए-ईद मिलादुन्नबी के मौके पर शुक्रवार को किस्को प्रखंड क्षेत्र में पैगंबर-ए-इस्लाम हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद की खुशी में भव्य जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाला गया. सुबह से ही गांव-गांव, मोहल्लों और मस्जिदों से अकीदतमंदों का हुजूम हाथों में तख्तियां, बैनर और इस्लामी झंडे लिए जुलूस में शरीक होने लगा. जगह-जगह सरकार की आमद मरहबा , दिलदार की आमद मरहबा२, ₹शान वाला हमारा नबी₹ जैसे नारों से फिजा गूंज उठी. बच्चे, बुजुर्ग और युवा सभी मुस्तफा की आमद की खुशी में पूरे उत्साह से शामिल हुए. रूट चार्ट के अनुसार जुलूस अपने-अपने इलाकों से निकलकर मुख्य मार्गों से होता हुआ कर्बला मैदान व तय स्थानों पर पहुंचा, जहां मिलादुन्नबी के प्रोग्राम आयोजित किए गए. इस वर्ष ईद मिलादुन्नबी के 1500 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में किस्को प्रखंड के मदरसा अशरफुल ओलूम अशरफ नगर, मदरसा मिस्बाह उल ओलूम, नवाडीह जामा मस्जिद, नूरी मस्जिद से लेकर दर्जनों गांवों सेमरडीह, होन्दगा, आनंदपुर, हिसरी, पतरातु, अरेया, महुगांव आदि से भी जुलूस निकाले गए.

प्रत्येक स्थल पर लंगर, दीनी क्विज प्रतियोगिता, नात शरीफ और अन्य सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रम हुए. बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कार भी दिए गए. जुलूस की अगुवाई हाफिज अख्तर साहब, मौलाना ऐनुल हक नेजामी, कबीर अंसारी, हाफिज एनामुल हक फैजी, रौनक इकबाल, अब्दुल हन्नान, सनाउल्लाह, अब्दुल कुद्दूस, मुमताज अली फैजी, मौलाना तनवीर आलम समेत कई गणमान्य व्यक्तियों ने की. शांति व्यवस्था को लेकर किस्को, बगड़ और जोबांग थाना पुलिस मुस्तैद दिखी. आयोजन शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ, जिसने किस्को में अमन, भाईचारे और मोहब्बत की एक खूबसूरत मिसाल पेश की.

लोहरदगा । पैगंबर-ए-इस्लाम हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद की खुशी में शुक्रवार को लोहरदगा में जश्ने ईद मिलादुन्नबी पूरे श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया. अंजुमन इस्लामिया की अगुवाई में सुबह तड़के परचमकुशाई की रस्म अदा की गई, जिसके बाद शहर की गलियों में जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाला गया. जुलूस में नारे-ए-तकबीर और मरहबा या मुस्तफा₹ जैसे नारों की गूंज से शहर का हर चौक-चौराहा गूंज उठा. लोहरदगा शहरी क्षेत्र सहित आसपास के गांवों से भी बड़ी संख्या में लोग जुलूस में शरीक हुए. बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों ने पारंपरिक पोशाक पहनकर पैगंबर मोहम्मद (स.) से मोहब्बत का इज़हार किया. रास्ते में जगह-जगह स्वागत द्वार बनाए गए थे और गुलाब जल से अकीदतमंदों का इस्तकबाल किया गया). वक्ताओं ने कहा कि ईद मिलादुन्नबी नबी-ए-करीम की सीरत से सीख लेने और मोहब्बत, अमन, भाईचारे के पैगाम को अपनाने का दिन है. जुलूस के समापन पर कर्बला मैदान में फ़ातिहा ख्वानी की गई और मुल्क की सलामती, कौम की तरक्की और अमन के लिए सामूहिक दुआ की गई. अकीदतमंदों ने हाथ उठाकर अल्लाह से दुआ की कि देश में हमेशा इंसानियत और मोहब्बत बनी रहे. यह आयोजन पूरी तरह शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ. जिला प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था के कड़े इंतजाम किए थे, जिससे जुलूस बिना किसी व्यवधान के सफलतापूर्वक संपन्न हुआ. जुलूस-ए-मोहम्मदी ने एक बार फिर भाईचारे की मिसाल पेश की.

गुमला : शुक्रवार को ईद मिलादुन्नबी का पर्व पूरे अकीदत और उत्साह के साथ मनाया गया. अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.) की यौमे विलादत पर शहर से गांव तक जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाला गया, जिसमें हर उम्र के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया. बच्चे, नौजवान, बुजुर्ग सभी इस जश्न में डूबे नजर आए. जुलूस में "नारे तकबीर-अल्लाहु अकबर" और "प्यारे रसूल-सलाम अलैका" की गूंज सुनाई दी.

चैनपुर । पैगंबर मोहम्मद साहब के जन्मदिन ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर शुक्रवार को चैनपुर प्रखंड में बड़े ही धूमधाम और उत्साह के साथ जुलूस-ए-मोहम्मदी निकाला गया. यह जुलूस मस्जिद प्रांगण से शुरू होकर ब्लॉक चौक, चर्च रोड, सोहन चौक, अल्बर्ट एक्का चौक, बस स्टैंड, मेन रोड और थाना रोड होते हुए संपन्न हुआ. जुलूस में बड़ी संख्या में युवा, बच्चे और बुजुर्ग शामिल थे.

रातू । प्रखंड में ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर जुलूस-ए-मोहम्मदी धूमधाम से निकाला गया. हजारों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग, विशेषकर बच्चे व युवा, धार्मिक झंडों के साथ जुलूस में शामिल हुए. जुलूस काठीटांड़ चौक पहुंचकर सामूहिक दुआ के साथ सम्पन्न हुआ. 'सरकार की आमद मरहबा' और 'या नबी सलाम अलैका' जैसे नारों से माहौल गूंज उठा.

घर से 4 लाख के जेवरात व 25 हजार नगद की चोरी

गुमला । फसिया पंचायत के बिस्कट्ठा नदी टोली गांव में अज्ञात चोरों ने एक बंद घर से 4 लाख रुपये के आभूषण और 25 हजार रुपये नगद की चोरी कर ली. पीड़ित महिला सुषमा देवी ने गुमला थाना में शिकायत दर्ज कराई है. महिला 3 सितंबर को कर्मा पर्व मनाने अपने मायके हंसदोन बघिमा गई थीं. 4 सितंबर को लौटने पर देखा कि घर का दरवाजा टूटा हुआ था और अलमारी का लॉकर भी क्षतिग्रस्त था. चोर सोने-चांदी के जेवरात, बर्तन, कीमती सिक्के और नकदी ले उड़े. थाना में आवेदन देकर जल्द कार्रवाई की मांग की गई है.

टेंपो से कूद कर किशोरी ने बचा अस्मत, हुई घायल

गुमला । रायडीह थाना क्षेत्र की एक 15 वर्षीय किशोरी ने चलती टेंपो से कूद कर अपने साथ हो रही छेड़छाड़ से अपनी अस्मत बचाई, लेकिन गिरने से वह घायल हो गई. घायल किशोरी को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रायडीह में प्राथमिक उपचार के बाद उसके परिजन गुरुवार की देर शाम गुमला सदर अस्पताल में भर्ती करा दिए. मिली जानकारी के अनुसार, किशोरी करमा पर्व मनाने अपने नानी के घर गई थी और गुरुवार की शाम पैदल अपने घर लौट रही थी. रास्ते में उसके गांव का ही एक टेंपो चालक उसे टेंपो में बैठा लिया. पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर आरोपियों की तलाश कर रही है.

रोजगार और लोन माफी को लेकर सात को बैठक

गुमला । झारखंड नवनिर्माण दल की महिला मंडल सहयोग संचालन समिति की जिला स्तरीय बैठक साच सितंबर को गुमला कचहरी परिसर में आयोजित की जाएगी. बैठक में महिला सुरक्षा, नशाखोरी पर रोक, रोजगार की गारंटी, महिला मंडल का लोन माफ करने, ब्याज रहित व्यवसायिक ऋण, और माइक्रोफाइनेंस कंपनियों की मनमानी जैसे मुद्दों पर चर्चा होगी. बैठक सुबह 11 बजे शुरू होगी, जिसमें महिला नेतृत्वकर्ता व सामाजिक कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया गया है.

जंगली सुअरों का आतंक, किसानों की फसलें बर्बाद

चैनपुर । प्रखंड के किसान इन दिनों जंगली सुअरों के आतंक से परेशान हैं. रात के समय सुअरों के झुंड खेतों में घुसकर फसलों को बर्बाद कर रहे हैं, जिससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है. हरडीपा गांव के किसान प्रकाश तिर्की की पाँच एकड़ में लगी मकई की फसल पूरी तरह नष्ट हो गई, जबकि सोनटोली की उनीला मिंज की बादाम की फसल भी बर्बाद हो चुकी है. किसानों का आरोप है कि वन विभाग समस्या को लेकर पूरी तरह निष्क्रिय है. उन्होंने कहा कि मेहनत से उगाई गई फसलें एक रात में तबाह हो रही हैं और प्रशासन सिर्फ आश्वासन दे रहा है.

कांग्रेस में संगठनात्मक चुनाव को लेकर सरगर्मी तेज

गुमला । जिला कांग्रेस की अहम बैठक शनिवार को सर्किट हाउस में आयोजित होगी, जिसमें संगठनात्मक चुनाव को लेकर रायशुमारी की जाएगी. इस बार जिला अध्यक्ष पद को लेकर कांग्रेस के भीतर जबरदस्त हलचल देखने को मिल रही है. वर्तमान में पार्टी सत्ता में है और जिले के सांसद भी कांग्रेस से हैं, ऐसे में संगठन के नेतृत्व के लिए कई वरिष्ठ नेता अपनी दावेदारी पेश करने को तैयार हैं. जिला अध्यक्ष पद की दौड़ में वर्तमान अध्यक्ष चैतु उरांव दोबारा नेतृत्व संभालने की इच्छा जता रहे हैं, वहीं पूर्व अध्यक्ष रोशन बरवा की वापसी की अटकलें भी तेज हो गई हैं. उन्होंने गैर-आदिवासी को भी मौका दिए जाने की बात कही.

गुमला : कांग्रेस के पर्यवेक्षकों का दल गुमला पहुंचा

गुमला । कांग्रेस पार्टी के संगठन सृजन अभियान के तहत पर्यवेक्षक डॉ. रघु शर्मा शुक्रवार को गुमला पहुंचे. उनके साथ प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की, प्रदेश महासचिव अजयनाथ शाहदेव और झारखंड आवास बोर्ड के अध्यक्ष संजय लाल पासवान भी थे. परिसदन भवन सभागार में डॉ. रघु शर्मा ने सिविल सोसाइटी, एनजीओ और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों से संवाद किया. कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पदाधिकारी भी मौजूद रहे. प्रवक्ता आरिफ हुसैन अख्तर ने बताया कि पर्यवेक्षक टीम जिला अध्यक्ष चुनाव के संबंध में कार्यकर्ताओं से फीडबैक लेकर पार्टी आलाकमान को जानकारी देगी.

सेवानिवृत्त इंस्पेक्टर पर मारपीट का आरोप, केस दर्ज

खूंटी । जिले के तोरपा थाना क्षेत्र अंतर्गत हरिजन टोली निवासी जवाहर नायक ने सेवानिवृत्त पुलिस इंस्पेक्टर वसिल सिलवेस्टर डाहंगा के खिलाफ गंभीर आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है. पीड़ित का आरोप है कि वह अपने घर के पास बैठा था, तभी डाहंगा वहां पहुंचे और बिना किसी उकसावे के गाली-गलौज करते हुए जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया. इसके बाद उन्होंने लाठी से सिर पर प्रहार कर दिया, जिससे जवाहर नायक गंभीर रूप से घायल हो गया. घायलावस्था में उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां उसके सिर पर आठ टांके लगे. तोरपा थाना प्रभारी को दिए आवेदन में पीड़ित ने मामले में त्वरित कार्रवाई की मांग की है. पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है.

सात करोड़ की लागत से बनेगी सड़क, विधायक अमित महतो ने निर्माण कार्य का किया शिलान्यास

सोनाहातू । विधायक अमित कुमार महतो ने मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत सोनाहातू प्रखंड के चोकाहातु से तिलाईपीड़ी भाया सावडीह, पापरिदा गांव तक सड़क मरम्मती कार्य का शिलान्यास चोकाहातु गांव की एक वृद्ध महिला मो० सरनो देवी से करा गया. 7 करोड़ की लागत से इसका निर्माण कार्य किया जायेगा. इस दौरान विधायक ने कहा कि गांवों का विकास किया जायेगा. लोगों की भावना का ख्याल रखा जायेगा. उन्होंने विकास कार्य में ग्रामीणों से सहयोग करने को कहा. मौके पर कामेश्वर महतो, गोपाल सिंह मानकी, निशिकांत गंझू, रोहिताश चौधरी, राजू सिंह मुंडा, बासुदेव महतो, दीनबंधु महतो, संतोष कुमार महतो सहित कई लोग मौजूद थे.

हिंदुस्तान के वरिष्ठ पत्रकार ओमप्रकाश सिंह की माता शांति देवी का निधन, क्षेत्र में शोक की लहर

सोनाहातू/राहे । वरिष्ठ पत्रकार ओमप्रकाश सिंह की 81 वर्षीय माताजी शांति देवी का शुक्रवार को निधन हो गया. वे कुछ दिनों से अस्वस्थ थीं. उनकी मौत से सोनाहातू एवं राहे प्रखंड क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई. केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, पूर्व उपमुख्यमंत्री सुदेश महतो, भाजपा जिला अध्यक्ष विनय कुमार महतो सहित कई राजनीतिक और सामाजिक नेता ने दुख व्यक्त किया. शांति देवी का अंतिम संस्कार कोकरो नदी घाट पर किया गया. इस मौके पर आजसू के नेता, स्थानीय जनप्रतिनिधि और पत्रकार उपस्थित थे. वे दो पुत्र व पांच पुत्रियों सहित परिवार छोड़ गई हैं.

मानदेय भुगतान नहीं होने पर करेंगे धरना प्रदर्शन

गुमला । झारखंड प्रदेश विद्यालय रसोइया संयोजिका अध्यक्ष संघ की बैठक हुई, जिसमें दो महीने के भीतर बकाया मानदेय भुगतान का अल्टीमेटम दिया गया. जिला अध्यक्ष देवकी देवी की अध्यक्षता में हुई बैठक में संकुल कमेटी का गठन कर संगठन विस्तार और व्यापक सम्मेलन आयोजित करने का निर्णय लिया गया. रसोइया बहनों ने बताया कि लंबे समय से बकाया भुगतान नहीं होने से उनके परिवार आर्थिक रूप से प्रभावित हैं. साथ ही, 60 वर्ष से अधिक उम्र के रसोइयों की जगह परिवार के अन्य सदस्यों को कार्यभार सौंपने की मांग की गई, लेकिन अभी तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई. यदि मांगे पूरी नहीं हुईं तो डीएसई कार्यालय के सामने अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन किया जाएगा. बैठक में शोभा देवी, एलिस एक्का, जसिंता बरला समेत कई रसोइया बहनें मौजूद थीं.

सिल्ली में शिक्षक दिवस समारोह आयोजित कर सुदेश महतो ने शिक्षकों को किया सम्मानित

सिल्ली । शिक्षक दिवस के अवसर पर सिल्ली स्थित आजसू पार्टी कार्यालय में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में आजसू सुप्रीमो सुदेश कुमार महतो उपस्थित रहे. सुदेश महतो ने कहा, ₹गुरुजन समाज के निर्माता होते हैं. उनका मार्गदर्शन और ज्ञान ही आने वाली पीढ़ियों की मजबूत नींव रखता है. शिक्षकों का सम्मान हमारी संस्कृति की परंपरा है और हमें उनके अमूल्य योगदान को सदैव स्मरण रखना चाहिए.₹इस अवसर पर सिल्ली प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मानित किया गया. उन्हें समाज और शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए योगदान के लिए सम्मान-पत्र एवं उपहार भेंट कर कृतज्ञता प्रकट की गई. जिन शिक्षकों को सम्मानित किया गया, उनमें भजोहरि महतो, विजय महतो, उपेन्द्र नाथ महतो, चंद्रकांत महतो, योगेन्द्र सिंह, मनीष महतो, बुबुन शरण, नीतिश भारद्वाज, समीर सिंह, उमेश महतो, संदीप दत्ता शामिल हैं.

भादर सह करम मिलन समारोह की तैयारी में जुटे लोग

तमाड़ । आगामी सात सितंबर को आयोजित भादर सह करम मिलन समारोह की तैयारियों को लेकर झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) की महिला केंद्रीय अध्यक्ष दमयंती मुंडा तमाड़, बुंडू और अड़की प्रखंड के विभिन्न गांवों का दौरा कर रही हैं. वे ग्रामीणों से अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम में भाग लेने की अपील कर रही हैं. इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में जेएलकेएम के केंद्रीय अध्यक्ष व डुमरी विधायक टाइगर जयराम कुमार महतो शामिल होंगे. कार्यक्रम की सफलता को लेकर जेएलकेएम की पंचायत से लेकर प्रखंड कमिटी तक के सभी सदस्य दिन-रात जुटे हैं.

आरडीएस पब्लिक स्कूल में मना शिक्षक दिवस

नामकुम । आरडीएस पब्लिक स्कूल, नामकुम में शुक्रवार को शिक्षक दिवस बड़े धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं विद्यालय के निदेशक मनोज कुमार सिंह ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर पुष्प अर्पित कर व दीप प्रज्ज्वलित कर किया. अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि शिक्षक एक दीपक की तरह होते हैं, जो स्वयं जलकर विद्यार्थियों के जीवन को रोशन करते हैं. उन्होंने कहा कि माता-पिता और गुरु का स्थान कोई नहीं ले सकता और विद्यार्थियों को इनका सम्मान करना चाहिए. विद्यालय के प्राचार्य कृष्णा कुमार समेत अन्य शिक्षकों ने भी शिक्षक दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला. कार्यक्रम का संचालन खुशबू कुमारी ने किया. बच्चों ने गीत, नृत्य और अन्य सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को विशेष बना दिया.

हाथी प्रभावित इलाकों में निगरानी करे वन विभाग : सांसद

शुभम संदेश । खूंटी

खूंटी के सांसद कालीचरण मुंडा ने शुक्रवार को सिमडेगा में वन विभाग और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठक की. उन्होंने वन प्रमंडल पदाधिकारी (डीएफओ) शशांक शेखर से मुलाकात कर क्षेत्र में बढ़ते हाथियों के उत्पात पर चिंता जताई और इससे प्रभावित गांवों की स्थिति की जानकारी ली.

सांसद कार्यालय की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि कालीचरण मुंडा ने वन विभाग को निर्देशित किया कि हाथियों से प्रभावित इलाकों में नियमित निगरानी की व्यवस्था की जाए, ताकि किसी भी प्रकार की अनहोनी से बचा जा सके. उन्होंने कहा कि हाथियों के कारण ग्रामीणों को भारी नुकसान उठाना पड़ता है, इसलिए विभाग को चाहिए कि वह समय पर प्रभावित परिवारों को मुआवजा और अन्य आवश्यक सहायता प्रदान करे. उन्होंने कहा कि ग्रामीणों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है. इसके लिए रेंजरों और अन्य वनकर्मियों को हाथी से बचाव की सामग्री जैसे टॉर्च, सायरन, पटाखे आदि समय-समय पर ग्रामीणों को उपलब्ध करानी चाहिए. **स्वास्थ्य सेवाओं पर सांसद की गहरी नजर** : अपने दो दिवसीय सिमडेगा दौरे के दौरान सांसद मुंडा ने स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा भी की. सिविल सर्जन से मुलाकात कर उन्होंने जिले में स्वास्थ्य व्यवस्थाओं की वर्तमान स्थिति की जानकारी ली. इस दौरान उन्होंने विशेष रूप से एम्बुलेंस की उपलब्धता, उनके संचालन की स्थिति, चिकित्सकों की तैनाती तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की कार्यक्षमता की समीक्षा की. उन्होंने सख्त लहजे में कहा कि स्वास्थ्य सेवा आम जनता से सीधे जुड़ी हुई है, इसलिए इसमें लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी.

लातेहार- पलामू की खबरें

जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराना बड़ी सेवा: डीडीसी

बालूमाथ (लातेहार) । मुस्लिम यूथ कमिटी द्वारा ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर बालूमाथ मदरसा परिसर में आयोजित मेगा रक्तदान शिविर का उद्घाटन उप विकास आयुक्त सैयद रियाज अहमद ने फीता काटकर किया. उप विकास आयुक्त ने कहा कि किसी भी जरूरतमंद को समय पर रक्त उपलब्ध कराना सबसे बड़ी मानवीय सेवा है और युवाओं में रक्तदान का उत्साह प्रेरक है. पुलिस पदाधिकारी विनोद रवानी ने बालूमाथ की सामाजिक सौहार्द की सराहना की, जबकि रेडक्रॉस सोसाइटी के जुनैद अनवर ने शिविर की सफलता पर खुशी जताई. शिविर में 141 लोगों ने स्वैच्छिक रक्तदान किया. कार्यक्रम में कई गणमान्य उपस्थित रहे, जिन्होंने मुस्लिम यूथ कमिटी को आयोजन के लिए बधाई दी. रक्तदान शिविर जिला स्वास्थ्य समिति के सहयोग से संपन्न हुआ. मुस्लिम यूथ कमिटी के सदस्यों का सहयोग सराहनीय रहा, जिन्होंने इसे सफल बनाया. यह शिविर मोहम्मद साहब के विचारों को जीवित रखने का प्रयास भी था, जिसमें समाज के सभी वर्गों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया.

बालूमाथ बस पड़ाव का डीडीसी ने किया निरीक्षण

बालूमाथ (लातेहार) । लातेहार के उप विकास आयुक्त सैयद रियाज अहमद ने बालूमाथ प्रखंड मुख्यालय के बस पड़ाव और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का शुक्रवार को औचक निरीक्षण किया. निरीक्षण के दौरान बस पड़ाव में गंदगी और अव्यवस्था देख डीडीसी ने कड़ी नाराज़गी जताई और जिम्मेदार अधिकारियों को फटकार लगाई. उन्होंने कहा कि बस पड़ाव में ट्रक या अन्य गाड़ियों की पार्किंग कतई नहीं होनी चाहिए और केवल बसों का संचालन सुनिश्चित किया जाए. साथ ही साफ-सफाई में सुधार के निर्देश दिए. सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की बदतर सफाई स्थिति देखकर चिकित्सा कर्मियों को भी डीडीसी ने फटकार लगाई. डीडीसी ने कहा कि मरीजों को बेहतर इलाज और स्वच्छ वातावरण प्रदान करना प्रशासन की पहली प्राथमिकता है. निरीक्षण के दौरान एसडीपीओ विनोद रवानी, प्रखंड विकास पदाधिकारी सोमा उरांव, अंचल अधिकारी बालेश्वर राम समेत अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे.

शहीद स्मारक नॉक आउट टूर्नामेंट का भव्य शुभारंभ

महुआडांड़ (लातेहार) । महुआडांड़ प्रखंड स्थित आवासीय विद्यालय स्टेडियम में शुक्रवार को शहीद स्मारक नॉक आउट फुटबॉल टूर्नामेंट का भव्य शुभारंभ हुआ. मुख्य अतिथि विधायक रामचंद्र सिंह ने फीता काटकर कार्यक्रम की शुरुआत की. मौके पर एसडीओ बिपिन कुमार दुबे, एसडीपीओ शिवपूजन बहेलिया, बीडीओ संतोष बैठा, फादर दिलीप और प्रदेश प्रतिनिधि इफ्तेखार अहमद समेत कई जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे. टूर्नामेंट का आयोजन कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष अभय मिंज एवं युवा प्रखंड अध्यक्ष अमीर सुहेल के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है. शुभारंभ समारोह में बड़ी संख्या में खेलप्रेमी और ग्रामीणों की भागीदारी रही. विधायक रामचंद्र सिंह ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर फुटबॉल किक मारकर मैच की शुरुआत की.

चोरी की घटनाओं से भयभीत ग्रामीणों ने मांगी सुरक्षा

मेदिनीनगर । सिंगरा खुर्द गांव में 27 अगस्त की रात ब्राह्मण विद्यालय के सहायक शिक्षक गिरेंद्र कुमार शुक्ला के घर से सोने-चांदी के गहने और नगद चोरी हो गया. पुलिस ने डॉग स्क्वायड की मदद से दो संदिग्धों को पकड़ा लेकिन बाद में छोड़ दिया. चोरी का सामान अब तक बरामद नहीं हो सका है. पीड़ित परिवार और ग्रामीणों ने शुक्रवार को बैठक कर एसपी को सामूहिक आवेदन देने और कार्रवाई न होने पर थाना व एसपी कार्यालय का घेराव करने का निर्णय लिया. ग्रामीणों में उमेश शुक्ला, विनोद शुक्ला, शिवशंकर अकेला सहित बड़ी संख्या में पुरुष-महिला शामिल थे. पिछले 40 वर्षों में पहली बार इस तरह की चोरी से गांव में भय और असुरक्षा का माहौल फैल गया है. ग्रामीण सुरक्षा बढ़ाने और शीघ्र गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं.

राधाकृष्णन की 137वीं जयंती पर आयोजित समारोह

मेदिनीनगर । बेरोजगार संघर्ष मोर्चा के जिला कार्यालय में भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की 137वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई. कार्यक्रम का शुभारंभ उनकी तस्वीर पर माल्यार्पण से हुआ. मोर्चा अध्यक्ष उदय राम ने डॉ. राधाकृष्णन को महान शिक्षाविद, दार्शनिक व चिंतक बताया, जो 1952 से 1957 तक उपराष्ट्रपति और 1962 से 1967 तक राष्ट्रपति रहे. उन्होंने कहा कि राधाकृष्णन शिक्षक से राष्ट्रपति बने और सादा जीवन, उच्च विचार के प्रतीक थे. शिक्षा को मानव जीवन की पहली जरूरत बताया और शिक्षकों को भगवान के समान माना. मौके पर कई वक्ताओं ने भी उनके विचारों व शिक्षाओं पर प्रकाश डाला.

सम्मानित हुए मेदनीराय स्पोर्ट्स एकेडमी के प्रशिक्षक

मेदिनीनगर । के. के. शाहपुर स्थित चलानी किला परिसर में शिक्षक दिवस के अवसर पर झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा से जुड़ी राजा मेदनीराय स्पोर्ट्स एकेडमी के दर्जनों प्रशिक्षकों को सम्मानित किया गया. इस मौके पर मोर्चा के पलामू जिला कार्यालय का भी उद्घाटन मोर्चा के संरक्षक शंखनाथ सिंह चेरो और जिला अध्यक्ष दाऊद केरकेट्टा द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया. कार्यक्रम की शुरुआत भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की तस्वीर पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित कर की गई. एकेडमी के प्रमुख डॉ. संतोष कुमार को मद्रास विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त होने पर विशेष रूप से सम्मानित किया गया. उन्हें मोर्चा की ओर से मेमेंटो, डायरी और कलम भेंट की गई.

शिक्षक दिवस पर डॉ. राधाकृष्णन को दी श्रद्धांजलि

लातेहार । नगर पंचायत कार्यालय रोड स्थित चिल्ड्रेन कान्वेंट स्कूल में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस धूमधाम से मनाया गया. इस अवसर पर छात्रों और शिक्षकों ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किया. कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्य शशिभूषण पांडेय ने डॉ. राधाकृष्णन के जीवन और शिक्षा क्षेत्र में उनके योगदान को याद किया. इस मौके पर वरीय शिक्षिका शिवनी वर्मा, करूणा मिश्रा, पूजा श्रीवास्तव, खुशी राणा, खुशी रानी, रिया कुमार व सुमन गुप्ता सहित अन्य शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थीं.

उंटारी रोड में मनाया गया जश्न-ए-ईद मिलादुन्नबी

उंटारी रोड । पलामू में हजरत मुहम्मद साहब के जन्मदिन, जश्न-ए-ईद मिलादुन्नबी, को श्रद्धापूर्वक और धूमधाम से मनाया गया. डेवडर और बिंदुआ गांवों से निकले जुलूस-ए-मुहम्मदी मस्जिद प्रांगण में एकजुट होकर पूरे गांव का भ्रमण किया. जुलूस में सभी उम्र के लोग पारंपरिक पोशाक में नारे-ए-तकबीर और नारे-ए-रिसालत के साथ शामिल हुए. रास्ते में फूलों और मिठाइयों से स्वागत किया गया. जुलूस के दौरान रेयाजुद्दिन अंसारी, करार अंसारी, इलियास अंसारी समेत कई लोगों ने जलपान कराया. सदर खताबुद्दिन अंसारी, सेक्रेट्री मोसतकिम अंसारी, हाफिज शनाउल्लाह, अशोक सिंह सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे.

सांसद प्रतिनिधि के सम्मान में अभिनंदन समारोह

महुआडांड़ (लातेहार) । महुआडांड़ प्रखंड के शिवनगर में रविवार को भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा नवनिर्वाचित सांसद प्रतिनिधि भुवनेश्वर सिंह के सम्मान में भव्य अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में महुआडांड़ मंडल क्षेत्र के सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता, जिला भर से आए पदाधिकारी, व्यवसायी और अन्य राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि मौजूद रहे. इस अवसर पर भाजपा के जिला महामंत्री अमलेश सिंह, जिला परिषद सदस्य कन्हाई सिंह, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष छोटू राजा, मुखिया संघ के जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह और आनंद नाथ सिंह सहित कई वरिष्ठ नेताओं ने भुवनेश्वर सिंह को अंग वस्त्र और पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया.

मंथन

मानसिक स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता की नई दिशा

रांची इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो साइकेट्री एंड एलाइड साइंस (रिनपास) के शताब्दी वर्ष समारोह पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जो बातें कहीं, वे हमारे समाज और शासन की प्राथमिकताओं में मानसिक स्वास्थ्य को शीर्ष स्थान देने की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत देती हैं. पिछले कुछ दशकों में मानसिक बीमारियों का दायरा तेजी से बढ़ा है. अवसाद, तनाव और अकेलेपन ने लाखों लोगों को प्रभावित किया है. ऐसे में रिनपास जैसे संस्थान की भूमिका और अधिक अहम हो जाती है. मुख्यमंत्री ने आधारभूत संरचना को मजबूत करने, आधुनिक इलाज उपलब्ध कराने और बेहतर काउंसलिंग सुविधाएं बढ़ाने का जो संकल्प लिया है, वह स्वागतयोग्य है. यह सच है कि मानसिक बीमारियों को लेकर समाज में अभी भी गहरी उपेक्षा और पूर्वाग्रह मौजूद हैं. कई बार परिवार ही मरीज को बोझ मानकर छोड़ देता है या कैद कर देता है. यह संवेदनहीनता समाज और व्यवस्था दोनों के लिए चुनौती है. सरकार द्वारा इस दिशा में गंभीर पहल जरूरी है ताकि मानसिक रोगियों तक सहज, सरल और गरिमापूर्ण उपचार व्यवस्था पहुंच सके. रिनपास की स्थापना एक सदी पहले हुई थी. तब इसकी प्रासंगिकता जितनी रही होगी, आज उससे कहीं अधिक है. यह संस्थान केवल इलाज का केंद्र न बनकर समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता का भी केन्द्र बने, यही अपेक्षा है. मानसिक रोग भी अन्य शारीरिक रोगों की तरह सामान्य हैं और इनके उपचार की आधुनिक व्यवस्था उपलब्ध कराना सरकार और समाज दोनों की साझा जिम्मेदारी है. शताब्दी वर्ष इस दिशा में नए संकल्प और नई संवेदनशीलता का अवसर है.

नजरिया

जीएसटी ढांचे में बदलाव और आम उपभोक्ता का सवाल

जीएसटी लागू हुए आठ साल हो चुके हैं. इसे देश का सबसे बड़ा कर सुधार कहा गया था. वादा था कि कर की दरें घटेंगी और उपभोक्ता को सीधा लाभ मिलेगा. लेकिन अब तक के अनुभव बताते हैं कि जब-जब जीएसटी दरों में कटौती हुई, कंपनियों ने कीमतें घटाने के बजाय अपने मुनाफे बढ़ा लिए. ऐसे में किए गए स्लैब सरलीकरण और दर कटौती के प्रभाव को लेकर स्वाभाविक संदेह पैदा होता है. नई व्यवस्था के तहत 12% और 28% के स्लैब हटाकर 5%, 18% और 40% के स्लैब रखे गए हैं. साथ ही दूध, पनीर, पैकेज्ड खाद्य पदार्थ, दवाइयां और छोटे वाहनों जैसे रोजमर्रा की जरूरतों पर कर घटाया गया है. सरकार का दावा है कि इससे महंगाई कम होगी और क्रय शक्ति बढ़ेगी. साथ ही अर्थव्यवस्था 6.5 से 7% की दर से वृद्धि करेगी. लेकिन सवाल है कि उपभोक्ता तक लाभ कैसे पहुंचेगा? दरअसल, जब तक कंपनियों पर यह अनिवार्य नहीं होगा कि वे कम कर का लाभ कीमतों में कमी के रूप में दें, तब तक आम जनता तक फायदा पहुंचने की संभावना कम ही रहेगी. इसके लिए सख्त निगरानी और जवाबदेही की व्यवस्था जरूरी है. जीएसटी काउंसिल और उपभोक्ता संरक्षण एजेंसियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि कंपनियां टैक्स कटौती का लाभ ग्राहकों तक पहुंचाएं. कर सुधार का अंतिम लक्ष्य केवल कंपनियों का मुनाफा बढ़ाना नहीं, बल्कि जनता को राहत देना है. यदि यह संतुलन कायम नहीं हुआ, तो जीएसटी का सुधार उपभोक्ता के लिए अधूरा ही साबित होगा.

अब जंक फूड को ना, पोषण को कहें हां

योगेश कुमार गोयल

राष्ट्रीय पोषण सप्ताह (1 से 7 सितंबर) पर विशेष आलेख

पोषक तत्वों के संतुलन और असंतुलन को इसी से समझा जा सकता है कि जब कोई व्यक्ति एक दिन में ऊर्जा खपत से अधिक ऊर्जा ग्रहण करता है, तो वह वसा के रूप में शरीर में एकत्र हो जाती है, जिससे वह मोटापे का शिकार हो सकता है.

भारत में प्रतिवर्ष लोगों को स्वस्थ जीवनशैली के लिए संतुलित आहार सुनिश्चित करने हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से 01 से 07 सितंबर के बीच राष्ट्रीय पोषण सप्ताह मनता है. सरकार के महिला और बाल विकास मंत्रालय के अंतर्गत खाद्य और पोषण बोर्ड प्रतिवर्ष विशेष थीम के साथ इसका आयोजन करता है, जो पूरे सप्ताह के दौरान होने वाली गतिविधियों और कार्यक्रमों की दिशा निर्धारित करती है. 2025 के राष्ट्रीय पोषण सप्ताह का विषय है 'बेहतर जीवन के लिए सही भोजन करें' जो समग्र कल्याण को बढ़ावा देने और कुपोषण को रोकने के लिए सभी आयु समूहों के लिए संतुलित आहार और स्वस्थ खाने की आदतों के महत्व पर जोर देता है.

पोषण के महत्व को समझते हुए लोगों को खानपान, पोषण की पूर्ति और सेहत को लेकर जागरूक करने के लिए मार्च 1975 में राष्ट्रीय पोषण सप्ताह मनाए जाने की घोषणा सर्वप्रथम 'अमेरिकन डायटेटिक्स एसोसिएशन' द्वारा की गई थी, जिसे अब 'न्यूट्रिशन एंड डाइट साइंस एकेडमी' के नाम से जाना जाता है. 1980 में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पोषण सप्ताह एक सप्ताह के बजाय पूरे एक माह तक मनाया जाने लगा लेकिन 1982 में निर्णय लिया गया कि इसे पूरे एक महीने के बजाय सितम्बर महीने के पहले सप्ताह में ही मनाया जाएगा. तभी से 01 से 07 सितम्बर तक 'राष्ट्रीय पोषण सप्ताह' मनाया जा रहा है. पोषण सप्ताह पर लोगों को शरीर को पोषण देने वाले फल, सब्जियों और अन्य पौष्टिक खाद्य सामग्रियों को आजमाने के लिए प्रेरित किया जाता है. कुपोषण का मनुष्य के स्वास्थ्य और विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे उत्पादकता में कमी की समस्या भी उत्पन्न होती है.

पोषण स्वास्थ्य और कल्याण का केन्द्र बिंदु है, जो कार्य करने के लिए शक्ति एवं ऊर्जा प्रदान करता है और तंदुरुस्त एवं बेहतर महसूस करने में भी मददगार होता है. पर्याप्त पोषण का सेवन करने वाले व्यक्ति अधिक कार्य करते हैं जबकि खराब पोषण प्रतिरक्षा में कमी, बीमारी के जोखिम को बढ़ाने, शारीरिक एवं मानसिक विकास को क्षीण करने तथा कार्यक्षमता में कमी पैदा करने का कार्य करता हैं. अच्छे पोषण का उत्पादकता, आर्थिक विकास तथा अंततः राष्ट्रीय विकास पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है और अच्छा पोषण लोगों को स्वस्थ बनाए रखते हुए स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण भी करता है. इसीलिए नियमित शारीरिक गतिविधियों के साथ अच्छे पोषण को अच्छे स्वास्थ्य की आधारशिला माना जाता है. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार पोषण का संबंध शरीर की आवश्यकतानुसार आहार के सेवन को माना गया है और कुपोषण को अपर्याप्त या असंतुलित आहार द्वारा खराब पोषण के रूप में परिभाषित किया गया है. अच्छे पोषण से स्वस्थ बच्चे बेहतर तरीके से सीखते हैं लेकिन आज के दूषित खानपान और फास्ट फूड वाली जीवनशैली में कुपोषण खासकर विकासशील देशों की प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है.

एक अनुमान के अनुसार दुनियाभर में एक तिहाई से भी ज्यादा बच्चों की मृत्यु में कुपोषण का बड़ा योगदान है और पूरी दुनिया में हर तीन कुपोषित बच्चों में से एक भारत में है. भारत को कुपोषण से मुक्ति दिलाने के लिए 8 मार्च 2018 को पोषण अभियान भी शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य खासतौर से 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों, किशोरियों, गर्भवती महिलाओं तथा स्तनपान कराने वाली माताओं की पोषण स्थिति में सुधार करना था और वर्ष 2022 के अंत तक देश से कुपोषण खत्म करने का लक्ष्य रखा गया था लेकिन पोषण अभियान फंड के इस्तेमाल में जिस तरह की उदासीनता देखी जाती रही है, उसे देखते हुए यह लक्ष्य हासिल करना अभी दूर की कौड़ी प्रतीत होता है. नीति आयोग की चौथी प्रगति रिपोर्ट से खुलासा हुआ था कि देश के 23 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों ने तो इस मद में आधे से भी कम फंड का इस्तेमाल किया. यदि हम वाकई देश को कुपोषण मुक्त राष्ट्र का दर्जा देना चाहते हैं तो उदासीनता की इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना होगा. हमारे भोजन में रंग और खुशबू देने वाले रासायनिक पदार्थ जैसे कुछ ऐसे तत्व भी होते हैं, जो पोषक तत्व नहीं होते लेकिन कार्बोज, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज लवण, पानी इत्यादि प्रमुख पोषण तत्व हैं. यदि ये पोषण तत्व हमारे भोजन में उचित मात्रा में विद्यमान न हों, तो हमारा शरीर अस्वस्थ हो जाएगा. भोजन के वे सभी तत्व, जो शरीर में आवश्यक कार्य करते हैं, पोषक तत्व कहलाते हैं. ये तत्व जब हमारे शरीर की आवश्यकतानुसार सही अनुपात में उपस्थित होते हैं, तब उसे सर्वोत्तम पोषण या समुचित पोषण की संज्ञा दी जाती है लेकिन जब पोषक तत्व शरीर में सही अनुपात में विद्यमान नहीं होते या उनके बीच में असंतुलन होता है तो वह कुपोषण कहलाता है यानी अधिक पोषण या कम पोषण दोनों को ही कुपोषण कहा जाता है. कम पोषण का अर्थ है आहार में पोषण तत्वों की कमी और अधिक पोषण का अर्थ है पोषक तत्वों की भोजन में अधिकता.

शरीर में पोषक तत्वों की अधिकता और कमी दोनों ही हानिकारक हैं, शारीरिक जरूरतों को पूरा करने के लिए भोजन में उचित मात्रा में पोषक तत्वों की पूर्ति होनी चाहिए. पोषक तत्वों के संतुलन और असंतुलन को इसी से समझा जा सकता है कि जब कोई व्यक्ति एक दिन में ऊर्जा खपत से अधिक ऊर्जा ग्रहण करता है तो वह वसा के रूप में शरीर में एकत्र हो जाती है, जिससे व्यक्ति मोटापे का शिकार हो सकता है. पौष्टिक भोजन स्वास्थ्य की आधारशिला है और अच्छे पोषण के लिए जरूरी है कि फास्ट फूड के बजाय घर में बने पारंपरिक और पौष्टिक आहार के सेवन को ही प्राथमिकता दें, मुख्य आहार के स्थान पर स्नैक्स का सेवन करने से बचें, चीनी और अस्वस्थ प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का सेवन सीमित मात्रा में करें, खाने से पहले फल-सब्जियों को अच्छी तरह से धोएं और यथासंभव कच्चे फल-सब्जियों का सेवन करें क्योंकि पकाने से कई पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं, कम से कम प्रसंस्करण आहार के साथ ताजा भोजन अवश्य करें. **(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं.)**

आज का इतिहास

1657 : मुगल शासक शाहजहां के बीमार पड़ने से अलगाववादी आंदोलन शुरू हो गए.
1889 : शरत् चंद्र बोस का जन्म.
1929: फिल्मकार यश जौहर का जन्म अविभाजित भारत के लाहौर में हुआ.
1972 : हिंदुस्तांनी शास्त्रीय संगीत के सरोद वादक उस्ताद अलाउद्दीन खान का निधन.
1990 : संसद से प्रसार भारती विधेयक पारित.
1997 : वेल्स की राजकुमारी डायना को ब्रिटेन और दुनिया ने अंतिम विदाई दी.
2008 : भारत-अमेरिका के बीच परमाणु करार को आपूर्तिकर्ता समूह ने मंजूरी दी.
2018: सुप्रीम कोर्ट ने आपसी सहमति से वयस्कों के बीच समलैंगिक यौन संबंधों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया.
2020: संविधान के मूल ढांचे का सिद्धांत दिलाने वाले केशवानंद भारती का निधन. भारती ने केरल भूमि सुधार कानून को चुनौती दी थी. सुप्रीम कोर्ट ने इस पर नया सिद्धांत दिया .

आराम से मिलने वाली चीजें हमारे लिए हराम बन जाती हैं

चिंतन

गिद्धों का एक झुंड खाने की तलाश में एक टापू पर आ गया. वो जगह स्वर्ग समान थी. हर तरफ खाने के लिए मेंढक, मछलियां व समुद्री जीव थे और वहां इनका शिकार करने वाला कोई जंगली जानवर नहीं था. वे बिना भय के वहां रह सकते थे. युवा गिद्ध ज्यादा ही उत्साहित थे, एक बोला, वाह ! मजा आ गया, अब तो मैं यहां से कहीं नहीं जाऊंगा, यहाँ तो बिना मेहनत के ही हमें बैठे -बैठे खाने को मिलेगा. बाकी गिद्ध भी झूमने लगे. पर, झुंड का सबसे बूढ़ा गिद्ध खुश नहीं था.एक दिन वो बोला, भाइयों, हम गिद्ध हैं, हमें हमारी ऊंची उड़ान और अचूक वार के लिए जाना जाता है. पर जबसे हम यहां हैं हर कोई आराम तलब हो गया है. ज्यादातर गिद्ध महीनो से उड़े तक नहीं हैं और आसानी से मिलने वाले भोजन से अब हम सब शिकार करना भी भूल रहे हैं. ये हमारे लिए अच्छा नहीं है मैंने फैसला किया है कि मैं इस टापू को छोड़ वापस उन जंगलो में लौट जाऊंगा अगर मेरे साथ कोई चलना चाहे तो चल सकता है.बूढ़े गिद्ध की बात सुन बाकी गिद्ध हंसने लगे. सबने उसे मूर्ख कहा. बूढ़ा गिद्ध अकेले ही वापस लौट गया. कुछ वर्षों बाद बूढ़े गिद्ध ने सोचा, ना जाने मैं अब कितने दिन जीवित रहूं, क्यों न चल कर पुराने साथियों से मिल लिया जाए. जब वो टापू पे पहुंचा तो वहां का दृश्य भयावह था. ज्यादातर गिद्ध मारे जा चुके थे और जो बचे थे वे बुरी तरह घायल थे. ये कैसे हो गया? बूढ़े गिद्ध ने पूछा. रोते हुए एक घायल गिद्ध बोला, हमे क्षमा कीजिएगा, हमने आपकी बात नहीं मानी. आपके जाने के बाद एक बड़ी सी जहाज यहां आई और चीतों को यहां छोड़ गयी. चीतों ने पहले तो हम पर हमला नहीं किया, पर जैसे ही उन्हें लगा कि हम न ऊंचा उड़ सकते हैं और न हमला कर सकते हैं.उन्होंने हमे खाना शुरू कर दिया. बस हम जैसे कुछ घायल गिद्ध ही ज़िंदा बचे हैं. बूढ़ा गिद्ध बस अफ़सोस कर सकता था,वो वापस जंगलों की तरफ उड़ चला. दोस्तों, अगर हम अपनी किसी शक्ति का प्रयोग नहीं करते तो हम उसे खो कर देते हैं. अगर हम अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं करते तो उसकी क्षमता घट जाती है, अगर हम अपनी ताकत का प्रयोग नहीं करते तो उनकी ताकत भी घट जाती है.

इंडिया पर ट्रेंडिंग

1. #TeachersDay
2. Happy Onam
3. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
4. #शिक्षक_दिवस
5. #CMStalinInOxford
6. पूर्व राष्ट्रपति
7. #EidMiladUnNabi
8. #निमंत्रण_संसारको_सम्मानकेसाथ
9. भारत रत्न
10. 3Days Left Avataran Diwas

बहुरंग

रणबीर कपूर ने दिए 52 रीटेक बोनी कपूर ने किया बड़ा खुलासा

अभिनेता रणबीर कपूर की फैन फॉलोइंग बहुत विशाल है. उनके बेहतरीन अभिनय को जहां दर्शक पसंद करते हैं, वहीं आलोचक भी हमेशा सराहना करते हैं. रणबीर के अनुशासन और धैर्य की भी खूब तारीफ होती है. हाल ही में निर्माता बोनी कपूर ने रणबीर के धैर्य से जुड़ा एक किस्सा शेयर किया. उन्होंने बताया कि शूटिंग कितनी भी लंबी क्यों न हो, चाहे तपती दोपहर हो या रात का समय और भले ही कितने भी रीटेक करने पड़ें, रणबीर कभी पीछे नहीं हटते और पूरे धैर्य के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करते हैं. रणबीर कपूर और श्रद्धा कपूर स्टारर फिल्म 'तू झूठी मैं मक्कार' साल 2023 में रिलीज़ हुई थी, जिसमें बोनी कपूर ने रणबीर के पिता का किरदार निभाया था. हाल ही में दिए इंटरव्यू में बोनी कपूर ने रणबीर की प्रोफेशनलिज़्म की तारीफ करते हुए कहा, रणबीर ऐसे इकलौते एक्टर हैं जिन्हें मैंने सेट पर कभी बोर होते नहीं देखा. हम लगातार 16-16 घंटे शूट करते थे. दिल्ली की चिलचिलाती गर्मी में शूटिंग होती थी. बाद में हमने रात में शूटिंग करने का फैसला किया और रात 9 बजे से सुबह 6 बजे तक काम किया, ताकि गर्मी थोड़ी कम लगे. इसके बावजूद रणबीर ने कभी कोई शिकायत नहीं की. उन्होंने हर वक्त प्रोफेशनल अंदाज में काम किया. बोनी कपूर ने बताया, मुझे याद है, एक सीन में पूरे 52 रीटेक हुए थे. अलग-अलग वजहों से बार-बार रीटेक लेना पड़ रहा था. लेकिन रणबीर ने एक बार भी शिकायत नहीं की. वह हर बार पूरे धैर्य और सम्मान के साथ रीटेक देते रहे.

जॉली त्यागी की दलील पर जॉली का तगड़ा पलटवार

कोर्टरूम का माहौल आमतौर पर गंभीर होता है, लेकिन जब जॉली त्यागी और जॉली मिश्रा आमने-सामने आते हैं तो यह गंभीरता मिनटों में ठहाकों में बदल जाती है. ट्रेलर लॉन्च के साथ ही साफ हो गया है कि 'जॉली एलएलबी 3' एक बार फिर कोर्टरूम कॉमेडी और धमाकेदार हंगामे से दर्शकों का मनोरंजन करने आ रही है. अरशद वारसी (जॉली त्यागी) इस बार पूरी तैयारी में नजर आ रहे हैं. ट्रेलर लॉन्च की बहस के दौरान उन्होंने ऐसा रंग जमाया कि कोर्टरूम ठहाकों से गूंज उठा. उनका डायलॉग, मेरठ की रेवड़ी-गजक छोड़ो, मेरे फूफा की हलवाई की दुकान का प्रमोशन करो. सुनते ही पूरा माहौल हंसी से भर गया. लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं हुई. जैसे ही अक्षय कुमार(जॉली मिश्रा) लगातार आपत्तियां दर्ज कराने लगे, वारसी ने भड़ककर कहा, ये पर्सनल अटैक है, मिलॉर्ड अब और बर्दाश्त नहीं होगा. और फिर कोर्टरूम पल भर में कॉमेडी का अखाड़ा बन गया.

जॉली मिश्रा की तड़क-भड़क : अक्षय कुमार (जॉली मिश्रा) भी कहां मानने वाले थे. उन्होंने अरशद वारसी की हर दलील का ताबड़तोड़ जवाब दिया. कभी कानपुर के लड्डुओं की तारीफों के पुल बांधे, तो कभी मेरठ की दलीलों पर तगड़े तंज कसे. उनकी पंचलाइनें इतनी धारदार निकलीं कि जज त्रिपाठी (सौरभ शुक्ला) भी मजबूर होकर सिर पकड़कर बैठ गए. लगातार बढ़ती नोकझोंक से तंग आकर जज त्रिपाठी दर्शकों की ओर देखते हुए बोले, अब ये अदालत नहीं रही, ये जनता का दरबार है, अब फैसला आप ही सुनाइए कौन भारी है, कानपुर या मेरठ? वोट करने के लिए लिंक भी जारी किया गया है. स्टार स्टूडियो18 के बैनर तले और सुभाष कपूर के निर्देशन में बनी 'जॉली एलएलबी 3' में पहली बार अक्षय कुमार और अरशद वारसी कोर्टरूम में आमने-सामने नज़र आएंगे.

बॉक्स ऑफिस पर ठंडी पड़ी 'परम सुंदरी', सात दिन में 39.85 करोड़ रु की हुई कमाई

सिद्धार्थ मल्होत्रा और जाह्नवी कपूर की 'परम सुंदरी' को रिलीज हुए एक हफ्ता पूरा हो गया है. 29 अगस्त को आई इस रोमांटिक कॉमेडी से मेकर्स को बड़ी उम्मीदें थीं, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर फिल्म को दर्शकों का वैसा रिस्पॉन्स नहीं मिल पा रहा है. हर दिन के साथ इसकी कमाई में गिरावट देखी जा रही है. अब सातवें दिन के कलेक्शन रिपोर्ट सामने आ गई है, जिसमें एक और गिरावट दर्ज हुई है. सैकनिल्क की रिपोर्ट के मुताबिक 'परम सुंदरी' ने अपनी रिलीज़ के सातवें दिन यानी गुरुवार को 2.75 करोड़ रुपये का बिज़नेस किया. इसी के साथ फिल्म की कुल कमाई 7 दिनों में 39.85 करोड़ रुपये तक पहुंच गई है. करीब 45 करोड़ रुपये के बजट में बनी इस फिल्म का निर्देशन तुषार जलोटा ने किया है. इसमें सिद्धार्थ मल्होत्रा और जाह्नवी कपूर के साथ रेन्जी पणिक्कर, सिद्धार्थ शंकर, मनजोत सिंह, संजय कपूर और इनायत वर्मा भी अहम भूमिकाओं में नजर आते हैं. बॉक्स ऑफिस पर इस वक्त 'परम सुंदरी' की टक्कर ऋतिक रोशन की 'वॉर 2' से हो रही है. वहीं 5 सितंबर को टाइगर श्रॉफ और संजय दत्त की एक्शन से भरपूर फिल्म 'बागी 4' भी रिलीज हो चुकी है, जिसमें सोनम बाजवा और हरनाज कौर संधू भी अहम भूमिकाओं में नजर आ रही हैं. इसके अलावा विवेक अग्निहोत्री की 'द बंगाल फाइल्स' भी बड़े पर्दे पर उतर चुकी है, जिसमें अनुपम खेर, मिथुन चक्रवर्ती और पल्लवी जोशी जैसे दिग्गज कलाकार शामिल हैं.

'बॉर्डर-2' के बाद अहान शेट्टी करेंगे हॉरर फिल्म में धमाकेदार एंट्री

सुनील शेट्टी के बेटे और उभरते हुए अभिनेता अहान शेट्टी इन दिनों लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं. हाल ही में उनकी मेगा-बजट फिल्म 'बॉर्डर 2' की चर्चा हो रही है, जिसका निर्देशन अनुराग सिंह कर रहे हैं. इस फिल्म में अहान के साथ दिग्गज अभिनेता सनी देओल, पंजाबी सुपरस्टार दिलजीत दोसांझ और बॉलीवुड स्टार वरुण धवन भी नज़र आने वाले हैं. 'बॉर्डर 2' की रिलीज़ का दर्शक बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं, लेकिन इसी बीच अहान से जुड़ी एक और बड़ी खबर सामने आ गई है, जिसने उनके फैन्स की उत्सुकता को दोगुना कर दिया है. अहान शेट्टी अब एक बिल्कुल अलग जॉनर में कदम रखने जा रहे हैं. उनकी अगली फिल्म एक हॉरर-ड्रामा होगी, जो भारतीय सिनेमा के इतिहास में अपनी तरह की पहली फिल्म मानी जा रही है. खास बात यह है कि यह फिल्म एक वास्तविक राष्ट्रीय त्रासदी से प्रेरित बताई जा रही है. यानी इसमें हॉरर और रियलिस्टिक ड्रामा का ऐसा संगम होगा, जो पहले भारतीय दर्शकों ने कभी बड़े पर्दे पर नहीं देखा. इस अनोखी और एक्सपेरिमेंटल फिल्म का निर्माण ख्याति मदान की नॉट आउट एंटरटेनमेंट और प्रशांत गुंजालकर मिलकर कर रहे हैं. फिल्म के निर्देशक हैं प्रतीक ग्राहम, जिन्होंने वेब सीरीज़ 'घोल' का निर्देशन

किया था और जिन्हें अपनी अलग सिनेमैटिक स्टाइल और डार्क नैरेटिव्स के लिए जाना जाता है. प्रतीक का नाम जुड़ने से फिल्म को लेकर इंडस्ट्री के अंदर भी उत्सुकता काफी बढ़ गई है. हालांकि निर्माताओं ने अभी तक फिल्म के शीर्षक की घोषणा नहीं की है, लेकिन सूत्रों के मुताबिक यह कहानी बेहद दमदार और इमोशनल होने के साथ-साथ दर्शकों को रीढ़ की हड्डी तक सिहरन महसूस कराने वाली साबित होगी. अहान शेट्टी इस फिल्म में एक गहन और चुनौतीपूर्ण किरदार निभाने जा रहे हैं, जो उनके करियर का टर्निंग पॉइंट साबित हो सकता है. जहां 'बॉर्डर 2' में अहान देशभक्ति और एक्शन से भरपूर अंदाज़ में दिखाई देंगे, वहीं इस फिल्म में उनका बिल्कुल नया और अनदेखा अवतार सामने आएगा.

राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा
मोबाइल नंबर
8210075897

मेष : जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा. व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी. शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा. कामकाज की अधिकता रहेगी. व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेंगी. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. अर्थपक्ष मजबूत रहेगा. धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी. शुभांक-7-8-9

वृष : कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा. प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा. अवरुद्घ कार्य संपन्न हो जाएंगे. मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी. श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी. यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा. आनन्ददायक वातावरण बनेगा. शुभांक-2-7-9

मिथुन : कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे. होश में रहकर कार्य करें. कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे. स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा. कुछ आर्थिक संकोच पैदा हो सकते है. शुभांक-3-7-9

कर्क : राजकीय कार्यों से लाभ. पैतृक सम्पत्ति से लाभ. कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें. शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे. स्वास्थ्य उत्तम रहेगा. व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी. श्रम साध्य कार्यों में सफल होंगे. कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी. शुभांक-4-8-9

सिंह : व्यापार में स्थिति नरम रहेगी. शत्रुभय, इक्षचता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे. भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा. कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे. सिर्फ आश्वासनों से संतोष करना पड़ेगा. शुभांक-3-6-8

कन्या : मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी. समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा. यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा. कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे. सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बनेगी. शुभांक-4-5-9

तुला : नवीन जिम्मेदारी बढने के आसार रहेंगे. यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा. मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी. अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी. समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा. परिवारजनों का सहयोग बना रहेगा. मेहमानों का आगमन होगा. शुभांक-3-7-9

वृश्चिक : पुरानी गलती का पश्चाताप होगा. पैतृक सम्पत्ति से लाभ. मेहमानों का आगमन होगा. विद्यार्थियों को लाभ. दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा. ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं. राजकीय कार्यों से लाभ. धीरे-धीरे लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा उचित समय का इन्तजार करें. शुभांक-2-7-8

धनु : आय के अच्छे योग बनेंगे. संतान की उन्नति के योग हैं. स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा. आत्मइक्षचतन करें. पुराने मित्र से मिलन होगा. स्वविवेक से कार्य करें. शत्रुपक्ष से सावधान रहें. भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा. आत्मविश्वास बढ़ेगा. अर्थपक्ष मजबूत रहेगा. इच्छित कार्य सफल होंगे. शुभांक-3-6-9

मकर : आगे-आगे गौरख जागे वाली कहावत चरितार्थ होगी. मेहमानों का आगमन होगा. परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा. अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा. कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा. मीठे बोलने वालों से संभल कर रहें. शुभांक-4-6-8

कुंभ : पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे. ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं. महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा. शुभ कार्यों में व्यय होगा. जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिलेगा. मान-सम्मान बढ़ेगा. शुभांक-1-3-7

मीन : लाभ में आशातीत वृद्घि तय है मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं. विशिष्ट जनों से मेल-मुलाकात होगी. व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी. आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी. स्वास्थ्य मध्यम होगा. व्यापार में स्थिति नरम रहेगी. आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी. शुभांक-1-5-9

ब्लोटिंग और गैस के लिए बासी मुंह चबाएं आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों के पत्ते

क्या आपका पेट हमेशा भरा-भरा और फूला हुआ रहता है, क्या आपको थोड़ा सा खाते ही गैस बनने लगती है? अगर हां, तो पेट से जुड़ी इन समस्याओं के लिए अब आपको दवाएं लेने की जरूरत नहीं है। इन समस्याओं के इलाज के लिए आप अपने आसापास मिलने वाले पुदीने की तरह कुछ औषधीय पत्ते चबा सकते हैं।

पेट फूलने की समस्या को मेडिकल भाषा में ब्लोटिंग कहते हैं। इसकी वजह से आपको पेट में गैस महसूस हो सकती है और उसके साथ पेट में ऐंठन, दर्द और सूजन महसूस हो सकती है। दरअसल इस स्थिति में पेट में हवा भर जाती है जिससे पेट हमेशा भरा-भरा महसूस होता है। इसकी वजह से आपको कम भूख लगती है या थोड़ा सा खाते ही पेट भर जाता है। देर तक बैठे रहना, पुराना कब्ज कार्बोनेट ड्रिंक्स पीना एक साथ बहुत ज्यादा भोजन करना आदि इसके कारण हो सकते हैं। बेशक यह समस्या इतनी गंभीर नहीं है लेकिन अगर इसका समय से इलाज नहीं किया गया, तो आपको कई घातक समस्याएं हो सकती हैं। ब्लोटिंग और गैस के लिए वैसे तो कई दवाएं उपलब्ध हैं लेकिन कुछ आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों के पत्ते चबाने से आपको तुरंत राहत मिल सकती है।

सौंफ के पत्ते

सौंफ का उपयोग पारंपरिक रूप से पेट दर्द, सूजन, गैस और कब्ज सहित कई पाचन विकारों के लिए किया जाता है। सौंफ के पत्ते चबाने से अल्सर को रोकने और पेट फूलना कम हो सकता है। इन हरे पत्तों में सूजन और कब्ज के लक्षणों को कम करने की क्षमता होती है।

अजवाइन के पत्ते

जो लोग खाने के बाद लगातार सूजन या भारीपन का अनुभव करते हैं, उनके लिए अजवाइन की पत्तियां बेहतर उपचार हैं। अजवाइन के पत्ते पाचन में सुधार, चयापचय को बढ़ावा देने, अम्लता को दूर करने और गैस से राहत दिलाने में मदद कर सकते हैं।

करी पत्ते

खाली पेट करी पत्ते का सेवन विशेष रूप से बेहतर पाचन स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है। जब खाली पेट इसका सेवन किया जाता है, तो करी पत्ता पाचन एंजाइमों को उत्तेजित करता है और मल त्याग का समर्थन करता है। यह आपको कब्ज से राहत दिलाने में भी मदद कर सकता है।

पुदीना के पत्ते

पुदीने की हरी पत्तियों के ठंडे और ताज़गी देने वाले गुण सूजन को ठीक करने का सबसे अच्छा उपाय है। पुदीना सूजन और पाचन संबंधी समस्याओं को जल्द से जल्द दूर करता है। इसमें पेट की ऐंठन को कम करने की क्षमता होती है। अगर आपको हमेशा गैस या पेट फूलने की समस्या रहती है, तो आप रोजाना सुबह कुछ पत्ते चबा सकते हैं या फिर पुदीने की चाय पी सकते हैं।

जामुन के पत्ते

जामुन के पत्तों में पाचन वाले गुण होते हैं और यह सभी पाचन समस्याओं के लिए एक बेहतर औषधि है। इसके एंटी-फ्लैटुलेंट गुण एलिमेंटरी कैनाल में गैस को कम करने में मदद करते हैं, जिससे पेट फूलना, कब्ज और सूजन को कम करने में मदद मिलती है। इसमें एंटासिड गुण होते हैं जो पेट में अत्यधिक एसिड के निर्माण को रोकते हैं और इस तरह अपच, अल्सर और गैस्ट्राइटिस का इलाज करते हैं।

संपूर्ण स्वास्थ्य को प्रभावित करता है लिवर

दिल, किडनी और फेफड़ों की तरह लिवर भी शरीर का महत्वपूर्ण अंग है। लेकिन जब बात इसके स्वास्थ्य की आती है, तो अक्सर इसे अनदेखा कर दिया जाता है। आपको बता दें कि लिवर एक ऐसा अंग है, जो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए कई तरह के काम करता है। लिवर शरीर का दूसरा सबसे बड़ा अंग है जिसका काम पाचन, चयापचय, विषाक्त पदार्थों को हटाना, पोषक तत्वों का भंडारण करना है। फिटनेस गुरु एंड होलिस्टिक एक्सपर्ट के अनुसार, लिवर संपूर्ण स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए इसे स्वस्थ, साफ और मजबूत रखना जरूरी है। गर्मियों के मौसम में मिलने वाली ऐसी कई चीजें हैं, जिन्हें खाने में शामिल करके आप अपने लिवर को नैचुरली साफ और मजबूत बना सकते हैं।

लिवर के लिए वरदान है नींबू

नींबू को गर्मियों का तोहफा कहा जाता है। इन दिनों शरीर को तरोताजा और स्वस्थ रखने के लिए इससे बेहतर विकल्प कुछ नहीं है। आपको लिवर सही शरीर के सभी अंगों को साफ और स्वस्थ रखने के लिए रोजाना नींबू पानी पीना चाहिए। नींबू विटामिन सी से भरपूर करता है और विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। यह डिहाइड्रेशन को रोकता है और गर्मी के दिनों शरीर को ठंडा रखता है।

लिवर को मजबूत बनाते हैं अंगूर

मीठे और रसीले अंगूर खाना भला कौन पसंद नहीं करता है? अंगूर विटामिन सी और एंटीऑक्सिडेंट का पावरहाउस है। अंगूर लिवर को डिटॉक्स यानी उसकी गंदगी को साफ करने और सूजन से लड़ने में मदद करते हैं।

लिवर की साफ रखने के लिए खाएं दही

गर्मियों में ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए, जो पेट के लिए हल्के होते हैं और दही निश्चित रूप से इस सूची में सबसे ऊपर है। यह हल्का, ठंडा होता है और आपको भीतर से पोषित रखने में मदद करता है। दही प्रोबायोटिक्स का बेहतर स्रोत है। कई अध्ययनों के अनुसार, यह लीवर में फैट को कंट्रोल करता है।

लिवर को स्वस्थ रखेगा लहसुन

लहसुन में एलिसिन और सेलेनियम जैसे यौगिक उच्च मात्रा में होते हैं जो लीवर को किसी भी जहरीले नुकसान से बचाते हैं। रोजाना रात को सोने से पहले लहसुन की दो कलियां लें।

लिवर को स्वस्थ रखने का उपाय- सहजन

हरी सब्जियों में कई तरह के क्लींजिंग कंपाउंड होते हैं, जो लिवर को नैचुरली रूप से साफ करने में मदद करते हैं। ऐसी ही एक लोकप्रिय हरी सब्जी है सहजन। कई जैव रासायनिक परिणामों से पता चला है कि सहजन में लिवर फाइब्रोसिस के लक्षणों को कम करने की क्षमता होती है।

लिवर को मजबूत बनाने का नुस्खा-आंवला

आंवला का आयुर्वेद में व्यापक रूप से उपयोग किया गया है जो लिवर के कार्य को समर्थन देता है और शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। यह लिवर के कामकाज को बेहतर बनाने में भी मदद करता है। एक गिलास गर्म पानी में एक चम्मच सूखे आंवले के पाउडर को मिलाकर सुबह खाली पेट पीने से बेहतर परिणाम मिलते हैं।

लिवर को साफ करता है हल्दी

हल्दी एक अद्भुत मसाला है जो लिवर को डिटॉक्सीफाई करने में मदद करता है। यह एंजाइम को बढ़ावा देने में मदद करता है जो शरीर से आहार विषाक्त पदार्थों को बाहर निकाल सकता है। सुबह सबसे पहले एक गिलास गर्म पानी के साथ आधा चम्मच हल्दी और एक चुटकी काली मिर्च का सेवन करें।

लिवर को स्वस्थ रखने का घरेलू उपाय- ग्रीन टी

ग्रीन टी से शरीर को अनगिनत फायदे होते हैं। यह एंटीऑक्सिडेंट और विटामिन सी का एक बेहतर स्रोत है। वर्ल्ड जर्नल ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, यह शरीर में फैट को कम करने में मदद कर सकती है।

दांतों का पीलापन छुड़ाकर सफेद करेंगी ये 5 चीजें

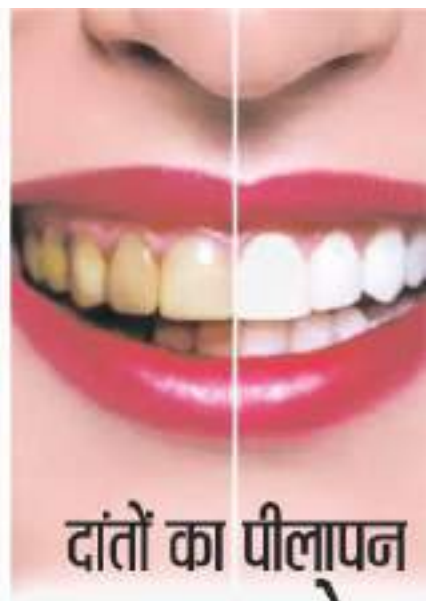

मजबूत और सफेद दांत भला कौन नहीं चाहता है। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, दांत पीले हो जाते हैं। दरअसल पढ़ने और खाने-पीने के एसिड के संपर्क में आने से दांतों की चमकीनी दूर हो जाती है। चमकीनी उस के साथ खाली हो जाती है, जिससे दांत पीले होने लगते हैं। दांतों को सफेद करने के कई इलाज मौजूद हैं लेकिन घरेलू चीजों के जरिए भी पीले दांतों को सफेद मोती जैसे चमकाए जा सकते हैं। खाने-पीने की गलत आदतों और ओरल हाइजीन का ध्यान नहीं रखने की वजह से बहुत से लोगों को दांतों की विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी ही एक गंभीर समस्या दांतों का पीलापन है। जाहिर है दांतों का पीला होना किसी के लिए भी शर्मिंदगी का कारण बन सकता है। वैसे तो दांतों में पिचका गैप या पीलापन रोजाना ब्रश करने से साफ हो जाता है लेकिन कई बार वह मजबूती से चिपक जाता है, जिसे छुड़ाना आसान नहीं होता है। मजबूत और सफेद दांत भला कौन नहीं चाहता है। जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं, दांत पीले हो जाते हैं।

पीले दांतों को सफेद कैसे करें? बेशक दांतों को सफेद करने के कई इलाज मौजूद हैं लेकिन घरेलू चीजों के जरिए भी पीले दांतों को सफेद मोती जैसे चमकाए जा सकते हैं। हम आपको दांतों का पीलापन हटाने के लिए घरेलू उपाय बता रहे हैं, जिनसे आपको डेंटिस्ट के पास जाए बिना दांतों को मजबूत और उनका पीलापन हटाने में मदद मिल सकती है।

कोको पाउडर

इसके लिए आपको कोको पाउडर और पानी या नारियल का तेल चाहिए। सबसे पहले कोको पाउडर को नारियल के तेल या पानी के साथ मिलाएं। इसका एक पेस्ट बना लें। इस मिश्रण से अपने दांतों को हमेशा की तरह ब्रश करें।

नीम के पत्ते

इसके लिए आपको नीम के पत्ते और पानी चाहिए। सबसे पहले नीम के पत्तों को पानी के बर्तन में उबालने के लिए रख दें। इसे छान लें ताकि तरल साफ हो जाए। इसे ठंडा होने दें और इस घोल से गरारे करें।

एप्सम साल्ट

नमक और पानी को बराबर भागों में मिला लें। तब तक हिलाएं जब तक कि नमक पूरी तरह से घुल न जाए। इस मिश्रण को टूथब्रश से अपने दांतों पर लगाएं। आप इससे गरारे भी कर सकते हैं और फिर साफ पानी से अपना मुंह धो लें।

अदरक और नमक

अदरक के एक छोटे टुकड़े को पीस लें। या इसे कद्दूकस भी किया जा सकता है। 1/4 छोटा चम्मच नमक लेकर अदरक में डाल दें। नींबू का एक टुकड़ा काटें, मिश्रण में रस निचोड़ें और फिर से अच्छी तरह मिक्स कर लें। इसे टूथब्रश से दांतों पर लगाएं।

पुदीने के पत्ते और नारियल का तेल

पुदीने के पत्तों को पीसकर नारियल के तेल में मिला लें। अच्छी तरह मिलाएं और इस मिश्रण को टूथब्रश से अपने दांतों पर लगाएं। पुदीने का अधिक प्रयोग न करें, 3-5 पत्ते पर्याप्त हैं।

कैल्शियम पचाने के लिए जरूरी है विटामिन डी

बेशक हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए कैल्शियम जरूरी है लेकिन इसे जल्दी पचाने के लिए विटामिन डी भी जरूरी है, सुबह की धूप के अलावा कई खाने की चीजों में यह पोषक तत्व पाया जाता है।

हड्डियों का कमजोर होना आपके पूरे शरीर के लिए खतरे की घंटी है। आपका पूरा शरीर हड्डियों के ढांचे पर टिका हुआ है। हड्डियों में किसी भी तरह कमजोरी आपको मोहताज बना सकती है। यही वजह है कि हड्डियों की देखभाल के लिए हर संभव उपाय करने चाहिए। हड्डियों की सेहत खराब होने से आपको रिकेट्स और ऑस्टियोपोरोसिस जैसी खतरनाक बीमारियों का खतरा हो सकता है और गुजरते समय के साथ हड्डी टूटने का खतरा बढ़ सकता है। आपकी हड्डियों को स्वस्थ और मजबूत रखने के लिए पर्याप्त कैल्शियम और आपके शरीर को कैल्शियम को अवशोषित करने में मदद करने के लिए विटामिन-डी की जरूरत होती है। इसका मतलब यह है कि आपको कैल्शियम के अलावा विटामिन-डी से भरपूर खाद्य पदार्थों का भी खूब सेवन करना चाहिए।

रोजाना कितने कैल्शियम की जरूरत होती है?

विटामिन-डी से पहले आपको यह जानना जरूरी है कि हड्डियों को स्वस्थ रखने के लिए आपको रोजाना कितने कैल्शियम की जरूरत है। एक रिपोर्ट के अनुसार, वयस्कों को एक दिन में 700mg कैल्शियम की आवश्यकता होती है।

रोजाना कितने विटामिन-डी की जरूरत

वयस्कों को एक दिन में विटामिन-डी की 10 माइक्रोग्राम (400 इंटरनेशनल यूनिट या आईयू) की आवश्यकता होती है। विटामिन डी को खाद्य पदार्थों से प्राप्त करना मुश्किल है इसलिए आप इसे सुबह की धूप से भी प्राप्त कर सकते हैं।

अंडे की जर्दी

अंडे प्रोटीन और कैल्शियम के अलावा विटामिन डी का भी बढ़िया स्रोत है। एक बड़े अंडे की जर्दी 36.7 IU विटामिन डी प्रदान करती है। आप अपने दिन की शुरुआत दो अंडों के साथ कर सकते हैं।

संतरे का रस

इसके लिए आप फोर्टिफाइड ओरेंज जूस ले सकते हैं जिससे आपको 33.4 IU विटामिन डी मिल सकता है। हालांकि सभी फोर्टिफाइड फूड्स में विटामिन डी की मात्रा उतनी अधिक नहीं होती है, जितनी फिश में होती है।

गाय का दूध

8-औंस रिकम्ड गाय के दूध के गिलास से आपको 107.5 IU विटामिन डी मिल सकता है जबकि सोया दूध की इतनी ही मात्रा से आपको 97.6 IU विटामिन डी मिल सकता है।

विटामिन डी के लिए खाएं मशरूम

मशरूम उन लोगों के लिए विटामिन डी का सबसे बढ़िया स्रोत है, जो पशु उत्पाद नहीं खाते हैं। बेशक इसमें बहुत ज्यादा नहीं है लेकिन 100 ग्राम मशरूम (लगभग एक कप) से आपको 8 IU विटामिन डी मिल सकता है।

जिसकी मौत से खेल की दुनिया दंग थी, अब वह हर मैदान पर बिखेरेगा जादू

एजेंसियां। नयी दिल्ली

तुम्हारे बिना यह युद्ध निरर्थक है... महाभारत में दुर्योधन ने यह तब कहा जब दानवीर कर्ण की मौत का समाचार उसके पास पहुंचा. युद्ध भूमि में उसके पांव थरथरा रहे थे तो दुनिया जीतने का बल एक झटके में टूट कर बिखर चुका था. 100 हाथियों की ताकत धराशायी हो चुकी थी. वहीं, मशहूर शायर जौन एलिया अपने अजीज दोस्त सलीम जाफरी के निधन के बाद कहते हैं- सलीम बेहर ए फना में उतर गया है तू, खुशी यह है मुझे बर्बाद कर गया है तू. बहुत कमीन बहुत ही जलील निकला तू, क्या कातिल ए दिल ओ जान का वकील निकला तू. तुझे नबूत की गजलें सुनाने वाला हूं, मैं तेरे पास बहुत जल्द आने वाला हूं...! कुछ ऐसा ही हाल रुबेन नेवेस का हुआ. दोस्त डियोगो जोटा की अचानक मौत से उनकी दुनिया ही उजड़ गई. यूं ही नहीं कहा जाता है कि दोस्त और दोस्ती, ये सिर्फ शब्द नहीं

दोस्त ने अद्भुत अंदाज में अमर कर दिया

हैं, ये ऐसी भावनाएं हैं, जिन्हें शब्दों में बांध पाना असंभव है. यहां खून का रिश्ता नहीं होता, बावजूद इसके दोस्ती सबसे महान रिश्ता है. पेश है डियोगो जोटडा और उनके दोस्त रुबेन नेवेस की कहानी. साथ ही जानेंगे कि मौत के बावजूद डियोगो किस तरह दुनियाभर में जिंदा रहेंगे और किसी और के शरीर पर अपना जादू बिखेरते नजर आएंगे.

फ्लैशबैक में जाएं तो एक ही सीजन में डियोगो ने पुर्तगाल के साथ यूएफा नेशंस लीग का खिताब जीता. लिवरपूल के साथ इंग्लिश प्रीमियर लीग जीती. लॉन्ग टाइम गर्लफ्रेंड से रचाई शादी. उन तमाम सपनों को पूरा किया, जिसे देखा था, जिसे पूरा करने का वादा किया था. ऐसा लगा, जैसे उन्हें अपनी मौत का अंदाजा पहले ही

डियोगो जोटा के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातें

- डियोगो जोटा ने अपने करियर की शुरुआत पुर्तगाल के क्लब पाकोस डे फेरेरा से की थी, जहां उन्होंने अपनी प्रतिभा से सबका ध्यान खींचा.
- पुर्तगाल में सफल होने के बाद वह स्पेन के दिग्गज क्लब एटलेटिको मैड्रिड चले गए. इसके बाद उन्होंने इंग्लैंड में वॉल्वरहैम्प्टन वांडरर्स (वुल्स) को जॉइन किया.
- वॉल्स में उनका प्रदर्शन बहुत प्रभावशाली रहा. उन्होंने अपनी स्पीड और गोल करने की क्षमता से टीम को प्रीमियर लीग में वापस लाने में मदद की.
- सितंबर 2020 में जोटा ने लिवरपूल क्लब को जॉइन किया. यह उनके करियर का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव था. लिवरपूल में उन्होंने अपने पहले चार होम मैचों में गोल करके एक नया रिकॉर्ड बनाया.
- वह लिवरपूल के उस टीम का एक अहम हिस्सा थे जिसने 2021-22 में एफए कप और लीग कप जीता था. लिवरपूल के लिए उन्होंने कुल 182 मैचों में 65 गोल और 28 असिस्ट किए.
- जोटा ने पुर्तगाल की राष्ट्रीय टीम के लिए भी शानदार प्रदर्शन किया. वह उस पुर्तगाल टीम का हिस्सा थे जिसने 2018-19 और 2024-25 में यूईएफए नेशंस लीग का खिताब जीता था.
- उन्होंने अपने देश के लिए लगभग 50 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले. इस दौरान उन्होंने हर मुश्किल परिस्थिति में खुद को साबित किया और टीम को जीत दिलाई.

हो गया था. वह किसी सपने को अधूरा नहीं छोड़ना चाहते थे. इसी बीच, वाइफ के हाथों में शादी की मेहंदी की लाली अभी धूमिल भी नहीं हुई थी कि 10 दिन के अंदर ही एक कार क्रैश की खबर आती है और दुनिया एक बेहतरीन फुटबॉलर को खो देता है. वह दिन था, 3 जुलाई 2025, जिसे हर साल फुटबॉल फैंस के बीच पुर्तगाल में 'ब्लैक डे' के रूप में मनाया जाएगा.

टूट के बिखर गए थे रुबेन नेवेस : यहां से रुबेन की कहानी का आगाज होता है. पुर्तगाल के फुटबॉलर रुबेन नेवेस लीवरपूल के स्ट्राइकर डियोगो जोटा के सबसे खास दोस्त थे. जोटा और नेवेस पुर्तगाल, एफसी पोर्टो और वुल्व्स के लिए साथ में फुटबॉल खेले. जब डियोगो जोटा के निधन की खबर सामने आई तो पूरा फुटबॉल जगत हिल गया था. रुबेन नेवेस उस वक्त अल हिलाल के लिए क्लब वर्ल्ड कप में खेल रहे थे. वह 12 घंटे के भीतर ही डियोगो जोटा के फ्यूनरल में पहुंच गए थे. नेवेस टूट गए थे. जब जोटा को फुटबॉल मैच के दौरान श्रद्धांजलि दी जा रही थी तो नेवेस के आंसू नहीं रुक रहे थे.

झर-झर बहते आंसुओं के सैलाब में भावनाएं उमड़ रही थीं. दुनिया उनकी भावनाओं के आगे मजबूर थी. रूबेन नेवेस ने डियोगो जोटा के निधन के बाद उनके लिए एक पोस्ट भी इंस्टाग्राम पर शेयर की थी, जिसके नीचे उन्होंने काफी इमोशनल कैप्शन लिखी थी. आइए, आपको बताते हैं उन्होंने क्या लिखा था बग, इस वक्त तुम जहां भी हो मुझे पता है यह पढ़ोगे. हम इतने लेम नहीं थे और अब मुझे इस चीज का थोड़ा खेद है. पर तुम जानते हो तुम मेरे लिए कितना मायने रखते हो, जितना मैं जानता हूं कि मैं तुम्हारे लिए क्या हूं. दोस्त से ज्यादा हम परिवार थे. हम इसे नहीं रोकेंगे, भले ही तुमने हमसे दूर का कॉन्ट्रैक्ट साइन कर लिया हो. जब मैं सिलेक्शन के लिए जाऊंगा, तुम मेरे साथ डिनर टेबल, बस, प्लेन... हर जगह तुम मेरे साथ होगे.

रुबेन नेवेस ने बनवाया जोटा के लिए खास टैटू : अब रुबेन नेवेस ने डियोगो जोटा के लिए अपने लेफ्ट काफ पर एक टैटू बनवाया है. उस टैटू में नेवेस जोटा को गले लगाते हुए नजर आ रहे हैं. इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि जोटा उनके दिल के कितने करीब थे. जोटा के अलावा उनके भाई का भी उस कार एक्सीडेंट में निधन हो गया था. डियागो जोटा अपनी गति, गोल करने की क्षमता और मैदान पर अपनी चतुराई के लिए जाने जाते थे. उनका करियर भले ही छोटा रहा, लेकिन उन्होंने फुटबॉल की दुनिया पर एक गहरी छाप छोड़ी. सिर्फ 28 साल की उम्र में उन्होंने उन तमाम उपलब्धियों को हासिल किया, जिसकी उन्हें चाहत थी और दोस्त के शरीर पर बने टैटू से वह दुनियाभर में अपनी मौजूदगी दर्ज कराते रहेंगे.

भारत सीएएफए नेशंस कप के तीसरे स्थान के प्लेऑफ़ में पहुंचा

हिसोर (ताजिकिस्तान) । भारत ने अफगानिस्तान के खिलाफ अंतिम ग्रुप बी मुकाबले में गोलरहित ड्रॉ खेलने के बाद सीएएफए नेशंस कप 2025 के तीसरे स्थान के प्लेऑफ़ में जगह बना ली. यह मुकाबला ताजिकिस्तान के हिसोर सेंट्रल स्टेडियम में खेला गया. भारत को अपने भविष्य का फैसला जानने के लिए दिन के दूसरे मैच का इंतजार करना पड़ा, जहां ईरान और ताजिकिस्तान 2-2 की बराबरी पर रहे. इस नतीजे से भारत की राह साफ हुई. खालिद जमील की टीम ग्रुप में चार अंकों (एक जीत, एक हार और एक ड्रॉ) के साथ दूसरे स्थान पर रही, जबकि ईरान ने सात अंकों के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया. मेजबान ताजिकिस्तान भी चार अंकों पर रहा, लेकिन भारत ने उसे पहले मैच में 2-1 से हराया था, जिसके चलते हेड-टू-हेड रिकॉर्ड बेहतर होने से भारत आगे निकल गया. अफगानिस्तान एक अंक के साथ बाहर हो गया. अब भारत 8 सितंबर को हिसोर सेंट्रल स्टेडियम में तीसरे स्थान के लिए मुकाबला खेलेगा. भारत का सामना ग्रुप ए की दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम से होगा. फिलहाल ओमान और उज़्बेकिस्तान चार-चार अंकों के साथ शीर्ष दो स्थानों पर काबिज हैं. दोनों का गोल अंतर (+1) और दो मैचों में तीन-तीन गोल समान है.

सूर्यकुमार यादव सबसे हाई! टी20 में बरसाए सबसे ज्यादा छक्के

बुमराह ने राशिद को पछाड़ा

एजेंसियां। नयी दिल्ली

एशिया कप की शुरुआत में अब एक हफ्ते से कम का वक्त बचा है. नौ सितंबर से आठ टीमों के बीच ट्रॉफी की जंग शुरू हो जाएगा. भारत अपने अभियान का आगाज 10 सितंबर से यूएई के खिलाफ मैच से करेगा. आगामी टूर्नामेंट में भारत के नेतृत्व की जिम्मेदारी सूर्यकुमार यादव के कंधों पर है, जिनका जोश हमेशा से हाई रहता है. वह विपक्षी टीमों के लिए किसी काल से कम नहीं हैं. वहीं, भारतीय गेंदबाजी आक्रमण का जिम्मा जसप्रीत बुमराह करेंगे. उनकी टीम में मौजूदगी ही विपक्षी टीमों के लिए किसी खौफनाक साए से कम नहीं है. यह बात हम नहीं...बल्कि आंकड़े कह रहे हैं.

भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव इस प्रारूप के बादशाह हैं. दाएं हाथ के बल्लेबाज ने अपनी ताबड़तोड़ बल्लेबाज से कई बार इसे साबित भी किया है. उन्होंने दमदार पारियों की मदद से संदेश दिया है कि किसी गेंदबाज का उनके आगे टिकना कितना मुश्किल है. आंकड़ों पर नजर डालें तो, 34 वर्षीय बल्लेबाज ने 2021 से अब तक टी20 अंतरराष्ट्रीय में सर्वाधिक छक्के लगाए हैं. उनके नाम 146 छक्के दर्ज हैं. इस मामले में दूसरे स्थान पर निकोलस पूरन हैं, जिन्होंने 130 छक्के ठोके. तीसरे स्थान पर जिम्बाब्वे के सिकंदर रजा और वेस्टइंडीज के रोवमैन पॉवेल संयुक्त रूप से मौजूद हैं. दोनों के नाम 112 छक्के दर्ज हैं. चौथे पायदान पर इंग्लैंड के धमाकेदार बल्लेबाज जोस बटलर हैं, जिन्होंने 96 छक्के लगाए हैं. अब एशिया कप में प्रशंसकों को सूर्यकुमार यादव से दमदार प्रदर्शन की उम्मीद है.

बुमराह क्यों हैं सबसे घातक : भारतीय टीम के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपनी किफायती गेंदबाज से अच्छे अच्छों को पीछे छोड़ दिया है. उन्होंने 2021 से अब तक इस प्रारूप में कुल 30 विकेट झटके हैं और उनका गेंदबाजी औसत 12.8 व इकोनॉमी रेट केवल 5.3 रहा है. बुमराह के बाद अफगानिस्तान के स्टार स्पिनर राशिद खान दूसरे स्थान पर हैं, जिन्होंने 78 विकेट चटकाए और उनका इकोनॉमी रेट 6.0 रहा. तीसरे नंबर पर ऑस्ट्रेलिया के एश्टन एगर हैं जिन्होंने 26.5 के औसत और 6.1 की इकोनॉमी से 19 विकेट झटके हैं. पाकिस्तान के इमाद वसीम चौथे स्थान पर हैं. उन्होंने कुल 26 विकेट 19.9 के औसत और 6.2 के इकोनॉमी रेट से झटके हैं. पांचवें पायदान पर भारत के स्टार स्पिनर कुलदीप यादव हैं, जिन्होंने कुल 30 विकेट हासिल किए हैं. उनका गेंदबाजी औसत 14.5 का रहा है जबकि इकोनॉमी 6.4 की रही है.

2021 से टी20 अंतरराष्ट्रीय में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज

खिलाड़ी	छक्के
सूर्यकुमार यादव (भारत)	146
निकोलस पूरन (वेस्टइंडीज)	130
सिकंदर रजा (जिम्बाब्वे)	112
रोवमैन पॉवेल (जमैका)	112
जोस बटलर (इंग्लैंड)	96

टी20 अंतरराष्ट्रीय में किफायती गेंदबाज

गेंदबाज	विकेट	औसत	इकोनॉमी
जसप्रीत बुमराह (भारत)	30	12.8	5.3
राशिद खान (अफगानिस्तान)	78	15.1	6.0
एश्टन एगर (ऑस्ट्रेलिया)	19	26.5	6.1
इमाद वसीम (पाकिस्तान)	26	19.9	6.2
कुलदीप यादव (भारत)	30	14.5	6.4

युवराज ने अभिषेक और गिल को दी अनोखी सलाह

गोल्फ खेलो, इससे बना पाओगे ज्यादा रन

एजेंसियां। नयी दिल्ली

भारतीय टीम के पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने शुभमन गिल और अभिषेक शर्मा को अनोखी सलाह दी है. युवराज का कहना है कि अगर ये दोनों खिलाड़ी गोल्फ खेलेंगे तो इससे वे अधिक रन बना पाएंगे. गिल और अभिषेक नौ सितंबर से होने वाले एशिया कप के लिए भारतीय टीम का हिस्सा हैं. युवराज का मानना है कि अगर वह गोल्फ खेलते तो अपने करियर में 3000 रन और बना सकते थे.

कपिल के बयान पर जताई सहमति : पूर्व भारतीय कप्तान कपिल देव ने क्रिकेट करियर पर गोल्फ के प्रभाव पर जोर देते हुए पहले कहा था कि जब वह क्रिकेट खेलते थे, तब उन्होंने गोल्फ खेला होता तो वे क्रिकेट में अतिरिक्त 2000 रन बना सकते थे. युवराज ने शुक्रवार को आईजीपीएल टूर कार्यक्रम के लॉन्च के दौरान कहा, मैं कपिल पाजी से सहमत हूं, उन्होंने 2000 कहा था पर मैं 3000 और रन बना सकता था. अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में नियम बदल गए हैं. क्रिकेट में आपको दूसरा मौका नहीं मिलता. गोल्फ में आप एक खराब शॉट खेलते हैं, फिर भी आप एक अच्छा शॉट मारकर वापसी कर

सकते हैं. युवराज ने कहा, अगर आप आउट हो जाते हैं तो आप कमरे में बैठकर अगले मैच के बारे में सोचते रहते हैं. लेकिन अगर मैच का दूसरा दिन होता तो आप आउट होकर अपने दोस्तों के साथ गोल्फ खेल सकते हैं. आप किसी मैच में तरोताजा होकर जाते हैं. कभी कभार कोई दूसरा खेल खेलना और फिर तरोताजा होकर वापस आना अच्छा होता है. मैं सभी युवा क्रिकेटरों से कहता हूं कि गोल्फ खेलने की कोशिश करो, गेंद को हिट करो, देखो कैसा महसूस होता है क्योंकि कभी कभी बहुत ज्यादा अभ्यास भी आपके लिए अच्छा नहीं होता है.

युवराज बोले- सभी को गोल्फ खेलने के लिए प्रोत्साहित करता हूं : यह पूछने पर कि क्या उन्होंने अपने शिष्यों (गिल और अभिषेक) को क्रिकेट टूर्नामेंट के दौरान गोल्फ खेलने के लिए कहा है? इस पर युवराज ने कहा, मैंने उन्हें गोल्फ खेलने के लिए कहा है और मैं उन्हें खेलने के लिए प्रोत्साहित करता हूं. समय निकालना बहुत मुश्किल है, लेकिन मुझे लगता है कि आईपीएल के दौरान वे समय निकाल सकते हैं. यह उन पर निर्भर करता है. अब वे खेल के सुपरस्टार हैं और उन्हें यह तय करना होगा कि उन्हें बेहतर बनने में क्या मदद करेगा. अगर गोल्फ कुछ कर सकता है तो उन्हें यह तय करना होगा. लेकिन मैं सभी खिलाड़ियों को गोल्फ खेलने के लिए प्रोत्साहित करता हूं. मुझे लगता है कि यह तनाव दूर करने का एक शानदार तरीका है और यह दिमाग के लिए बहुत अच्छा है.

लियोनेल मेसी के दो गोल की बदौलत अर्जेंटीना ने वेनेजुएला को 3-0 से हराया

एजेंसियां। ब्यूनस आयर्स

लियोनेल मेसी ने दो शानदार गोल दागे, जिसकी बदौलत अर्जेंटीना ने गुरुवार (भारतीय समयानुसार शुक्रवार) को वेनेजुएला को 3-0 से हराकर अपने आखिरी घरेलू विश्व कप क्वालिफायर मुकाबले को यादगार बना दिया. 38 वर्षीय मेसी ने भले ही संन्यास की तारीख साफ नहीं की है, लेकिन उन्होंने पहले ही यह संकेत दे दिया था कि वेनेजुएला के खिलाफ यह मुकाबला उनका घरेलू जमीन पर आखिरी विश्व कप क्वालिफायर होगा. पहले से ही अगले साल उत्तर अमेरिका में होने वाले विश्व कप के लिए क्वालिफाई कर चुकी मौजूदा विश्व चैंपियन अर्जेंटीना ने शुरुआत से ही मुकाबले पर दबदबा बनाए रखा. निकोलस टैगलियाफिको और फ्रैंको मास्तांतूनो ने शुरुआती मौके बनाए लेकिन वेनेजुएला के गोलकीपर राफेल रोमो ने उन्हें रोक दिया.

39वें मिनट में मेसी ने कप्तानी अंदाज में जूलियन अल्वारेज़ के पास पर तेज़ काउंटर-अटैक से गोल करते हुए अर्जेंटीना को बढ़त

दिलाई.दूसरे हाफ में भी अर्जेंटीना का दबदबा कायम रहा. 76वें मिनट में निको गोंजालेज़ के क्रॉस पर लाउटारो मार्टिनेज़ ने डाइविंग हेडर से दूसरा गोल दागा. मात्र चार मिनट बाद थियागो अल्माडा के असिस्ट पर मेसी ने एक और गोल कर स्कोर 3-0 कर दिया. इस जीत के साथ अर्जेंटीना 38 अंकों के साथ 2026 विश्व कप दक्षिण अमेरिकी क्वालिफाइंग तालिका में शीर्ष पर है. अब टीम मंगलवार को इक्वाडोर के खिलाफ अपना अंतिम ग्रुप मैच खेलेगी. वहीं, वेनेजुएला अपने घरेलू मैदान पर कोलंबिया के खिलाफ मुकाबले में क्वालिफिकेशन की उम्मीदें बरकरार रखने की कोशिश करेगा.

यूएस ओपन 2025: सबालेंका ने जेसिका को हरा कर फाइनल में बनाई जगह

एजेंसियां। न्यूयॉर्क

वर्ल्ड नंबर -1 आर्यना सबालेंका ने शानदार वापसी करते हुए अमेरिकी स्टार जेसिका पेगुला को हराकर यूएस ओपन 2025 के फाइनल में प्रवेश कर लिया. भारतीय समयानुसार शुक्रवार को खेले गए सेमीफाइनल मुकाबले में बेलारूस की खिलाड़ी ने 4-6, 6-3, 6-4 से जीत दर्ज की. पिछले साल के फाइनल का रीमैच माने जा रहे इस मुकाबले में सबालेंका की शुरुआत कमजोर रही. पहला सेट गंवाने के बाद उन्होंने जबरदस्त अंदाज में वापसी की और 43 विनर्स व आठ ऐस की मदद से घरेलू दर्शकों के बीच पेगुला पर दबाव बना दिया.

पेगुला ने पहले सेट में शानदार प्रदर्शन करते हुए केवल तीन अनफोर्स्ड एरर किए और शुरुआती ब्रेक एक्सचेंज के बाद बढ़त हासिल कर ली. लेकिन दूसरे सेट से सबालेंका नए आत्मविश्वास के साथ कोर्ट पर लौटीं. उन्होंने लगातार तीन गेम जीते और अपने आक्रामक खेल से मैच का रुख बदल दिया. निर्णायक

सेट में सबालेंका ने पहले ही गेम में ब्रेक किया और छठे गेम में तीन ब्रेक पॉइंट बचाकर अपनी दृढ़ता दिखाई. हालांकि पेगुला ने दो मैच प्वाइंट बचाकर मुकाबले को और रोमांचक बना दिया, लेकिन सबालेंका ने फोरहैंड विनर के साथ जीत सुनिश्चित की और जोरदार जश्न मनाया. फाइनल में अब सबालेंका का सामना जापान की चार बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन नाओमी ओसाका और अमेरिका की आठवीं वरीय अमांडा अनीसिमोवा के बीच होने वाले विजेता से होगा.

ऑस्ट्रेलिया की महिला विश्व कप टीम में सोफी मोलिन्यूक्स की वापसी

एजेंसियां। मेलबर्न

ऑस्ट्रेलिया ने महिला वनडे विश्व कप 2025 के लिए अपनी टीम की घोषणा कर दी है, जिसमें बाएं हाथ की स्पिनर सोफी मोलिन्यूक्स की वापसी हुई है. मोलिन्यूक्स लंबे समय से चोट के कारण बाहर थीं और इसी साल जनवरी में उनके घुटने का ऑपरेशन हुआ था. हालांकि वह भारत के खिलाफ होने वाली वनडे सीरीज़ से बाहर रह सकती हैं, लेकिन उम्मीद है कि विश्व कप (30 सितंबर से) तक वह पूरी तरह फिट हो जाएंगी. टीम को डार्सी ब्राउन (क्वाड इंजरी) और जॉर्जिया वेयरहम (ग्रोइन इंजरी) की भी वापसी से मजबूती मिली है. वहीं, एलिसा हीली ने भी पिछले महीने ऑस्ट्रेलिया 'ए' टीम के लिए वापसी कर फिटनेस हासिल कर ली है. टीम फिजियो केट बीरवर्थ ने कहा, "सोफी मोलिन्यूक्स रिकवरी में अच्छा कर रही हैं और हमें उम्मीद है कि वह विश्व कप के लिए तैयार रहेंगी. एलिसा हीली और जॉर्जिया वेयरहम भी अब पूरी तरह से ट्रेनिंग में वापसी कर चुकी हैं." मोलिन्यूक्स के साथ ही पहली बार 50

ओवरों के विश्व कप के लिए चुनी गई खिलाड़ियों में फीबी लिचफील्ड, जॉर्जिया वोल, जॉर्जिया वेयरहम और किम गार्थ शामिल हैं. वहीं, ग्रेस हैरिस को मौका मिला तो वह भी पहली बार वनडे विश्व कप में उतरेंगी. ऑस्ट्रेलिया का स्पिन विभाग अब और भी मजबूत हो गया है, जिसमें गार्डनर, अलाना किंग, वेयरहम और मोलिन्यूक्स जैसी स्पिनर शामिल हैं. बल्लेबाज़ी में जॉर्जिया वोल को घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन का इनाम मिला है. भारत के खिलाफ होने वाली तीन वनडे मैचों की सीरीज़ के लिए ऑस्ट्रेलिया ने ऑलराउंडर चार्ली नॉट और विकेटकीपर-बल्लेबाज़ निकोल फाल्टम को भी शामिल किया है. हालांकि, ये दोनों खिलाड़ी विश्व कप से पहले टीम से लौट जाएंगे. राष्ट्रीय चयनकर्ता शॉन फ्लेगलर ने कहा, "हमने हर स्थिति को ध्यान में रखते हुए टीम चुनी है. भारत और श्रीलंका की पिचों पर स्पिनर्स अहम भूमिका निभाएंगे. सोफी मोलिन्यूक्स की प्रगति उत्साहजनक है और हमें भरोसा है कि वह विश्व कप के लिए फिट रहेंगी."गौरतलब है कि ऑस्ट्रेलिया ने 2022 में न्यूजीलैंड में अपना छठा महिला वनडे विश्व कप खिताब जीता था. वह 1 अक्टूबर को इंदौर में न्यूजीलैंड के खिलाफ अभियान की शुरुआत करेगा.

ऑस्ट्रेलिया महिला विश्व कप 2025 टीम : एलिसा हीली (कप्तान), तहलिया मैक्ग्रा (उपकप्तान), डार्सी ब्राउन, एश्ले गार्डनर, किम गार्थ, ग्रेस हैरिस, अलाना किंग, फीबी लिचफील्ड, सोफी मोलिन्यूक्स, बेथ मूनी, एलिस पेरी, मेगन शुट, एन्नाबेल सदरलैंड, जॉर्जिया वोल, जॉर्जिया वेयरहम.

क्रिकेटर शिखर धवन 69 करोड़ रुपये के घर में रहते हैं, लगा है लग्जरी कारों का रेला

बड़ी है नेट वर्थ, अब सट्टेबाजी ऐप केस में फंसे!

एजेंसियां। नयी दिल्ली

भारत के पूर्व क्रिकेटर शिखर धवन को एक कथित अवैध सट्टेबाजी ऐप से जुड़े धन शोधन मामले में पूछताछ के लिए प्रवर्तन निदेशालय के सामने पेश हुए. वह मध्य दिल्ली स्थित निदेशालय के कार्यालय में सुबह 11 बजे पहुंचे. आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि जांच एजेंसी 'वन एक्स बेट' नामक एक अवैध सट्टेबाजी ऐप से जुड़ी इस जांच के तहत धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत उनका बयान दर्ज करेगी. ईडी ने उनसे 8 घंटे तक पूछताछ की. ऐसा माना जा रहा है कि 39 वर्षीय पूर्व भारतीय क्रिकेटर कुछ विज्ञापनों के जरिए इस ऐप से जुड़े हैं.

ईडी पूछताछ के दौरान इस ऐप से उनके संबंधों को समझना चाहता है. एजेंसी अवैध सट्टेबाजी ऐप्स से जुड़े ऐसे कई मामलों की जांच कर रही है जिन पर कई लोगों और निवेशकों से करोड़ों रुपये की ठगी करने या भारी कर चोरी का आरोप है. पिछले महीने पूर्व क्रिकेटर सुरेश रैना से इस मामले में पूछताछ की गई थी. केंद्र सरकार ने हाल ही में एक कानून लाकर वास्तविक धन वाली ऑनलाइन गेमिंग पर प्रतिबंध लगा दिया है. मार्केट विश्लेषण फर्मों और जांच एजेंसियों के अनुसार भारत में 22 करोड़ लोग ऐसे आनलाइन सट्टेबाजी ऐप्स का इस्तेमाल कर रहे हैं जिनमें से आधे नियमित प्रयोग करने वाले हैं.

शिखर धवन को क्यों कहा जाता है मिस्टर आईसीसी : शिखर धवन उन चुनिंदा क्रिकेटरों में शामिल हैं, जिनका आईसीसी इवेंट्स में गजब का रिकॉर्ड रहा है. इस बल्लेबाज को हमेशा बड़े टूर्नामेंटों के हीरो के रूप में याद किया जाता है और उन्हें 'मिस्टर आईसीसी' का तमगा दिया जाता है. धवन के दबदबे का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वह लगातार तीन 50 ओवरों के आईसीसी टूर्नामेंटों में भारत के सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे, जिनमें से दो टूर्नामेंटों में उन्होंने सबसे ज्यादा रन बनाए. धवन ने 2013 चैंपियंस ट्रॉफी में सिर्फ पांच मैचों में 363 रन बनाए, जिससे वह टूर्नामेंट के सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए. उन्होंने 2017 चैंपियंस ट्रॉफी में भी अपनी सफलता दोहराई और 338 रनों के साथ सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे.

धवन ने 2015 विश्व कप में 412 रन बनाए, जो उस टूर्नामेंट में भारत के लिए सबसे ज्यादा रन थे. दुर्भाग्य से 2019 विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शतक बनाने के बाद उन्हें चोट लग गई, जिसके कारण वह बाकी टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे.

शिखर धवन नेट वर्थ कितनी है : एक रिपोर्ट की मानें तो 2024-25 तक धवन की अनुमानित कुल संपत्ति लगभग 145-155 करोड़ रुपये (लगभग 17-18.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर) है. इसमें उनके इंटरनेशनल क्रिकेट करियर, आईपीएल की सैलरी, लीग क्रिकेट से मिले पैसों के अलावा क्यू आईवियर, 1xबैट स्पोर्टिंग लाइन्स, मोटोजीपी इंडिया, टैगज़ फूड्स एंडोर्समेंट के पैसे शामिल हैं. उनके पास रेंज रोवर ऑटोबायोग्राफी, मर्सिडीज-बेंज जीएलएस, बीएमडब्ल्यू एम8, रेंज रोवर वेलार, ऑडी ए6 जैसी लैग्जरी कारें हैं. उनके पास दिल्ली, मुंबई और हरियाणा में शानदार घर है.

दिग्गज क्रिकेटर बन सकता है अगला बीसीसीआई अध्यक्ष

एजेंसियां। नयी दिल्ली

बीसीसीआई का अगला अध्यक्ष कौन बनेगा? ये चर्चा तेज है क्योंकि उम्र के कारण रोजर बिन्नी का कार्यकाल अब खत्म हो चुका है. अगली नियुक्ति तक उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला कार्यकारी अध्यक्ष बन गए हैं. लोढ़ा समिति की सिफारिशों पर सुप्रीम कोर्ट के आए फैसले के बाद जब बीसीसीआई का चुनाव हुआ था तब पूर्व कप्तान सौरव गांगुली को अध्यक्ष बनाया गया था, जय शाह उपाध्यक्ष चुने गए थे. गांगुली के हटने के बाद बिन्नी ने ये पद संभाला था. और अब खबर है कि एक बार फिर कोई बड़ा क्रिकेटर अध्यक्ष बनने की दौड़ में शामिल है.

रोजर बिन्नी के हटने का कारण उनकी उम्र था, वह 70 साल के हो गए हैं. नियमानुसार उन्हें अपना पद छोड़ना पड़ा. सितंबर के आखिरी में हफ्ते में बीसीसीआई की वार्षिक आम बैठक होगी, इसमें अध्यक्ष पद के साथ उपाध्यक्ष, संयुक्त सचिव, सचिव, आईपीएल चेयरमैन, कोषाध्यक्ष के लिए भी चुनाव होंगे. एक रिपोर्ट के अनुसार कई रिकॉर्ड तोड़ने और बनाने वाले एक क्रिकेटर को बीसीसीआई का अध्यक्ष बनाया जा सकता है. एक बड़े अधिकारी ने उस खिलाड़ी से इंग्लैंड में बातचीत भी की थी, हालांकि अभी यह नहीं पता चल पाया कि उस खिलाड़ी ने इस पद के लिए हामी भरी है या मना किया है. उस खिलाड़ी के नाम का भी खुलासा नहीं हुआ है. रिपोर्ट में एक वरिष्ठ अधिकारी के हवाले से कहा गया कि महत्वपूर्ण हितधारक मानते हैं कि प्रतिष्ठित क्रिकेटर को अध्यक्ष चुना जाए तो अच्छा होगा. रिपोर्ट में एक सूत्र के हवाले से बताया गया कि इस बार फिर संभावना है कि बीसीसीआई का चुनाव नहीं होगा. आपसी सहमति से ही सभी पदों पर नियुक्ति हो जाएगी. जैसा पिछले 2 चुनाव में हुआ, वैसे ही बड़े लोग फैसला करेंगे कि क्या होगा. सूत्र के हवाले से रिपोर्ट में बताया गया कि सचिव देवजीत सैकिया अपने पद पर बने रह सकते हैं. आईपीएल चेयरमैन पद के लिए संजय नाइक और राजीव शुक्ला के नाम पर चर्चा है. जबकि संभावना है कि कोषाध्यक्ष प्रभतेज भाटिया और संयुक्त सचिव रोहन गौंस देसाई अपने पद पर बने रह सकते हैं.

ब्रीफ न्यूज

भागरपुर : बांध में डूबने से नवविवाहिता की मौत

भागलपुर। सनोखर थाना क्षेत्र के तैलोंधा पंचायत के धनोखर गांव में शुक्रवार को बांध में डूबने से एक नवविवाहिता की मौत हो गई. मृतिका धनोखर गांव निवासी वरुण तांती की 25 वर्षीय बेटी कंचन कुमारी है. मृतका के पिता ने बताया कि वह शुक्रवार सुबह सुबह गांव के पूरब स्थित हेटला बहियार शौच करने गई थी. शौच के बाद पानी लेने के दौरान जैसे ही झुकी, वह फिसलकर गहरे पानी में गिर गई और डूब गई. काफी देर तक घर नहीं लौटने पर उसकी मां खोजने निकली तो बांध किनारे चप्पल देखकर शंका हुई. बाद में ग्रामीणों की मदद से शव बाहर निकाला गया. मृतका की मां ने कहा कि कंचन की शादी दो वर्ष पूर्व झारखंड के गोड्डा जिले के बलबड्डा थाना क्षेत्र के घोरिकितता गांव निवासी पूरण तांती से हुई थी. छह माह पूर्व उसने एक बेटे को जन्म दिया था. पति मजदूरी के लिए गुजरात में रहता है. कंचन अपने मायके धनोखर में ही रह रही थी. घटना की सूचना पर सनोखर थाना के एएसआई गितेश कुमार महिला पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और शव को पोस्टमार्टम के लिए भागलपुर भेज दिया.

7 साल से गायब लड़की लुधियाना से बरामद हुई

दरभंगा। दरभंगा जिले के जाले थाना पुलिस ने सात साल पहले अपहृत हुई नाबालिग लड़की को पंजाब के लुधियाना से बरामद किया है. इस दौरान पुलिस ने आरोपी अजीम उर्फ अजीमुद्दीन को भी गिरफ्तार कर लिया. वर्ष 2018 में जाले थाना क्षेत्र के एक गांव से आरोपी ने नाबालिग को बहला-फुसलाकर भगा लिया था और लुधियाना जाकर शादी कर ली थी. तब लड़की के पिता ने जाले थाना में एफआईआर संख्या 178/2018 दर्ज कराई थी. परिवार ने लगातार तलाश की, लेकिन लड़की का कोई सुराग नहीं मिला. इस मामले की जांच कई बार अधिकारियों के बदलने के कारण अटकी रही. लेकिन हाल ही में नए पदस्थापित SI दिव्यांशु शेखर ने इस मामले को गंभीरता से लिया और टेक्निकल व फिजिकल इनपुट के आधार पर लुधियाना से लड़की और आरोपी को बरामद कर लिया.

अन्तरराज्यीय शराब तस्करों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई

2,520 लीटर शराब लदे ट्रक के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

शुभम संदेश । अररिया

अररिया नगर थाना पुलिस ने अंतर्राज्यीय शराब तस्करों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है. पुलिस ने शुक्रवार सुबह को ट्रक पर लदे भारी मात्रा में अरुणाचल प्रदेश निर्मित अंग्रेजी शराब का बड़ा खेप को पकड़ा. शराब को असम से ट्रक पर लोड कर मुजफ्फरपुर ले जाया जा रहा था.मामले में पुलिस ने दो शराब तस्करों को भी गिरफ्तार किया.जानकारी एसपी अंजनी कुमार ने दी. एसपी ने बताया कि नगर थानाध्यक्ष को गुप्त सूचना प्राप्त हुआ था कि कुछ अन्तर्राज्यीय शराब तस्कर शराब की बड़ी खेप लेकर पश्चिम बंगाल से अररिया होते हुए मुजफ्फरपुर जाने वाले है. प्राप्त सूचना के आलोक में एसपी ने सदर एसडीपीओ के नतृत्व में नगर थाना पुलिस की एक विशेष टीम जीरो माईल में पदस्थापित कर सड़क की नाकेबंदी करते हुए संदिग्ध वाहनों की जांच शुरू की.

जांच के क्रम में एक संदिग्ध ट्रक संख्या डब्लूबी41जे-2147 को रोककर उस पर लदे सामानों का जांच किये जाने पर ट्रक में चावल के बोरे के पीछे छिपाकर रखे गये 280 कार्टून में रखे कुल 3360 बोतल अरूणाचल प्रदेश निर्मित अंग्रेजी शराब कुल मात्रा 2520 लीटर बरामद किया. ट्रक पर चावल के बोरे की आड़ में शराब को छिपाकर रखा गया था.करीबन 650 किलो चावल भी ट्रक से बरामद किया गया.अवैध अंग्रेजी शराब के तस्करी के आरोप में गाड़ी चालक मुकेश राय एवं खलासी सतोष कुमार पासवान को गिरफ्तार किया गया. गिरफ्तार व्यक्तियों के माध्यम से शराब तस्करी के संगठित गिरोह में शामिल कुछ अन्य तस्करों के बारे में जानकारी मिलने की बात एसपी ने की.मामले में अररिया थाना कांड संख्या 367/25 धारा 111 (1)/338/336 (3) बीएनएस एवं 30 (ए)/41(1) बिमनि एवं उत्पाद अधिनियम दर्ज किया गया है और पुलिस तस्करी के बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज को लेकर अनुसंधान कर रही है. मामले में गिरफ्तार चालक वैशाली जिला के जटकौली घाट कन्हैली के रहने आले 35 वर्षीय मुकेश राय पिता सिंहासन राय है.वहीं दूसरा उनका सहयोगी मुजफ्फरपुर जिला के सरैया थाना क्षेत्र के आनंदपुर भगोलिया का रहने वाला 37 वर्षीय संतोष कुमार महतो पिता स्व.दिलीप महतो है. छापेमारी दल में अररिया नगर थानाध्यक्ष मनीष कुमार रजक, एसआई अमरेन्द्र कुमार सिंह, राजनारायण यादव, एएसआई अमजद अली, पुष्कर सिंह के साथ सशस्त्र बल के जवान मौजूद थे.

चिराग पासवान ने दिया बड़ा बयान

'बिहार में मुख्यमंत्री की वैकेंसी नहीं नीतीश कुमार ही रहेंगे सीएम'

शुभम संदेश। वैशाली

वैशाली जिले के राजापाकर में पहुंचे केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने विपक्ष पर जोरदार हमला बोला. उन्होंने कहा कि विपक्ष हमेशा वोटर लिस्ट में गड़बड़ी का आरोप लगाता है और जब उसमें सुधार किया जाता है, तब भी सवाल उठाता है. चिराग ने तंज कसते हुए कहा -'चीत भी मेरी और पट भी मेरी, यह तरीका नहीं चल सकता.' पासवान ने कहा कि विपक्षी नेता प्रधानमंत्री और उनके परिवार पर अमर्यादित भाषा का प्रयोग कर रहे हैं.

उन्होंने राहुल गांधी पर अप्रत्यक्ष हमला करते हुए कहा, "आप असहमत हो सकते हैं, लेकिन प्रधानमंत्री आपसे उम्र में बड़े हैं. भारतीय संस्कार यही कहते हैं कि हम बच्चों से भी आप कहकर बात करते हैं. नेताओं की भाषा मर्यादित होनी चाहिए ताकि कार्यकर्ताओं में गलत संदेश न जाए."

सभा में भीड़ को लेकर विपक्ष के आरोपों पर चिराग ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और एनडीए की सभाओं में लोगों को बुलाने की जरूरत नहीं पड़ती. "बिहार की जनता ने मन बना लिया है. यह उपचुनाव के नतीजों और आज की सभा की भीड़ देखकर साफ है," उन्होंने दावा किया.

महागठबंधन को चुनौती : चिराग पासवान ने कहा कि एनडीए का पांच दलों का गठबंधन पूरी मजबूती के साथ चुनाव मैदान में है. उन्होंने कहा कि बिहार बंद के बाद भी जिस तरह लोग मुजफ्फरपुर की सभा में पहुंचे, वह बताता है कि महागठबंधन के लिए मुकाबला आसान नहीं होगा. मुख्यमंत्री पद को लेकर चल रही चर्चाओं पर चिराग ने साफ कहा कि बिहार में मुख्यमंत्री की वैकेंसी खाली नहीं है. मौजूदा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही गठबंधन आगामी विधानसभा चुनाव लड़ेगा.

हाइवा की चपेट में आने से वृद्ध की मौत आगजनी कर 2 घंटे तक की सड़क जाम

शुभम संदेश । नवादा

नवादा जिले के सिरदला-हिसुआ पथ पर शुक्रवार को बड़ा हादसा हो गया. इस्माइलपुर गांव के 85 वर्षीय किशोरी पांडेय की मौत हाइवा की चपेट में आने से हो गई. वृद्ध पदमौल चौक से घर लौट रहे थे, तभी सिरदला की ओर से तेज रफ्तार हाइवा ने उन्हें कुचल दिया. मौके पर ही उनकी मौत हो गई. हादसे से गुस्साए ग्रामीणों ने बांस-बल्ले से सड़क को घेरकर दो घंटे तक जाम कर दिया और बीच सड़क पर टायर जला कर विरोध जताया.

भागने की कोशिश में हाइवा चालक ने एक टोटो सवारी वाहन को भी रगड़ दिया लेकिन बाजारवासियों ने उसे पकड़ लिया और हाथ-पांव बांधकर लाश के पास बैठा दिया. चालक की पहचान परनाडाबर थाना क्षेत्र के लोधवे गांव निवासी राजेंद्र प्रसाद यादव के पुत्र विक्रम कुमार के रूप में हुई.

परिजनों और ग्रामीणों ने मांग की है कि डीएम और एसपी घटनास्थल पर आएं तथा मृतक परिवार को उचित मुआवजा दिया जाए. भीड़ उग्र होती जा रही थी. इसी दौरान सिरदला की प्रभारी थानाध्यक्ष संगीता कुमारी मौके पर पहुंचीं. उन्होंने पहले ग्रामीणों की बात धैर्यपूर्वक सुनी और फिर उन्हें समझाते हुए आश्वस्त किया— "सरकार की ओर से हर संभव सहायता मिलेगी और आरोपी चालक व वाहन मालिक पर सख्त कार्रवाई की जाएगी."

संगीता कुमारी की सूझबूझ से भीड़ धीरे-धीरे शांत हुई. बीडीओ दीपेश कुमार और सीओ भोला ने भी लोगों को समझाया और कहा कि सरकार मुआवजा व अन्य सहायता देने को प्रतिबद्ध है. समाजसेवी बिनोद कुमार यादव और संजय यादव ने भी प्रशासन के साथ मिलकर लोगों को समझाने में सहयोग किया.

लालू प्रसाद ने एक्स पर किया पोस्ट, लिखा

'गुजराती' फार्मूला बिहार में नहीं चलेगा

पटना । आरजेडी सुप्रीमो लालू यादव ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट कर पीएम मोदी पर हमला किया है. अपने एक्स अकाउंट पर पोस्ट कर लिखा, ऐ मोदी जी, विक्ट्री चाहिए बिहार से और फैक्टरी दीजिएगा गुजरात में? ये गुजराती फार्मूला बिहार में नहीं चलेगा!. आरजेडी सुप्रीमो के गुजराती वाले बयान पर जेडीयू ने पलटवार किया है. जेडीयू प्रवक्ता नीरज कुमार ने कहा, ₹लालू प्रसाद का विचार जहरीला और उनका ट्वीट भी जहरीला है. जहरीले दौर से बिहार अब निकल चुका है. गुजरात हो या बिहार हो, कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक गुजराती अब बोझ नहीं है उन्होंने कहा, लालू यादव चरवाहा विद्यालय वाला ज्ञान देते हैं. बिहारी के अपमान की बात करते हैं. बिहार की जनता सब समझ रही है.

सीवान में पुलिस की बड़ी कार्रवाई

ज्वेलर्स पर फायरिंग और रंगदारी कांड के पांच अपराधी गिरफ्तार

शुभम संदेश। सीवान

महाराजगंज पुलिस ने ज्वेलर्स एवं बर्तन भंडार पर फायरिंग और रंगदारी मामले में बड़ी सफलता हासिल की है. गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने पांच अपराधियों को हथियार और मोबाइल फोन के साथ गिरफ्तार किया है. इनके पास से दो देसी कट्टा, छह जिंदा कारतूस और पांच मोबाइल बरामद किए गए हैं.

जानकारी के अनुसार, अपराधी महुआरी रेलवे ओवरब्रिज पुल के पास इकट्ठा होकर बड़ी लूट की योजना बना रहे थे. इसी बीच पुलिस और DIU टीम ने संयुक्त छापेमारी कर इन्हें दबोच लिया. पुलिस बल को देखकर कुछ अपराधी भागने लगे, लेकिन पांच अपराधियों को पकड़ लिया गया. एक अपराधी अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया.

ज्वेलर्स पर फायरिंग और रंगदारी में शामिल

एसडीपीओ अमन ने प्रेसवार्ता में बताया कि 28 अगस्त को रिसौरा बाजार स्थित नेहा ज्वेलर्स और बर्तन भंडार में अपराधियों ने फायरिंग की थी. इसके बाद 31 अगस्त को 20 लाख रुपये रंगदारी की मांग भी की गई थी. इसी मामले में पुलिस लगातार छापेमारी कर रही थी. गिरफ्तार अपराधियों ने पूछताछ में इस घटना को अंजाम देने की बात कबूल की है.

नवादा में बिजली के खंभे से बांध कर युवक की बेरहमी से पिटाई

नवादा। नवादा जिले के रोह प्रखंड के मरूई गांव में एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां एक युवक को बिजली के खंभे से बांधकर बेरहमी से पीटा गया. इस घटना का लाइव वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ, जिसने पूरे इलाके में सनसनी फैला दी. वीडियो की जांच के बाद पीड़ित युवक मोहम्मद जीशान सामने आया और उसने मारपीट की पूरी कहानी बयां की. मोहम्मद जीशान ने बताया कि बुधवार को सुबह करीब 10 बजे उनकी छोटी बहन के साथ स्कूल में कुछ लड़कों ने मारपीट की, जब उसकी मां इसका विरोध करने गईं, तो उनके साथ भी मारपीट की गई. जीशान ने जब इस घटना का कारण जानने के लिए राजू साह से बात की, तो विवाद बढ़ गया. राजू साह और उनके साथियों ने जीशान के साथ गाली-गलौज की और उसे बिजली के खंभे से बांधकर जमकर पिटाई की.

कारोबार

स्टॉक मार्केट में स्नेहा ऑर्गेनिक्स की फ्लैट लिस्टिंग के बाद लगा लोअर सर्किट

नई दिल्ली। सॉल्वेंट रिकवर करने का काम करने वाली कंपनी स्नेहा ऑर्गेनिक्स के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में फ्लैट एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को निराश कर दिया. आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 122 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे. आज एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग बिना किसी बदलाव के 122 रुपये के स्तर पर ही हुई. लिस्टिंग के बाद बिकवाली का दबाव बन गया, जिसके कारण थोड़ी देर में ही कंपनी के शेयर टूट कर 115.90 रुपये लोअर सर्किट लेवल पर आ गए. इस तरह पहले दिन के कारोबार में ही कंपनी के आईपीओ निवेशकों को 5 प्रतिशत का नुकसान हो गया.स्नेहा ऑर्गेनिक्स का 32.68 करोड़ रुपये का आईपीओ 29 अगस्त से 2 सितंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था. इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से भी अच्छा रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 27.75 गुना सब्सक्राइब हुआ था. इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 42.19 गुना सब्सक्राइब हुआ था.

अब यूपीआई से 24 घंटे में कर सकेंगे 10 लाख तक का लेनदेन

15 सितंबर से देशभर में लागू होगा नया नियम

एजेंसी। नयी दिल्ली

अब यूपीआई से 24 घंटे में 10 लाख तक का लेनदेन किया जा सकेगा. हालांकि, यह केवल उन संस्थाओं के लिए है, जो कर यानी टैक्स भुगतान से जुड़ी श्रेणियों में आती हैं. भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) ने 15 सितंबर की आयकर रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तारीख को देखते हुए यह फैसला किया है.

बैंक अपनी नीतियों के अनुसार आंतरिक सीमाएं तय कर सकेंगे : 12 अन्य श्रेणियों में भी प्रति लेनदेन और 24 घंटे में कुल लेनदेन सीमा बढ़ा दी है. बैंकों को सुनिश्चित करना होगा कि 24 घंटे की सीमा उनके पास ही रहे. निगम ने बैंकों को अपनी नीतियों के अनुसार आंतरिक सीमाएं तय करने की छूट भी दी है.

व्यक्ति से व्यक्ति लेनदेन एक लाख रुपये प्रतिदिन ही रहेगा : यह बदलाव केवल सत्यापित व्यापारियों के साथ व्यक्ति से व्यापारी लेनदेन पर लागू होंगी. व्यक्ति से व्यक्ति लेनदेन एक लाख रुपये प्रतिदिन ही रहेगा. सभी बैंकों, एप्स व भुगतान सेवा प्रदाताओं को 15 सितंबर तक यह लागू करना होगा.

10 लाख रुपये तक होने वाले लेनदेन : पूंजी बाजार व बीमा के लिए, प्रति लेनदेन व कुल लेनदेन, दोनों की सीमा 24 घंटे के लिए बढ़ा दी है. अभी प्रति लेनदेन 2 लाख रुपये तक सीमा थी. 15 सितंबर से सत्यापित व्यापारियों को प्रति लेनदेन 5 लाख तक भुगतान कर सकते हैं. 24 घंटे में 10 लाख रुपये तक का भुगतान भी कर सकते हैं.

स्टॉक मार्केट में कमजोर एंट्री करके अबरिल पेपर टेक ने किया निराश, नुकसान में आईपीओ निवेशक

एजेंसी। नयी दिल्ली

पेपर सेक्टर में काम करने वाली कंपनी अबरिल पेपर टेक लिमिटेड के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में जबरदस्त गिरावट के साथ एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को काफी निराश कर दिया. आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 61 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे. आज बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 20 प्रतिशत डिस्काउंट के साथ 48.80 रुपये के स्तर पर हुई.

कमजोर लिस्टिंग के बाद बिकवाली के दबाव की वजह से थोड़ी देर में ही कंपनी के शेयर गिरकर 46.37 रुपये के लोअर सर्किट लेवल तक पहुंच गए. इसके कुछ देर बाद खरीदारों ने लिवाली करके लोअर सर्किट ब्रेक करके इसे 51.24 रुपये के अपर सर्किट लेवल तक पहुंचा दिया. हालांकि कंपनी के शेयर इस स्तर पर भी टिक नहीं सके. इस स्तर पर एक बार फिर बिकवाली शुरू हो गई, जिसके कारण शेयर ने अपर सर्किट भी ब्रेक कर दिया. सुबह 11:30 बजे तक कारोबार होने के बाद अबरिल पेपर टेक लिमिटेड के शेयर 50.50 रुपये के स्तर पर कारोबार कर रहे थे. इस तरह अभी तक के कारोबार में कंपनी के आईपीओ निवेशकों को 17.21 प्रतिशत का नुकसान हो चुका है.

अबरिल पेपर टेक लिमिटेड का 13.42 करोड़ रुपये का आईपीओ 29 अगस्त से 2 सितंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था. इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से अच्छा रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 11.20 गुना सब्सक्राइब हुआ था. इनमें नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन में 5.51 गुना सब्सक्रिप्शन आया था. इसी तरह रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 16.79 गुना सब्सक्राइब हुआ था. इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 22 लाख नए शेयर जारी किए गए हैं. आईपीओ के जरिये जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी नई मशीनरी खरीदने, अपनी वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने और आम कॉरपोरेट उद्देश्यों में करेगी.

कंपनी की वित्तीय स्थिति की बात करें तो प्रॉस्पेक्टस में किए गए दावे के मुताबिक पिछले वित्त वर्ष 2024-25 में कंपनी का शुद्ध मुनाफा सालाना आधार पर 51.61 प्रतिशत उछल कर 93 लाख रुपये से 1.41 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया.

स्टॉक मार्केट में कमजोर शुरुआत के बाद सुग्स लॉयड के शेयरों पर लगा अपर सर्किट

नई दिल्ली। कंस्ट्रक्शन सेक्टर में काम करने वाली कंपनी सुग्स लॉयड के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में कमजोर एंट्री करने के बाद मजबूती दिखा कर अपने आईपीओ निवेशकों को खुश कर दिया. आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 123 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे.

आज बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 2.52 प्रतिशत डिस्काउंट के साथ 119.90 रुपये के स्तर पर ही हुई. कमजोर लिस्टिंग के बाद खरीदारों ने लिवाली का जोर बना दिया, जिसके कारण थोड़ी देर में ही कंपनी के शेयर उछल कर 125.85 रुपये के अपर सर्किट लेवल पर आ गए. इस तरह पहले दिन के कारोबार में कंपनी की कमजोर शुरुआत के बावजूद आईपीओ निवेशकों को 2.32 प्रतिशत का फायदा हो गया.

सुग्स लॉयड का 85.66 करोड़ रुपये का आईपीओ 29 अगस्त से 2 सितंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था. इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से एवरेज रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 3.23 गुना सब्सक्राइब हुआ था. इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 2.03 गुना सब्सक्राइब हुआ था. वहीं, नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 5.30 गुना सब्सक्रिप्शन आया था. इसी तरह रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 2.12 गुना सब्सक्राइब हुआ था. इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 69.64 लाख नए शेयर जारी किए गए हैं. आईपीओ के जरिये जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी अपने पुराने कर्ज के बोझ को कम करने, वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने और आम कॉरपोरेट उद्देश्यों में करेगी.

ऑनलाइन गेमिंग कंपनी गेम्सक्राफ्ट ने पूर्व सीएफओ के खिलाफ दर्ज कराई शिकायत

231 करोड़ रुपये की हेराफेरी का आरोप लगाया

एजेंसी। नयी दिल्ली

ऑनलाइन गेमिंग कंपनी गेम्सक्राफ्ट टेक्नोलॉजीज लिमिटेड ने अपने पूर्व मुख्य वित्तीय अधिकारी के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है. कंपनी ने आरोप लगाया है कि पूर्व अधिकारी ने 231 करोड़ रुपये से अधिक की रकम की हेराफेरी की. इस धोखाधड़ी का असर कंपनी के वित्तीय नतीजों पर भी देखने को मिला.

कंपनी के शुद्ध लाभ में आई गिरावट : वित्त वर्ष 2024-25 में कंपनी का शुद्ध लाभ घटकर 706 करोड़ रुपये दर्ज हुआ. वहीं पिछले वर्ष कंपनी ने 947 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया था. हालांकि इस अवधि में कंपनी की कुल आय बढ़कर 4,009 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले वर्ष के 3,475 करोड़ रुपये से अधिक है. कंपनी ने कहा कि वित्त वर्ष 2025 उसके परिचालन पर 28 प्रतिशत जीएसटी कर का पहला पूर्ण वर्ष था. पिछले वर्ष की कमाई में ऑनलाइन गेमिंग क्षेत्र के लिए नई लागू की गई जीएसटी व्यवस्था के छह महीने के प्रभाव को भी शामिल किया गया था.

कंपनी धन वसूली के पूरे प्रयास करेगी : कंपनी के धन के अनधिकृत उपयोग का पता चलने के बाद गेम्सक्राफ्ट ने फोरेंसिक ऑडिट कराया, जिससे पता चला कि धन की कितनी मात्रा और प्रकृति का गबन किया गया. सूत्रों ने बताया कि कंपनी आरोपियों से धन की वसूली के लिए हर संभव प्रयास करेगी.

ऑनलाइम गेमिंग बिल का असर : ऑनलाइन गेमिंग अधिनियम, 2025 के हालिया प्रचार और विनियमन के मद्देनजर, गेम्सक्राफ्ट ने पहले ही अपने रम्मी ऐप्स में 'ऐड कैश' और 'गेमप्ले' सेवाओं को बंद कर दिया है. इस परिवर्तन के दौरान लेखा परीक्षकों, बैंकिंग भागीदारों, कानूनी सलाहकारों और नीति निर्माताओं के साथ मिलकर काम करते हुए अनुपालन, पारदर्शिता और परिचालन निरंतरता पर मजबूत ध्यान केंद्रित किया है.

पूर्व अधिकारी को धोखधड़ी के आरोप में पद से हटाया गया

इस संबंध में बेंगलुरु पुलिस थाने में पूर्व अधिकारी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई गई है. बताया जा रहा है कि संबंधित अधिकारी को इसी साल मई में ग्रुप चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर के पद से हटा दिया गया था. शिकायत में कहा गया है कि उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में कुल 231.39 करोड़ रुपये के अनधिकृत वित्तीय लेनदेन किए हैं. उन्होंने इस साल मार्च में कंपनी को भेजे एक कथित ईमेल में स्वेच्छा सेवा स्वीकार किया था कि उन्होंने व्यक्तिगत इक्विटी और डेरिवेटिव ट्रेडिंग के लिए कंपनी के धन का दुरुपयोग किया है. बताया जा रहा है कि वह मार्च से फरार है.

रवणा गोल्ड पैलेस की 70 करोड़ रुपये की संपत्ति बैंक की हुई

नयी दिल्ली। सरवणा गोल्ड पैलेस मामले में एक्सिस बैंक को बड़ी राहत मिली है. दरअसल पीएमएलए कोर्ट ने एक्सिस बैंक की याचिका स्वीकार करते हुए 70 करोड़ रुपये की जब्त संपत्ति बैंक को सौंपने का आदेश दिया है. सरवणा गोल्ड पर आरोप है कि उसने फर्जी दस्तावेजों के जरिए एक्सिस बैंक से करीब 118 करोड़ रुपये का कर्ज लिया. ईडी इस मामले में धन शोधन के कोण से जांच कर रही है. ईडी ने जब्त की थी करोड़ों रुपये की संपत्ति : कर्ज में हेराफेरी के आरोपों की जांच के दौरान ईडी ने सरवणा गोल्ड पैलेस की करीब 70 करोड़ रुपये की संपत्ति को जब्त किया था. फोरेंसिक ऑडिट में पाया गया कि कर्ज फर्जी दस्तावेजों के आधार पर लिए गए.

जीएसटी सुधारों से सरकार को 3,700 करोड़ राजस्व का होगा नुकसानः एसबीआई

एजेंसी । नई दिल्ली

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने अपनी नवीनतम शोध रिपोर्ट में कहा है कि माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की दरों में कमी के जरिए जीएसटी में सुधार से 3,700 करोड़ रुपये का न्यूनतम राजस्व नुकसान होगा. दूसरी तरफ केंद्र सरकार का अनुमान है कि जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने का शुद्ध राजकोषीय प्रभाव सालाना आधार पर 48 हजार करोड़ रुपये होगा.

स्टेट बैंक ने शुक्रवार को जारी अपनी नवीनतम शोध रिपोर्ट में कहा है कि विकास और उपभोग में वृद्धि को देखते हुए न्यूनतम राजस्व हानि 3,700 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है, जबकि इसका राजकोषीय घाटे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा. रिपोर्ट में कहा गया कि जीएसटी दर को युक्तिसंगत बनाने से लागत दक्षता में सार्थक सुधार के कारण बैंकिंग क्षेत्र पर काफी हद तक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा. इससे प्रभावी भारित औसत दर भी इसके 2017 में लागू होने के समय 14.4 फीसदी से घटकर 9.5 फीसदी हो गई है.

रिपोर्ट के मुताबिक चूंकि आवश्यक वस्तुओं (लगभग 295) की जीएसटी दर युक्तिकरण 12 फीसदी से घटकर पांच फीसदी या शून्य हो गई है. इसलिए चालू वित्त वर्ष 2025-26 में इस श्रेणी में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित महंगाई दर यानी मुद्रास्फीति भी 0.25 फीसदी से 0.30 फीसदी तक कम हो सकती है.

भूटान के प्रधानमंत्री दासो टोबगे ने सपरिवार किए श्रीरामलला के दर्शन

अयोध्या । भूटान के प्रधानमंत्री दासो शेरिंग टोबगे ने शक्रवार को अपने परिवार के साथ अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में श्रीरामलला के दर्शन किए और मंदिर की भव्यता को सराहा. टोबगे को ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने मंदिर निर्माण से जुड़ी तमाम जानकारियां दीं.टोबगे के मंदिर पहुंचने के दौरान जिला प्रशासन ने सुरक्षा के कड़े प्रबंध किये. इससे पहले भूटान के प्रधानमंत्री दासो शेरिंग टोबगे सुबह लगभग 9:30 बजे स्थानीय महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर विमान से उतरे.यहां जिला प्रशासन की ओर से रेडकार्पेट पर राज्य सरकार के मंत्री सूर्य प्रताप शाही, मेयर गिरीश पति त्रिपाठी, जिलाधिकारी निखिल टीकाराम फुंडे और एसएसपी डॉ. गौरव ग्रोवर के उनका स्वागत किया. टोबगे के साथ उनकी पत्नी भी थीं. इसके बाद भूटान के प्रधानमंत्री दासो शेरिंग टोबगे अयोध्या एयरपोर्ट से सीधे राम मंदिर पहुंचे थे. श्रीरामजन्म भूमि मंदिर पहुंचने पर श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महामंत्री चंपत राय और ट्रस्ट के सदस्य डॉ. अनिल मिश्र ने उनका स्वागत किया. इसके बाद भूटान के प्रधानमंत्री ने श्रीरामलला का दर्शन कर पूजा-अर्चना की.

भारत-सिंगापुर ने द्विपक्षीय रक्षा सहयोग और रणनीतिक साझेदारी के रोडमैप पर की चर्चा

राजनयिक संबंधों के 60 वर्ष पूरे होने पर रक्षा सहयोग बढ़ाने पर बनी सहमति

एजेंसी ।नई दिल्ली

भारत-सिंगापुर रक्षा कार्य समूह की 16वीं बैठक में द्विपक्षीय रक्षा सहयोग पहलों के दौरान लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन की समीक्षा के बाद दोनों पक्षों ने संतोष व्यक्त किया. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनके समकक्ष लॉरेंस वोंग के बीच नई दिल्ली में हुई बैठक के बाद यह वार्ता सिंगापुर में हुई, जिसमें दोनों देशों के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी के रोडमैप पर चर्चा हुई. यह बैठक भारत की एक्ट ईस्ट नीति की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण रही, जिसमें सिंगापुर ने आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने तथा क्षेत्र के देशों के साथ रणनीतिक संपर्क विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. सिंगापुर के प्रधानमंत्री लॉरेंस वोंग तीन दिन की यात्रा पर 02 सितंबर को नई दिल्ली पहुंचे और गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ द्विपक्षीय वार्ता की. भारत और सिंगापुर के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी के रोडमैप पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनके समकक्ष लॉरेंस वोंग के बीच नई दिल्ली में हुई बैठक को लेकर जारी संयुक्त वक्तव्य के बाद रक्षा कार्य समूह की 16वीं बैठक सिंगापुर में हुई. बैठक की सह-अध्यक्षता भारतीय रक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव (अंतरराष्ट्रीय सहयोग) अमिताभ प्रसाद और सिंगापुर रक्षा मंत्रालय के नीति कार्यालय के निदेशक कर्नल डैक्सन याप ने की. बैठक में पिछले रक्षा मंत्रियों की वार्ता और विभिन्न द्विपक्षीय रक्षा सहयोग पहलों के दौरान लिए गए निर्णयों के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा की गई. बैठक में रक्षा दृष्टिकोणों का आदान-प्रदान करने और बहुआयामी द्विपक्षीय रक्षा संबंधों के साथ-साथ क्षेत्रीय सुरक्षा ढांचे के संपूर्ण क्षेत्र को कवर करने वाली पहलों की गति तेज करने का फैसला लिया गया. दोनों पक्षों ने चल रहे रक्षा सहयोग पर संतोष व्यक्त किया और सहयोग के मौजूदा क्षेत्रों, विशेष रूप से प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण, उद्योग एवं प्रौद्योगिकी, समुद्री सुरक्षा और बहुराष्ट्रीय सहयोग के क्षेत्र में, को बढ़ाने के उपायों की पहचान की. बैठक में सह-अध्यक्षों ने सहयोग के उभरते क्षेत्रों और वैश्विक साझा हितों से संबंधित मुद्दों की दिशा में उठाए जाने वाले कदमों पर भी प्रकाश डाला. बैठक के दौरान संयुक्त सचिव ने उप-सचिव नीति बीजी फ्रेडरिक चू से भी मुलाकात की. उन्होंने इस दौरान चांगी नौसैनिक अड्डे पर सूचना संलयन केंद्र और आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक साइबर सुरक्षा एवं सूचना उत्कृष्टता केंद्र का भी दौरा किया. वर्ष 2025 में भारत और सिंगापुर के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 60 वर्ष पूरे होने पर दोनों सह-अध्यक्षों ने रक्षा सहयोग को और बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की.

फेडरल रिजर्व की गवर्नर लिसा कुक के खिलाफ आपराधिक जांच शुरू की

एजेंसी ।वाशिंगटन

अमेरिका के न्याय विभाग ने फेडरल रिजर्व की गवर्नर लिसा कुक के खिलाफ धोखाधड़ी (आपराधिक) की जांच शुरू कर दी है. अभी यह स्पष्ट नहीं है कि इस जांच में कौन से अमेरिकी अटॉर्नी कार्यालय शामिल हैं. अदालती रिकॉर्ड के अनुसार, कुक ने पहले अपने खुलासे में बताया था कि उनके जॉर्जिया, मैसाचुसेट्स और मिशिगन में घर हैं. जांच से जुड़े एक अधिकारी ने बताया कि संघीय अभियोजकों ने समन जारी करना शुरू कर दिया है. इसलिए अनुमान है कि इन्हीं क्षेत्रों के कार्यालय जांच में शामिल होंगे. द न्यूयॉर्क टाइम्स की खबर के अनुसार, इससे पहले फ़ेडरल हाउसिंग फ़ाइनेंस एजेंसी के निदेशक बिल पुल्टे के कार्यालय ने कुक के खिलाफ जांच कराई थी. इसमें साफ हुआ कि कुक ने एक मामले में अनुकूल शर्तें हासिल करने के लिए बैंक दस्तावेजों में हेराफेरी की. इसके बाद पुल्टे ने इस मामले को आपराधिक जांच के लिए न्याय विभाग को भेजा. इससे पहले ट्रंप ने घोषणा की थी कि वह लिसा कुक को फ़ेडरल रिज़र्व से बाहर कर देंगे.

मिथुन चक्रवर्ती ने तृणमूल नेता कुणाल घोष पर किया 100 करोड़ का मुकदमा

एजेंसी ।कोलकाता

पश्चिम बंगाल में 2026 में आसन्न विधान सभा चुनाव को लेकर दो प्रमुख दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और

अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (तृणमूल कांग्रेस) लगातार एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते नजर आ रहे हैं. ऐसा ही एक मामला अभिनेता से नेता बने बालीवुड स्टार मिथुन चक्रवर्ती और तृणमूल के पूर्व राज्यसभा सांसद कुणाल घोष के बीच देखने को मिला. भाजपा नेता और बालीवुड अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती ने तृणमूल कांग्रेस नेता कुणाल घोष पर 100 करोड़ रुपये का मानहानि मामला दायर किया है. इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कुणाल ने साफ कर दिया है कि वे इस मामले से घबराने वाले नहीं हैं, बल्कि इसे उसी तरह लड़ेंगे जैसे उन्होंने सारदा चिटफंड जांच के दौरान किया था. उन्होंने इसे 'राजीव कुमार मॉडल' नाम दिया है. साल 2019 में सारदा घोटाले की जांच के दौरान कुणाल घोष ने सीबीआई से आग्रह किया था कि उन्हें तत्कालीन पुलिस आयुक्त राजीव कुमार के आमने-सामने बैठाकर पूछताछ की जाए. सीबीआई ने उनकी मांग मान ली और शिलॉन्ग में दोनों की आमने-सामने पूछताछ हुई. अब वही तरीका अपनाने की बात कुणाल मिथुन मामले में भी कह रहे हैं. कुणाल का कहना है, "मैं अदालत से कहूंगा कि मुझे मिथुन दा के आमने-सामने बैठाकर पूछताछ की जाए. वहां सीबीआई के एसपी भी मौजूद रहें. मेरे पास ऐसे गवाह हैं जो कोर्ट में पेश होकर मिथुन दा की स्थिति कमजोर कर देंगे."

सीबीआई ने यूएई से भगोड़े हर्षित बाबूलाल जैन का प्रत्यर्पण कराया

एजेंसी ।नई दिल्ली

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने शुक्रवार को संयुक्त अरब अमीरात से कर चोरी, अवैध जुआ और मनी लॉन्ड्रिंग के मामलों में वांछित भगोड़े हर्षित बाबूलाल जैन का प्रत्यर्पण कराया है. जैन को आज अहमदाबाद अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर गुजरात पुलिस के हवाले कर दिया गया. इस पूरी प्रक्रिया में सीबीआई ने गुजरात पुलिस, विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय के साथ मिलकर काम किया.

सीबीआई के अनुसार, गुजरात पुलिस लंबे समय से जैन की तलाश कर रही थी. इसी के तहत सीबीआई ने 9 अगस्त 2023 को इंटरपोल के माध्यम से उसके खिलाफ रेड नोटिस जारी करवाया था. रेड नोटिस जारी होने के बाद जैन को संयुक्त अरब अमीरात से निर्वासित किया गया और भारत लाया गया. सीबीआई भारत में इंटरपोल की राष्ट्रीय केंद्रीय ब्यूरो (एनसीबी) के रूप में काम करती है. यानी इंटरपोल से आने वाले सभी अनुरोधों और सूचनाओं का समन्वय सीबीआई ही करती है और उन्हें देश की एजेंसियों तक पहुंचाती है. सीबीआई के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में इंटरपोल चैनलों के माध्यम से 100 से अधिक वांछित अपराधियों को भारत वापस लाया जा चुका है.

माता वैष्णो देवी की तीर्थ यात्रा लगातार 11वें दिन स्थगित, कटरा वीरान

जम्मू । जम्मू और कश्मीर के रियासी ज़िले में स्थित माता वैष्णो देवी गुफा मंदिर की तीर्थयात्रा शुक्रवार को लगातार 11वें दिन स्थगित रही. हालांकि, दस दिनों की भारी बारिश अचानक आई बाढ़ और भूस्खलन के बाद धूप खिलने से मौसम में काफी सुधार हुआ है, लेकिन अधिकारियों ने अभी तक यात्रा फिर से शुरू करने पर कोई फैसला नहीं लिया है. माता वैष्णो देवी गुफा मंदिर के रास्ते में अर्धकुंवारी में 26 अगस्त को हुए भूस्खलन में 34 तीर्थयात्री मारे गए और 20 अन्य घायल हो गए. यात्रा उसी दिन अगले आदेश तक स्थगित कर दी गई थी. श्राइन बोर्ड के एक अधिकारी ने कहा कि तीर्थयात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निर्णय के कारण यात्रा अभी भी स्थगित है.

मूसलाधार बारिश से उत्तर भारत ठप, दिल्ली में यमुना उफान पर

नयी दिल्ली । मूसलाधार बारिश ने भारत-पाकिस्तान सीमा पर 110 किलोमीटर लंबी बाड़ को क्षतिग्रस्त कर दिया और जम्मू-पंजाब में लगभग 90 बीएसएफ चौकियां जलमग्न हो गईं. बाढ़ जैसे हालात के बीच दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर में स्कूल बंद, कारोबार ठप और परिवहन व्यवस्था ठप. इधर दिल्ली में यमुना का जलस्तर बढ़ने और आईएमडी के और भारी बारिश के पूर्वानुमान ने अधिकारियों को चिंतित कर दिया है.

हमने भारत-रूस को चीन के हाथों खो दिया : डोनाल्ड ट्रंप

- टैरिफ वॉर के बीच एससीओ समिट के बाद नरम पड़े अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप

वाशिंगटन । अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को सोशल मीडिया ट्रुथ पर पोस्ट में एक तस्वीर भी शेयर की है. इस तस्वीर में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग नजर आ रहे हैं. इस पोस्ट में डोनाल्ड ट्रंप ने लिखा कि, लगता है कि हमने भारत और रूस को गहरे, अंधकारमय चीन

के हाथों खो दिया है. ईश्वर करे कि उनका भविष्य लंबा और समृद्ध हो. ट्रंप की यह टिप्पणी पर उस समय आई है जब पिछले दिनों चीन के तिआनजिन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन में पीएम नरेंद्र मोदी, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की नजदीकियों ने विश्व का ध्यान खींचा था. भारत-अमेरिका संबंधों में खटास तब और गहरी हो गई जब ट्रंप प्रशासन ने भारतीय वस्तुओं पर टैरिफ दोगुना कर 50 प्रतिशत कर दिया और साथ ही रूस से कच्चा तेल खरीदने पर अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क भी लगा दिया. वहीं अपने साप्ताहिक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के इस पोस्ट को लेकर सवाल पूछे जाने पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, 'इस समय इस पोस्ट पर मेरी कोई टिप्पणी नहीं है.

पाक के पंजाब प्रांत में डकैतों ने वाहनों पर हमला कर 10 को किया अगवा, कई घायल

इस्लामाबाद । पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में हथियारबंद डकैतों ने वाहनों पर हमला कर 10 लोगों को अगवा कर लिया. यह वारदात बुधवार देर रात रहीम यार खान जिले के भोंग शरीफ के पास एम-5 मोटर-वे पर हुई. इस दौरान डकैतों ने गुजर रहे वाहनों को निशाना बनाया. गोलीबारी में कई लोग घायल भी हो गए.

वेनेजुएला के दो सैन्य विमान अमेरिकी नौसेना के पोत के पास से गुजरे

पेंटागन ने इसे भड़काऊ कदम माना

एजेंसी ।वाशिंगटन

वेनेजुएला के दो सैन्य विमानों के गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में तैनात अमेरिकी नौसेना के पोत के पास से गुजरने की घटना को पेंटागन ने गंभीरता से लिया है. पेंटागन इसे बेहद भड़काऊ कदम माना है. गुरुवार रात एक्स पर पोस्ट किए गए एक बयान में रक्षा विभाग ने लिखा कि यह कदम हमारे मादक-आतंकवाद विरोधी अभियानों में बाधा डालने के लिए उठाया गया. एबीसी न्यूज चैनल की रिपोर्ट के अनुसार, पेंटागन ने यह जानकारी देते हुए बयान में वेनेजुएला के कार्टेल को सख्त सलाह दी है कि वह अमेरिकी सेना के मादक पदार्थों और आतंकवाद विरोधी अभियानों में हस्तक्षेप करने का प्रयास न करे. उल्लेखनीय है कि अमेरिकी नौसेना ने हाल ही में कैरिबियन और प्रशांत महासागर में आठ जहाज तैनात किए हैं. इस घटनाक्रम पर सीबीएस न्यूज की रिपोर्ट में विस्तार से जानकारी दी गई है. रिपोर्ट में रक्षा विभाग के अनेक अधिकारियों के हवाले से कहा गया है कि गुरुवार को वेनेजुएला के दो सशस्त्र एफ-16 लड़ाकू विमानों ने यूएसएस जेसन डनहम (युद्धपोत) के ऊपर से उड़ान भरी. कार्टेल ने एक तरह से शक्ति प्रदर्शन किया. हाल ही में अमेरिकी नौसेना के जहाजों को वेनेजुएला के तटीय जलक्षेत्र में भेजा गया है, क्योंकि राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रंप ने ड्रग कार्टेल पर नकेल कसने का संकल्प लिया है. इस वजह से ट्रंप और वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के बीच तनाव बढ़ रहा है. ट्रंप प्रशासन ने मादुरो पर अमेरिका में नशीले पदार्थों की तस्करी के लिए ड्रग कार्टेल के साथ गठजोड़ करने का आरोप लगाया है. अमेरिकी ने हाल ही में मादुरो की गिरफ्तारी पर इनाम की राशि को दोगुना करके 5 करोड़ डॉलर कर दिया है.

न्यूज अपडेट

अफगानिस्तान भूकंप : मौत का आंकड़ा 2200 के पार पहुंचा, राहत कार्य जारी

काबुल/मजार दारा । अफगानिस्तान के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में गुरुवार को 6.2 तीव्रता का भूकंप आया. यह झटका उसी इलाके में आया है, जहां रविवार को आए भीषण भूकंप में 2,200 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है. जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेज के मुताबिक भूकंप की गहराई 10 किलोमीटर थी. रविवार को आए 6 तीव्रता वाले भूकंप और मंगलवार के 5.5 तीव्रता के झटके ने कुनार और नंगरहार प्रांतों के गांवों को पूरी तरह तबाह कर दिया. अब तक 2,205 मौतों और 3,640 से अधिक घायल होने की पुष्टि हुई है. 6,700 से ज्यादा घर पूरी तरह ढह गए हैं. राहत एजेंसियों का कहना है कि मलबे में दबे लोगों के चलते मृतकों की संख्या और बढ़ सकती है.

अमेरिकी रक्षा विभाग का नाम अब युद्ध विभाग होगा : व्हाइट हाउस

वाशिंगटन । व्हाइट हाउस ने कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड जे. ट्रंप शुक्रवार को रक्षा विभाग का नाम बदलकर युद्ध विभाग करने संबंधी कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर करेंगे. इस तरह द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद तक विभाग का जो नाम था, उसे बहाल करके सैन्य मिशन को पुनर्गठित करने का ट्रंप का वादा पूरा हो जाएगा. द न्यूयॉर्क टाइम्स की खबर के अनुसार, यह कदम, जिसकी कुछ समय से उम्मीद की जा रही थी, युद्ध-लड़ने की क्षमताओं का प्रदर्शन करके एक अधिक आक्रामक छवि पेश करने के अपने लक्ष्यों के अनुरूप सेना को नया रूप देने के ट्रंप के प्रयासों को रेखांकित करता है. ट्रंप उस जागरुकता के बजाय अपनी ताकत का प्रदर्शन करना चाहते हैं, जिसके बारे में उन्होंने और रक्षा सचिव पीट हेगसेथ ने सेना के मनोबल और मिशन पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा था.

बच्चों में गरिमा और सुरक्षा की भावना जगाते हैं शिक्षक: राष्ट्रपति

नई दिल्ली । राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शिक्षक दिवस पर शुक्रवार को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए. राष्ट्रपति ने चयनित पुरस्कार विजेताओं को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2025 प्रदान किए. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में कहा कि भोजन, वस्त्र और आवास की तरह शिक्षा भी व्यक्ति की गरिमा और सुरक्षा के लिए अनिवार्य है. संवेदनशील शिक्षक बच्चों में गरिमा और सुरक्षा की भावना जगाने का काम करते हैं. शिक्षकों के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार यही है कि उनके विद्यार्थी आजीवन उन्हें याद रखें तथा परिवार, समाज और देश के लिए सराहनीय योगदान दें.

सीएम ने यमुना के जलस्तर को लेकर जिलाधिकारियों के साथ की बैठक

नई दिल्ली । खतरे के निशान के ऊपर बह रही यमुना के जलस्तर को लेकर शुक्रवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली के सभी जिलाधिकारियों के साथ ऑनलाइन बैठक कर यमुना के जलस्तर और भारी बारिश की स्थिति की समीक्षा की. मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि 24x7 मॉनिटरिंग जारी रहे, राहत कार्य में कोई ढिलाई न हो और हर दिल्लीवासी की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता हो. उन्होंने कहा कि सरकार की पूरी टीम सतर्क है और हर परिस्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है. दिल्ली में खतरे के निशान से दो मीटर ऊपर बह रही यमुना का जलस्तर शुक्रवार को मामूली नीचे आया जो दोपहर एक बजे 207.22 मीटर दर्ज किया गया है.

जोधपुर में आरएसएस की अखिल भारतीय समन्वय बैठक का शुभारंभ

जोधपुर । राजस्थान के जोधपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय समन्वय बैठक का शुक्रवार को शुभारंभ हुआ. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने भारत माता के चित्र पर फूल चढ़ाकर बैठक का उद्घाटन किया. तीन दिवसीय इस बैठक में संघ और उससे जुड़े 32 संगठनों के अखिल भारतीय पदाधिकारी भाग ले रहे हैं. संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने बताया कि संगठन मंत्र के सामूहिक वाचन के साथ आरंभ हुई बैठक में विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में नये प्रयोगों का निवेदन किया. उन्होंने बताया कि इस बैठक में प्रमुख रूप से सभी 6 सह सरकार्यवाह तथा विहिप के अध्यक्ष आलोक कुमार, मिलिंद परांडे, शांता अक्की आदि शामिल हुए.

एमपी के इंदौर एयरपोर्ट पर एअर इंडिया के विमान की आपात लैंडिंग

इंदौर/भोपाल । मध्य प्रदेश के इंदौर स्थित देवी अहिल्या बाई होल्कर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर शुक्रवार को एअर इंडिया की दिल्ली-इंदौर फ्लाइट की आपात लैंडिंग हुई. यह आपातकालीन लैंडिंग इंजन में तकनीकी खराबी के चलते कराई गई. इस विमान में 161 यात्री सवार थे, जिन्हें सुरक्षित उतार लिया गया है. फिलहाल, विमान एयरपोर्ट पर खड़ा है और तकनीकी टीम सुधार कार्य में जुटी हुई है. एयरपोर्ट के अधिकारियों के अनुसार एयर इंडिया एक्सप्रेस की फ्लाइट सुबह 6:40 बजे दिल्ली से उड़ान भरती है और यह सामान्य रूप से 8:15 बजे इंदौर पहुंचती है. हालांकि शुक्रवार सुबह यह फ्लाइट अपने निर्धारित समय से देर से 8:28 बजे दिल्ली से रवाना हुई.

परियोजना | केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने किया उद्घाटन, आईपीआरसीएल-हरित मोबिलिटी के लिए किया समझौता

वीओसी बंदरगाह बना देश का पहला ग्रीन हाइड्रोजन बनाने वाला बंदरगाह

एजेंसी ।तूतुकोडी (तमिलनाडु)

केंद्रीय मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने शुक्रवार को यहां वीओ चिदंबरनार बंदरगाह पर देश की पहली ग्रीन हाइड्रोजन पायलट परियोजना शुरू की, जिससे यह बंदरगाह ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन करने वाला पहला बंदरगाह बन गया. इस मौके पर सोनोवाल ने 35.34 करोड़ रुपये की हरित मेथनॉल बंकरिंग सुविधा, 59.20 करोड़ रुपये का 6 मेगावाट पवन फार्म, 90 करोड़ रुपये का मल्टी-कार्गो बर्थ, 34.77 करोड़ रुपये की 4-लेन सड़क और 3 करोड़ रुपये का तमिलनाडु समुद्री विरासत संग्रहालय की नींव भी रखी. साथ ही, 1.46 करोड़ रुपये का 400 किलोवाट रूफटॉप सौर संयंत्र और 24.50 करोड़ रुपये का कोल जेटी-कन्वेयर सिस्टम भी शुरू किया. उन्होंने रेल कनेक्टिविटी के लिए आईपीआरसीएल और हरित मोबिलिटी के लिए एनटीपीसी के साथ समझौतों पर हस्ताक्षर भी किए. इसके तहत 3.87 करोड़ रुपये की हरित हाइड्रोजन परियोजना बंदरगाह की स्ट्रीट लाइटों और इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए हाइड्रोजन बनाएगी, जो पीएम मोदी के नेट-जीरो मिशन को बढ़ावा देगी. हरित मेथनॉल परियोजना कांडला तूतीकोरिन हरित शिपिंग कॉरिडोर में सहयोगी साबित होगी. इस सौर संयंत्र से बंदरगाह की सौर ऊर्जा उत्पादन क्षमता 1.04 मेगावाट हो गई, जो देश के बंदरगाहों में सबसे ज्यादा है. ये परियोजनाएं तमिलनाडु में हजारों नौकरियां पैदा करेंगी, व्यापार बढ़ाएंगी और 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में योगदान देंगी.

सोनोवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत का समुद्री क्षेत्र अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है. साल 2047 तक विकसित भारत की उनकी अपील /आह्वान गति, पैमाने, स्थिरता और आत्मनिर्भरता का मिश्रण है. तमिलनाडु में शुरू की जा रही परियोजनाएं हजारों रोजगार सृजित करेंगी, व्यापार को बढ़ावा देंगी और वैश्विक निवेश आकर्षित करेंगी. इससे तमिलनाडु 2027 तक भारत की 5 ट्रिलियन डॉलर और 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में योगदान देगा. वीओसी बंदरगाह नवीकरणीय ऊर्जा और हरित बंकरिंग के साथ भारत का हरित हाइड्रोजन और अमोनिया केंद्र बनेगा. जानेमाने स्वतंत्रता सेनानी और देश को स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी देने वाले वी.ओ. चिदंबरनार की 154वीं जयंती समारोह में सोनोवाल ने उनकी प्रतिमा पर फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी और पेड़ लगाने का अभियान भी शुरू किया. बंदरगाह के अध्यक्ष सुशांत कुमार पुरोहित ने परियोजनाओं की जानकारी दी. कार्यक्रम में टी.के. रामचंद्रन, गीता जीवन, अनीता राधाकृष्णन और कनिमोझी करुणानिधि समेत करीब 1,500 लोग शामिल हुए.

स्वत्वाधिकारी लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मुद्रक, प्रकाशक प्रदीप कुमार सिंह, क्वार्टर नंबर सी-90, पोस्ट-नावागढ़, थाना-बरोरा, हरिणा कॉलोनी, धनबाद-828306, झारखंड द्वारा फ्लैट नंबर 2ए, सेकेंड फ्लोर, सिंगारो मेनन अपार्टमेंट,चूना भट्ठा, एचबी रोड कोकर, नियर डिस्टिलरी पुल, बिरसा समाधि स्थल) रांची-834001, झारखंड से प्रकाशित और शिवसाईं पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, रातू, काठीटांड़, टेंडर बगीचा रातू, रांची - 835222 झारखंड द्वारा मुद्रित. **संपादक : संजय कुमार सिंह.*** फोन नंबर 0651-2913385, 9142897989 **(*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार).**

आरएनआई नं : JHAHIN/2023/84487, ई-मेलः shubhamsandeshnews@gmail.com धनबाद ब्यूरो : ओजोन सेंटर,थर्ड फ्लोर, कमरा नं-306 अशोकनगर, बैंक मोड़, धनबाद-828106. फोन नं – 9431145133.ई मेल-sandeshsubham23@gmail.com.